नयनामृत प्रवाह ।

पण्डित छन्नूलाल पाठक गंगापुत्र
द्वारा संग्रहित ।

मूल्य ॥)

॥ श्रीः ॥

नयनामृत प्रवाह

॥ दोहा ॥

नैना अमृत प्रवाह में, उठत तरङ्ग अपार ।
लहरत मन रसियान को, पढ़त सुनत एकबार ॥
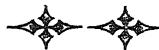
काशी निवासी—

पण्डित छन्नूलाल पाठक गंगापुत्र

द्वारा संग्रहित ।

—। तथा ।—

बाबू देवकीनन्दन खत्री, प्रोप्राइटर लहरी प्रेस द्वारा प्रकाशित ।
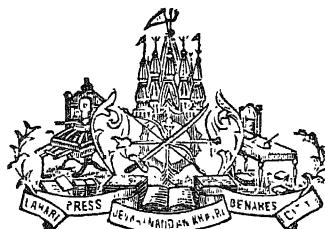
PRINTED BY
PANNA LAL ROY MANAGER
AT THE LAHARI PRESS, BENARES CITY.

1910.

प्रिय पाठकगण !

आज मैं "नयनामृत प्रवाह" नाम का एक छोटा सा ग्रन्थ लेकर आप लोगों के सन्मुख उपस्थित होता हूं। यद्यपि इस ग्रन्थ में कोई ऐसी विशेषता नहीं है कि मैं आप लोगों का चित्त अपनी ओर आकर्षित कर सकूं तथापि हिन्दी साहित्य में मेरी समझ में ऐसा कवित्तों का संग्रह एक ही विषय पर शायद ही कोई दूसरा होगा। यों तो अनेक प्रकार के कवित्तों के संग्रह अधिककर नायिका भेद के बने हुए हैं जिनके पढ़ने से पाठकगणों को अपूर्व आनन्द प्राप्त होता होगा परन्तु नेत्र पर या और किसी एकही विषय पर सौ दो सौ कवित्त इकट्ठे नहीं मिलते। इसी कारण से मेरी रुचि इस ओर आकर्षित हुई और इस विचार ने अपनी जगह ठीक ठीक मेरे हृदय में पकड़ ली तथा मैंने इस विषय को पूरा करने का सिद्धान्त कर लिया। अब मेरा यह परिश्रम सफल हुआ या नहीं, यह मैं नहीं जान सकता। इसे आप लोग स्वयं समझ कर मुझे उत्साहित कर सकते हैं।

इस "नयनामृत प्रवाह" की धारा में कई प्रकार की तरंगें हैं, तथा कितने ही सोते अलग अलग बह कर फिर मिल गये हैं जिनमें गोता मारने से पाठकगणों को अवश्य ही कुछ सुख मिलेगा, कुछ शान्ति मिलेगी तथा कुछ प्रेमाकुल हृदय की धधकती हुई ज्वाला इस साहित्य रूपी निर्मल नीर का पान कर शान्त होगी।

इसमें जितने कवित्त हैं वे अनेक कवियों की रस भरी लेखनी और कण्ठ से निकले हुए हैं तथा बहुत से समस्या देकर नवीन भी रचे गये हैं और जितनी प्राचीन कवियों के मनोहर ग्रन्थों में उत्तम पाई गई हैं वे संग्रह कर ली गई हैं। इन कवित्तों तथा सवैयाओं को पढ़कर यदि पाठकगणों को कुछ भी प्रसन्नता होगी तो मैं अपना परिश्रम सुफल समझूंगा।

इस ग्रंथ के कवित्तों को संग्रह करने में मेरे सुहृद मान्यवर काशी निवासी कविकुलकण्ठाभरण श्री पण्डित बेनी द्विज कवि जी ने बड़ी ही सहायता दी है, मानो मेरा हाथ धर कर उन्होंने मुझसे यह ग्रंथ लिखवाया है अतएव मैं हृदय से उन्हें धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि उनकी अतुलनीय कृपा से फिर कोई ग्रंथ लेकर आप लोगों के सन्मुख उपस्थित होऊंगा। साथ ही लेखक शिरोमणि श्री बाबू देवकीनन्दन जी खत्री को भी मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस ग्रंथ को प्रकाश कर मुझे उत्साहित किया है। अतएव विजया दशमी के उपहार में यह तुच्छ ग्रंथ उनको सादर समर्पित है, आशा है कि वे मेरी इस तुच्छ भेट को स्वीकार कर मेरी ढिठाई क्षमा करेंगे॥

भवदीय—

छन्नूलाल पाठक

गंगापुत्र

काशी।

नयनामृत प्रवाह ।

॥ दोहा ॥

भरित नेह नवनीर नित, बरसत सुरस अथोर ।
जयति अपूरब घन कोऊ, लखि नाचत मनमोर ॥१॥
अमिय हलाहल मदभरे, स्वेत श्याम रतनार ।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इकबार॥२॥
भौं चितवनि डोरैं बरुनि, असि कटार फँद तीर ।
कटत फटत बन्धत बिंधत, जिय हिय मन तन बीर ॥३॥

॥ कवित्त ॥

॥ गणेशजी के नेत्र वर्णन ॥

सुभग सलोने मनमोहने मुनीसन के सोभा के सिँगार खानि सुघर अनन्ता के। बेनी द्विज बिघन बिनासन बिनोदकारी भारी दुखहारी निज देसन दिगन्ता के ॥ दीन दुखमोचन दबोचन दनुजबन ध्यावत सदाही जाहि जनक जयन्ता के । बिश्व सिरताज आले आलम नेवाज ऐसे बन्दौं युग नैन गनराज एकदन्ता के ॥१॥

॥ सवैया ॥

लज्जित ह्वै कै मनै मनही मृग जात चले बनमारि जकन्दन। खंजनहूं खिसियाय गए उड़ि बास कियो निज पास परिन्दन॥ मीन मलीन ह्वै नीर गईं धसि पंकज पंक परे बहुफन्दन। चारिहु चारिहु ओर गए लुकि देखि तेरे दृग गौरी के नन्दन॥२॥

॥ कबित्त ॥

॥ कालीजी के नेत्र वर्णन ॥

मान भरे सुन्दर सुजान आन सान भरे सोभा के निधान खान सुघर प्रनाली के। तेज भरे तरुन तरङ्गी अङ्गी दासन के दुष्टन सँघारिबे को मानिंद दुनाली के॥ रोष भरे राजत महान ओज मौज भरे बेनी द्विज कमल कुलीन कंज डाली के। अमित खुशाली भरे आली जोत ज्वाली भरे लाली भरे ललित ललाम नैन काली के॥३॥

॥ महादेव जी के नेत्र वर्णन ॥

प्रेम भरे पूरन प्रवीन रस नेम भरे सील भरे सुन्दर भरे हैं भाव भारी के। तेज भरे तरुन कृपाल करुना के भरे दाया भरे दरद हरैया जीव धारी के॥ रङ्ग भरे राम के नसे हैं भरे भंगन के चमकि रहे हैं भरे अनल अँगारी के। सोभा भरे सरस सुरङ्ग नीति गोभा भरे गुनन भरे हैं नैन तीन त्रिपुरारी के॥४॥

॥ हनुमान जी के नेत्र वर्णन ॥

तप भरे नेह भरे रामपद मेह भरे सन्तन सनेह भरे प्रेम की प्रपा भरे। सील भरे साहस सपूती मजबूती भरे तर्ज भरे बाल ब्रम्हचर्ज की त्रपा भरे॥ भनै कबि

मान दान खान भरे मान भरे घमसान सान दुष्ट दलन द्रपा भरे। सोचन के मोचन बिरोचन के आसन तें बन्दों पिंगलोचन के लोचन कृपा भरे ॥५॥

॥ नेत्र में सब देवता ॥

ब्रम्हा बरुनीन में बिराजैं शिव श्यामता में विष्णु हैं बिलास में प्रकास उमगति है। कोर में कुबेरहू के कोष की न लागै थाह इन्दीवर इन्द्रहू के छबिसों लगति है॥ मान में मुनीन हूं के मान हरैं महाबीर रङ्ग में रिषीन के उमङ्ग सों ठगति है। रिद्धि सिद्धि सन्तन की सत्य गिरा मेरे जान कैधों ब्रम्ह जोति तेरे नैन में जगति है॥६॥

॥ कृष्ण जी के नेत्र वर्णन ॥

जीत भरे जोत भरे जोबन के जेब भरे भोर भये होत जैसे बारिज बिहान के। दया भरे मया भरे हिया भरे हाँसी भरे सोभा के समान भरे जीवन जहान के॥ लाज भरे काज भरे अतिही पुनीत भरे शशिहूं को शील भरे तेज भरे भान के। सुधा भरे रस भरे मैन भरे मान भरे ऐसे दोऊ नैन सखे सांवरे सुजान के ॥७॥

॥ विष्णू जी के नेत्र वर्णन ॥

कैधों लाल रेसम के जाल में फँसे हैं खंज कलिका सरोज में मलिन्द कैधौं मड़रानि। कैधों चन्द्र मंडल में पीवत पीयूष पैठे युगुल चकोर के किशोर मन मोद मानि॥ कैधों कामदेव जूके संपुट नगीका धरे थाके ताके सममें सुमेरसिंह दै प्रमानि। प्रेम रस चाखे मनमोहन न काके देखि नैन कमला पति के ऐन सुखमाके खानि॥८॥

शंभु मन भाये लागैं सदिव सोहाये सबै सुन्दर

सलोने लोने अमित गती के हैं। मारत जियावत मचावत अनेक रङ्ग भङ्ग के करैया मान रति के पती के हैं॥ कंज खंज मृगहू चकोर मीन वारी होत तेज ना बखाने जात बाहर मती के हैं। चैन सुखपूरन दिवैया निज दासन के आनँद के ऐन नैन कमलापती के हैं॥६॥

॥ रामजी के नेत्र वर्णन ॥

लाल लाल डोरैं कंजदल दुति तोरैं लेत जग चित चोर मनो मैनही के ऐन हैं। मीन छबि छीन मृग सावक अधीन खंजरीट बलहीन लखि होत जाहि चैन हैं॥ चकित चकोर मन मुनिन को भौंर श्याम रङ्गही से घेरियो बिहारी सुख सैन हैं। काटैं दुख दंद फन्द आनंद के कन्द वृन्द रस के प्रबन्ध रामचन्द्र जू के नैन हैं॥१०॥

अजब रसीले समशीले हैं सुशीले कंज खंजन हँसीले मीन मंजुल मरोर के। सुजन असीले उर अन्तर बसीले प्रेम मादक नसीले हैं जसीले चितचोर के॥ कबिन के बैन ते न उपमा बनै न दैन बैजनाथ नैन चैन दैन दया कोर के॥ और हैं न नैन लोक हेरे निज नैन जैसे हेरे हम नैन नैन कौशल किशोर के॥११॥

॥ विन्ध्यबासिनी के नेत्र वर्णन ॥

आठो जाम जामैं दया रस उमगोई रहै श्याम धवल रङ्ग कछु कछु अरुनारे हैं। तीनों देवतान के सँवारिवे के काज मानों सत रज तम तीनों गुनन सुधारे हैं॥ मीन कंज खंजन चकोर कोरही सों जीति जाकी उपमा को हेरि हेरि हिय हारे हैं। सन्त सुखदानी महरानी विन्ध्यबासनी के लोचन कमल दुख मोचन हमारे हैं॥१२॥

॥ नेत्र में बादशाह का रूपक ॥

नीमजां हैं सैकड़ां हजारों बिसमिल देखे आये जो निगाह तले सामत के घेरे हैं। लाल डोरे फांसी हैं कमान भौंहैं खमखाये तिरछी निगाह तलवार शान फेरे हैं॥ जादू का असर है इशारे में तुम्हारे जान रामनन्द काकुल ये काहे को बिखेरे हैं। मिज़गां सिपाह की कतार परा बांधे खड़ी जालिम जरूर बादशाह नैन तेरे हैं॥१३॥

सीस फूल धारे सोई सुरुजमुखी सँवारे अलक पताका फहरावत घनेरे हैं। घूँघट चँदोवा चारु मोतिन की झालरैं कपोल गुलगादी दीन्हैं बिमल बसेरे हैं॥ रामनन्द परदे पलक अधखुले राखैं मद भरे कोयें लाल सुखमा के घेरे हैं। चाह भरे पालत हरत सिरजत नेह संयुत उमाह बादशाह नैन तेरे हैं॥१४॥

कोयें जनु तखत बिछे हैं चारु हीरन के मानिक से मानो लाल डोरें ये घनेरे हैं। मर्कत मनीसी राजै पूतरी प्रवीन गादी भौंहैं मुलतान की कमानैं लिये नेरे हैं॥ बेनी द्विज पलक पियादे उठैं जाही ओर ताही ओर काँपत भुवाल बहुतेरे हैं। आलम पनाह औ उछाह भरे आठो जाम जानकी के नाह बादशाह नैन तेरे हैं॥१५॥

मांगत पनाह जासों दुष्टन के नांह आनि राजा राव सकल बिलोकि होत चेरे हैं। बेनी द्विज बखत बलन्द बीर बांके वर बैरिन बिदारिवे को कातिल करेरे हैं॥ मारिबो निबाजिबो दोऊ हैं जा निगाहन में केते हने केतिक नेवाजे जाहि हेरे हैं। जांह भरे परम रोबीले औ उमाह भरे कौशलकुमार बादशाह नैन तेरे हैं॥१६॥

मुख अरबिन्द की बनाव गुलगादी बैठे पैठे सुधासागर में आगर उँजेरे हैं। भौहैं धनुधारे बरुनी के सर मारे अरि उरन बिदारे चारु चापलता घेरे हैं ॥ प्रबल प्रताप दाप गौरव सखान संग रंग बरसायो रामनन्द बहुतेरे हैं। गिरि के धरैया काली नाग के नथैया बलदाऊजी के भैया बादशाह नैन तेरे हैं ॥१७॥

॥ नेत्र में नवाब का रूपक ॥

सोजनीं चिकन की बिछाये डोरैं लाल लाल तकिया महातम के सोभा दरबार हैं। चंचल चितौन अर्ज बेगि बेगि आवै जाय बरुनी दुआर आगे ठाढ़े चोबदार हैं ॥ बकसी दिवान दोऊ कोयैं कान लागत हैं अंजन के दसखत सों सिद्ध कारबार हैं। लाज औ सकुच ये हजूर में खवास खासे प्यारी तेरे नैन री नवाब नामदार हैं ॥१८॥

कोयन की कुरसी पर करके कुमाच बैठी बरुनी ब-रीक बीर चिलसि निबेरे हैं। पूतरी प्रवीन तेई पातुरैं बिलोकियत पलकन प्यादन के पेखियत फेरे हैं ॥ चारु चंचलाई चोबदार हैं हमेस बेस कहै परमेस दीठ मोहन के डेरे हैं। आब महताब भरे किस्मत किताब भरे मानत न दाब ये नवाब नैन तेरे हैं ॥१९॥

कैसे रूपसागर में फूल्यो है कमल कहो जैसे अरविन्द मृग मीन भये चेरे हैं। कैसे अरबिन्द मृग मीन भये चेरे कहो जैसे सुआनन पै दृगन किये डेरे हैं ॥ कैसे सुआनन पै दृगन किये डेरे कहो जैसे नदनन्दन निहारे आय नेरे हैं। कैसे नदनन्दन निहारे परमेस यह जैसे आबदार ये नवाब नैन तेरे हैं ॥२०॥

कारे अनियारे आछे जलज प्रभा से तारे सुन्दर संवारे छबि कमल घनेरे हैं। खंजन सुवेस मनरंजन दि-गंजन ये मीन गति छीनत मृगाहू भये चेरे हैं॥ कहे परमेस चपलाई चंचलाई भरे सान धरे तीक्षण बिराजैं सुतरेरे हैं। लाज भरे सैन सुख दैन अनुराग भरे मुख महताब से नवाब नैन तेरे हैं ॥२१॥

लाल लाल डोरैं राजै तीक्षन कटाक्ष बान भृकुटी कमान सी हरति मन मेरे हैं। कीधौं अनियारे चटकारे सुखकारे भारे अति हितकारे नन्दलाल मन चेरे हैं॥ भन परमेस कजरारे अति सान धारे अंजन विराजै ऐन मैन छबि घेरे हैं। लाज भरे सैन सुख दैन अनुराग भरे मुख महताब से नवाब नैन तेरे हैं ॥२२॥

॥ नेत्र में सिपाही का रूपक ॥

कज्जल कवच किये बरुनी के सर लिये भौहैं धनु तानें जैतवार जग ऐन हैं। बांकी सूधी चितवन दोऊ तरवार बांधे करैं आधो आध प्रान मारत डरैं न हैं॥ इन की कजाकी आगे कछुना कजा की चलै दोऊ हाथ मलैं एतो बाहू दुख दैन हैं। ऊधव कहत ऐंठे ग्वैंठे से रहत नित काम पादशाह के सिपाही दोऊ नैन हैं ॥२३॥

जोमवारे जालिम जहान जहरीले बर बांके शान शौकत में वीरता के ऐन हैं। बांधे स्याह सिफर सुफेद पोश खूनी खूब कज्जल की काती लिये काटैं करि सैन हैं॥ भौंहन कमान बान बरुनी चढ़ाय तान मारत हिए में आन मानो तीर मैन हैं। जाही ओर हेरत हवाई होत ताही ओर शाही जोबनों के ये सिपाही दोऊ नैन हैं ॥२४॥

फजल इलाही हैं जवान आन सान वारे बांके बड़े बीरता के मानो खास ऐन हैं। नोकदार बरुनी की बरछी लिये हैं बेस अंजन अनूठी तेग धारे करैं सैन हैं॥ पलक बकैती सों करैया काट लाखन में आलम नेवाज देनहारे सुख चैन हैं। बादशाही जोबन के जङ्गी हैं जलूस-दार सुघर सलाही ये सिपाही दोऊ नैन हैं॥२५॥

॥ नेत्र में फिरङ्गी का रूपक ॥

परम तरङ्गी तेग तकनि उमङ्ग भरो किरिच कटीली कारी कोरन सुरङ्गी हैं। बंक बरछी सो बांकी बेधत है बान तान बरुनी बलन्द भौंहैं काम सर संगी हैं॥ कैधों सरदार सूर समर सलोने महा बीर बर मौज भरे लसत त्रिभङ्गी हैं। जङ्गी जोर जालिम जलूस जोति धारे तेरे सजत सजीले प्यारी नैन ये फिरङ्गी हैं॥२६॥

पलक पियादे खड़े हाजिर कतार बांधे डोरे लाल सङ्ग में सवार बहुतेरे हैं। कज्जल की किरिच कटीली कसे बांकिन सों कीन्हें बार कै कै जीन घायल घनेरे हैं॥ कोए पतलून सेत जाकिट पहिन स्याम जोबन शहर मध्य डारे आनि डेरे हैं। ढङ्गी बड़े पूरन प्रतापी रणरंगी बड़े जङ्गी जोर जालिम फिरङ्गी नैन तेरे हैं॥२७॥

॥ नेत्र में तिलङ्गी का रूपक ॥

स्वेतताई साज मध्य स्यामता बिरंचि रचि अरुन कोर जुगदै दुवाज सी सुरङ्गी है। भृकुटी कमांच मढ़ि पलकन कन्नासाधि बाँधि नवनेह लों चढ़ाई सो उतङ्गी है॥ रूप उचकन उचकाय डारी लगन वायू प्रीतम खेलारी पर मारी पेंच जङ्गी है। कुटिल कटाक्ष कोर करत कटासी

जात कामिनी की आंख कैधौं काम की तिलङ्गी है ॥२८॥

स्वेत स्वच्छ कोयन के कागद पै कोरैं लगीं चारों ओर डोरी सी तनाव बाँधि घेरी है। काली काली पूतरी वि-चित्र मध्य राजै वर पलकैं कमांच दोऊ कोंनन अमेरी है॥ कज्जल के कन्ना में बँधी है नव नेह वाली सुन्दर सुरंगी ऐसो आज लौ न हेरी है। लड़त हवा पै चढ़ी सुड़ के करत पेंच जोरदार जङ्गी ये तिलङ्गी आंख तेरी है॥२९॥

स्याम सेत अरुन अनोखी आन सान वारी चंचल छबीली चारु सोहत सुरङ्गी है। भौंहैं बंक बिकट कमांचैं सी सजी हैं मनों कज्जल की रेख राजै कन्ना से कुढङ्गी है॥ नेह नख बाँधि कै चढ़ी है चन्द्रमंडल पै काली खाय घूमि घूमि मारै पेंच जङ्गी है। काट करी जात ढोल पाय कै कटारी सम कामिनी की आँख कैधौं काम की तिलङ्गी है॥३०॥

॥ स्फुटिक कविता ॥

परम रगीले हैं ढँगीले औ रसीले बेस अति चमकीले चारु दीरघ ढरारे हैं। कज्जल से कारे खास बिधि के सँवारे जाहि तनिक निहारे बचैं कोऊ ना बिचारे हैं॥ रूप गुन वारे आरे सुघर बिलायती हैं तीच्छन कटाक्ष कै कितेक काटि डारे हैं। चंचल तुरङ्ग से उमङ्ग भरे जालम ये बालम तेहारे नैन आलम से न्यारे हैं॥३१॥

सिपर सुपूलरी कृपान कल कज्जल त्यों दल बरुनीन के छबीले छैल छाजे हैं। कहै पदमाकर न जानो जात कौन पै धौं भौंहन के धनुष चितौन सर साजे हैं॥ घेरदार

घूँघट घटा के छांहगीर तरे मदन वजीर के लियेई मंजु ऑजे हैं। बखत बुलन्द मुखचन्द के तखत पर चारु चख चंचल चकत्ता है विराजे हैं ॥३२॥

शानदार खंजर सुनोकदार नाहर से नेजे से सरस नोकैं वधैं हिय ऐन है। कामदार सरस कमान कर तेगा सम खानदार खूनी खुरासानी बड़े पैन हैं॥ नोकदार आरी या कटारी कहीं बाढ़दार तीच्छन विकट छुरी छिन्नहूनर मैन हैं। आबदार नावक दिमागदार गोपी-नाथ अम्बर की धार दिलदार तेरे नैन हैं॥३३॥

कैधैं रसराज रस रसित असित कैधैं ललित वि-लित विष वलित सुभाल के। कैधैं जग जीतिवे को राजा रतिनाथ हाथ वाहन बनाये केशोदास चलचाल के॥ कृत घात पातक की चित चोरिवे को तम देखिवे को नंदलाल लालि करै काल के। लागि रही लोक लाज खंजन नयनि कीधैं पिय मन रंजन कि अंजन हैं बाल के॥३४॥

कंज जो कहौं तो चन्द देखत दुखारे होत खंज जो कहौं तो रैनि उड़िबे में हारे हैं। मीन जो कहौं तो वे अ-धीन रहैं नीर ही के हरिन कहौं तो वासी वन के बिचारे हैं॥ मानिंद चकोर के बखानौं तो बनै ना बात अनल अँगारे वे तो गटकन वारे हैं। बांके बड़े परम लड़ाके औ अदा के भरे बालम तिहारे नैन आलम से न्यारे हैं॥३५॥

तीखे तेज ताब भरे सीखे दाव घाव भरे चाह चित चाहक चलांकी सो कढ़े रहैं। खंजरीट गंजन कुरङ्ग मद

अंजन अनूप रूप रंजन मजेज मैं मढ़े रहैं ॥ पंडित अनन्त प्रीति प्रीतम के पोखे ये अनोखे नैन तेरे रस रीतिन अढ़े रहैं । चौगुने चाय चौगुने सोहाग सने सौ गुने हजार गुने हिय पै हरीफ लौं चढ़े रहैं ॥३६॥

आबदार अजब अनोखी अनियारी अलबेली ऐसी आंखैं ऐन ऐनन से रूखी सी । भोज भनै जोबन जखूम मैं न जागै जोति ज्योति जोम जुलुम जुलाहल मैं पूखी सी ॥ ताकि जाते तीच्छन तिरीछे तरुनाई पर तेरी दृग-नोकैं तेज तीरनते तीखी सी । नैन मढ़ि जाती चारु चोप चढ़ि जाती हिये फोर बढ़ि जाती चढ़ि जाती साफ सूखी सी ॥३७॥

हित उपजौने नेह मेह बरसौंने देह दीप दरसौंने अरसौंने सरसौंने हैं । हिलग लगौने झपकौंने छप-कौंने छैल छलन छलौंने अनखौंने रस दौने हैं ॥ भरमी सुकबि छबि मन के हरौने देखे सहज सलौने लौने कानन लगौने हैं । रङ्ग रस भीने हरि हारे मृग मीने कीने तेरे नैन प्यारी कांवरू के टौने हैं ॥३८॥

रूप रस चाखैं मुख रसना न राखैं फेरि भाखैं अभिलाखैं तेज उर को मझारतीं । कहै पदमाकर ये कान न बिनाई सुनैं आनँद के बान को अनोखो रूप धारतीं ॥ बिन पग दौरैं बिन हाथन हथियार करैं कोर के कटाच्छ-न पटा सो झूमि झारतीं । पाखन बिनाई बारैं लाखन ये वारैं आंख पावती जो पांखैं तो कहाधौं करि डारतीं ॥३९

चरन नहीं पै चलते हो दरसै हैं रोज आज जुनयारी ये खुलैया धोरी थोरी की । रसना नहीं पै रस लेत ही रहे

हैं सदा श्रवन बिना हीं बात सुनत हथोरी को॥ कहै चिर-जीवी बिन हाथन हथ्यार करैं लैले रीत अकथ अनन्त बरजोरी की। धँसि रहो जीमें ही मैं आवैना उकति एकौ अजब अनोखी आखैं कीरति किसोरी की॥४०॥

चंचलाई मीन की लई है छीन भाँतिन सों सुमई लगाम लै उछालैं लेत घोड़ा की। बेनी द्विज खँजन के गंजन गुमान हारी छवि ना लही है मृग नैन यहि जोड़ा की॥ कंजन से अंजन बिना हीं सोभा सौ गुनी है नजर करै है चोट चोखी खास कोड़ा की। सौतिन के मन हीं मड़ोड़ा देन वाली आली एक एक आँख तेरी लाख लाख तोड़ा की॥४१॥

कातिल कमान कोर कारे दिल रोज रोज बरसै बदन जेब शाही रुख ऐन हैं। शान सुर्ख शौकत सियाह शोख सुर्मई की रोशन चिराग मिस्ल आलम के दैन हैं॥ स्याम के सलोने चश्म इन्तजार जाके रहैं शर्म से तकै ना तक लाखैं करैं कैन हैं। नोक भरे झोंक भरे नये नये नये नूर भरे नाज भरे नाजुक ये नाजनी के नैन हैं॥४२॥

प्रेम भरे प्रीत भरे नीत भरे रीत भरे जीत भरे औरन ते देखियत कारे हैं। रस भरे जस भरे नेह भरे नूर भरे नोक भरे झोंक भरे कामसर वारे हैं॥ मैन भरे सैन भरे चैन भरे बैन भरे लाल बलबीर मधु भरे मतवारे हैं। ध्यान भरे ग्यान भरे मान बान आन भरे लोभ भरे लाग भरे लोचन तिहारे हैं॥४३॥

मारत जियावत हैं आवत हँसावत हैं चित उचटावत हैं काम के खेलौना हैं। सुमति सुघर घरे घने मन दल-

मले मल मन चले तीखे घाव के अगौना हैं ॥ रूंधिवे को गज ऐसे काटिवे को खग्ग जैसे वेधिवेको बान से निकासिवे को पौना हैं। टौना टौना कहत सुटौना कहूं ऐसे होत एतो दृग कांवरू के टौनन के टौना हैं ॥४४॥

डारी अनियारी तुरी तीर के तुनीर परे मृग धृग मान बन बन भटकत हैं। भ्रम भ्रम अंगुल के कंज तेऊ नायो सीस लज्जित चकोर ह्वै अनल गटकत हैं ॥ सौतिन के सूल फूल लाल हिये हनुमान निक्त खंजरीटन करे-जे खटकत हैं। तेरे अच्छ स्वच्छ लच्छ निज त्रच्छ तुच्छ कच्छ अच्छ अच्छ मच्छ महि पुच्छ पटकत हैं॥४५॥

अंजन बिना ही मद गंजन हैं खंजन के पंकज पराजै मानि पंक सटकत हैं। दीन भये भँवर मलीन से अमोई करैं चकित चकोर ह्वै अँगार गटकत हैं॥ खूबी कौन कौन सी बखान करै बेनी द्विज हार मानि हरिन अरन्य भटकत हैं। लच्छि लच्छि चच्छ तेरे तुच्छ जानि आपने को अच्छ अच्छ मच्छ महि पुच्छ पटकत हैं ॥४६॥

ऊबी सी रहत अरबिन्दन की आभा महबूबी मृग छौनन की छाम करियत है। भूली बनबीथिन चकोर चारुताई मनसूबी तुरंगन की तमाम करियत है ॥ डूबी जल जोरन मे मीन बरजोरी देव भौंर मगरूरी बदनाम करियत है। देखि देखि तेरी अँखियाँन की अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियत है ॥४७॥

डूबी परी नीर में मलीन मन ह्वै कै मीन कंजन कु लीन हूं निकाम करियत है। बेनी द्विज मृगमद गारे से

पराने बन चारुता चकोर की तमाम करियत है ॥ ऊबी परी नरगिस निरालो कुंज ओटन में भारी जासु ऊपर बदाम करियत है। देखि देखि तेरी आँखियाँन की अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियत है ॥४८॥

लसत सपानि तीक्ष्ण धारै खरसान महा मनमथ बान को गुमान गरियत है । भारे अनियारे देखु तरल तरारे ये सुलच्छनीन तारे मीन हीन भरियत है ॥ मृगबन लीन जोति मोतिन की खीन ऐसे जलज नवीन जल धाम धुनियत है। मान निधि आजु की अजूबी लखि नैनन की खूबी खंजरीटन की खाम करियत है ॥४९॥

॥ नेत्र में त्रिबेनीजी का रूपक ॥

स्वेत ताई गंग सी सोहाई स्वच्छ दीसत है श्यामता कलिन्दी धार राजैं स्वच्छ हेरे हैं। डोरे लाल अति ही रिसाल हैं गिरासे खासे जाके लखे पातक न आवैं भूलि नेरे हैं ॥ मज्जन करत कान्ह दीठ है सदाई जानें रसिक नवीन होत चित्त ही सों चेरे हैं। तीन गुन गहब गहीले औ रंगीले बर प्रगट त्रिबेनी से प्रिया ये नैन तेरे हैं ॥५०॥

उज्जल प्रवाह तट गंगा को बिलोकियत बीचै लाल डोरा सुरसति सुख सेनी है। पूतरी पलक माँह कज्जल की झलक तामैं जमुना मन मुदित जमत्रास हर लेनी है ॥ रंचक बिलोके तन कोटिन कटत पाप मज्जन किये ते सुरपुर सुख देनी है। हे रे मन जान तू तो तीरथ न जान राधे तेरेई दृगन में तो प्रगटी त्रिबेनी है ॥५१॥

सादर सुरंग डोरे बिशद प्रभा हैं गंग जमुना तरंग पूतरी त्यों बिलसत है । लछिराम देवी देव बरनै बिरद

वृज परम प्रवीने मोदरासि हुलसत हैं ॥ मज्जत मकर एक वासरै सुफल होत वारहो महीने इन्हैं देखे फलसत हैं। संगम सोहाग भाग परम प्रयाग प्यारी तेरे नैन जुगल त्रिबेनी से लसत हैं ॥५२॥

॥ नेत्र में कटारी वर्णन ॥

हरत मरम दुख करत परम सुख पान पबलित करें अति अनियारी हैं। श्रीपति सुकवि भनैं सोहत सहस छबि बिरहा निशिर रवि कज्जलते कारी हैं ॥ जेहर की जेब जगमगत अनूप करि जतन अनेक कमलासन सँवारी हैं। रूप गुनवारी जम जिया की जियारी प्यारी अंखि- यां तिहारी कीधैं काम की कटारी हैं ॥५३॥

परम चमचमात पांनि पबलित अति रुचि सुचि पचि करि करता सुधारी हैं । श्री पति रसिक जन मन की हरन हार रूप भरी छबि भरी काजरतें कारी हैं ॥ बेधत मरम जाके घाय को उपाय नाहि विषबूड़ी कोरैं नीकी नेक अनियारी हैं। दूलह दुलारी वृषभान जूकी वारी प्यारी अँखियां तिहारी कीधैं काम की कटारी हैं॥५४॥

पद्म पत्रवारी सोभा शान की उतारी आछी सिकल की करारी कैधों काम घर कारी है। सुरमे की ढारी जामें वाढ़ धरी न्यारी न्यारी पानिप हुं सँवारी जिलो बिधि की उंजारी है ॥ ज्योती कवि न्यारी छन उपमा विचारी तीनों गुन को मुरारी मीन मानहि गंज डारी है। नेक जो जोहारी हिय मांहि गहि मारी प्यारी चितवन तिहारी कीधैं बूँदी की कटारी है ॥५५॥

॥ नेत्र में छुरी ॥

मीन खंजते बढ़ी हैं सोभा सिन्धुते कढ़ी हैं भौहैं भाव सो चढ़ी हैं ज्यों कमान काम कसकी । जादू की पुड़ी हैं कैधौं मदन जुड़ी हैं हलाहलते बुड़ो हैं कै भरी हैं सुधा रसकी ॥ मंत्र की कड़ी हैं प्रेम जाल की लड़ी हैं ये विरंचि की छड़ी हैं कै जड़ो हैं स्याम रसकी । नेह अँकुरी हैं कैधैं पद्म पँखुरी हैं यह आँख बपुरी हैं कै छुरी हैं हाथरसकी ॥५६॥

॥ नेत्र में अर्जुन के बान ॥

मोतिनते सीरे और इंगुरते राते राते काजरते कारे भारे पानिपके पान हैं । झलकैं कटारी से औ दामिन डरारी से औ लागत हैं कारी से जुम्मल मेरी जान हैं ॥ डाँका के परैया कैधौं मन के लुटैया और बस के करैया कैधौं चोखन की खान हैं । मंत्र मनमोहन से बधिक धरोहन से औ मन के सोहन से पारथ के बान हैं ॥५७॥

॥ स्फुटिक कविता ॥

देखे अरुनाई करुनाई लगै कंजन को मृगन गुमान तजि लाज गहिबे परी । तीख निधि कहै अतिछैानन हूं दीनताई मीनन अधीन ह्वै कै हार सहिबे परी ॥ चरचा चकोरन की कोर डारी कोरन सों कविन कवीसता गरीबी गहिबे परीं । आई बीर चंचलाई राधिका के नैनन में खास खंजरीटन खराबी सहिबे परी ॥५८॥

पीके प्रान प्यारे प्रेम परम सुजान जी के नीके नये नैनन की आब अब ऊबी है । कान्ह कमलेछन की मानो

मनमोहनी है काम कमलेछन की हुकम हजूबी है ॥ तरल त्रिबेनी की तरंग जुग जाहिर है जोवन जवाहिर की अजब अजूबी है। मीनन की मदी डूबी बदी डूबी कंजन की भौरन की भूल खंजरीटन की खूबी है ॥५९॥

॥ नेत्र में चौदहों रत्न ॥

सौतिन को बिष से पियूष से सखी जन को रसिकन रम्भा औ रमासे रक्त तन हैं। मोहन को मद से मतङ्ग से गरूरन को चंचल तुरी से मनहरिबे को मन हैं॥ कविन को कामधेनु कलपद्रुम दीनन को श्री पति को संख दुर्जन को सरासन हैं। शशी से सरोजन को सेवित धनंतर से प्यारी तेरे नैन कैधौं चौदहों रतन हैं ॥६०॥

चंचल तुरङ्ग से मतंग से मद भरे मद से मतवारे स्वेत संख से सोहाये हैं। सीतल मयंक से रसील सुधा सील धेनु श्री कर विलोकि फल निर्मल बनाये हैं॥ रम्भा सो विलास औ कटाक्ष विस्व केलितरू अंजन धनुख सों धनंतर मिलाये हैं। काहे को समुद्र मथ्यो देवतन बेनी कवि चौदहों रतन राधे नैनन में पाये हैं ॥६१॥

रम्भा से रसिक नीके चंचल तुरंगन से संख से सपेद चारु चंद से गनाइये। कहै कमलेस काम धेनु से सखीन चित्त सौतिन को चिन्तामनि चाँप से जनाइये॥ पैको पियूष श्रीसुर तरु धनंतर से काके विषमद से मतवारे से गाइये। रूपनिधि मथिकै मनमथ ने निकासे जिन चौदहों रतन राधे नैनन में पाइये ॥६२॥

मन को हरत रँभा थहरत हय होत, एँड़ मैन ढावै गज जोति मनि गाइये। बृन्द सुखदानी पारजात सील

सुरभी तें,सीतल प्रकास इन्दुलोलमा भवाइये ॥ घूमै मद दरद जान वैद मारे गरल ज्यों वसुधा स्वेत कंबु कोये धुनि ठहराइये । गोप कहै काहे कृष्ण सिंधु मथि कीन्हों श्रम चौदहों रतन राधे नैनन में पाइये ॥६३॥

॥ नेत्र में दस अवतार ॥

मीन सम थहरात उगरि डगरि कच्छप सम बावन बलि छलिवेको निश्चय करि नेरे हैं। जात ना निहारे हिय फारत वराहसम भिरवे को परसुराम फिरत नाहि फेरे हैं॥ तिच्छन नरसिंह नख बाधक अबोधिवे कों तारिवे को राघव गुलाब चित मेरे हैं। मोहिवे को मोहन कलंक बिन निसकलंक दसौ अवतार राधे नैनन में तेरे हैं ॥६४॥

लोल कर मच्छ कच्छ गहिके न छाड़ैं चित्त, छिधर बराह बौध बैरी स्रुति धाम के। नेहीं रिपुगंजन नृसिंह से छलन छली, बली भृगुराम मद नासक तमाम के ॥ घूमत झुकत वलराम राम व्रतधारी, कलकी से करैया प्रान पान पर भाम के। गोप कवि धर्मनते एते अवतार पेखे, वृषभान नन्दनी के नैनन में श्याम के ॥६५॥

कच्छपसे कठिन कठोर जोर कोरदार,मीन के समान चारू चंचल घनेरे हैं। बिकट बराह से बिदारैं हिय लाखन के, चोखे नरसिंह से नेवाजे जाहि हेरे हैं ॥ बेनी छिज प्रबल प्रतापी परसुरामजी से, राम से उदार बलिराम से करेरे हैं। कृष्ण रंग धारी मौन बौध हू कलंककारी,प्यारी दसौ दीसैं अवतारी नैन तेरे हैं ॥६६॥

॥ नेत्र में मंगल ग्रह ॥

अरुन अमोल लोल लखतै लोभात मन,जावक जपा

से शोख रंग में घनेरे हैं। बेनी द्विज मूँगा से महान मंजु आबदार मानिक से चटक जनात चारु हेरे हैं॥ ईंगुर से आगर हैं गालिब गुलाबहू से भाये एहि भांतिसों प्रभात चित मेरे हैं। लाख लाख सौतिन सोहाग सुख देन हारे ऐन मैन मंगल से लाल नैन तेरे हैं॥६७॥

॥ नेत्र के सब उपमान ॥

सफरी से कंज से कुरंग करसाएल से, आम की सी फांकैं सब कहत सुजान हैं। नट्टुवा से नट से तुरंगम से खंजन से, बालक हठीले जैसे ऐसे ठने ठान हैं॥ देखो टेढ़ी कोरैं मानो नखनैया छोर के हैं, बान ऐसी अनी पैनी लागे लेत प्रान हैं। ठग बटपारे मतवारे कबि तुच्छ मति, इतने ही नैनन के कहे उपमान हैं॥६८॥

॥ नेत्र में नेत्र के गुन वर्णन ॥

आंखिन में प्रीति रस रीति सब आंखिन में आंखिन में अच्छर लिखे हैं सुघराई के। आंखिन में काम औ ढिठाई सब आंखिन में, आंखिन में सील बसै सुरसरनाई के॥ आलम सुकवि कहै अमृत हैं आंखिन में आंखिन में जग ज्योति दोई हैं सोहाई के। काम के ततत्तन सब लच्छन हैं आंखिन में आंखिन में भेद हैं भलाई औ बुराई के॥६९॥

॥ नेत्रवर्णन ॥

आंखैं आम की सी फांकैं कोहैं कमल की सी पाखैं प्रेम रस चाखैं हियते न निकसत हैं। काम सरनाखैं धीर काहू की न राखैं राखै जे समद मांखैं ईठ दीठ सकसत हैं॥ कृष्ण लाल साधे सुधा पूरित गवाखैं मांहि घूँघट गवाखैं

सुरभी तें,सीतल प्रकास इन्दुलोलमा भवाइये ॥ घूमै मद दरद जान वैद मारे गरल ज्यों वसुधा स्वेत कंबु कोये धुनि ठहराइये । गोप कहै काहे कृष्ण सिंधु मथि कीन्हों श्रम चौदहों रतन राधे नैनन में पाइये ॥६३॥

॥ नेत्र में दस अवतार ॥

मीन सम थहरात उगरि डगरि कच्छप सम बावन बलि छलिवेको निश्चय करि नेरे हैं। जात ना निहारे हिय फारत वराहसम भिरवे को परसुराम फिरत नाहि फेरे हैं॥ तिच्छन नरसिंह नख बाधक अबोधिवे कों तारिवे को राघव गुलाब चित मेरे हैं। मोहिवे को मोहन कलंक बिन निसकलंक दसौ अवतार राधे नैनन में तेरे हैं ॥६४॥

लोल कर मच्छ कच्छ गहिके न छाड़ैं चित्त, द्विधर बराह बौध बैरी स्रुति धाम के। नेहीं रिपुगंजन नृसिंह से छलन छली, बली भृगुराम मद नासक तमाम के॥ घूमत झुकत बलराम राम व्रतधारी, कलकी से करैया प्रान पान पर भाम के। गोप कवि वर्ननते एते अवतार पेखे, वृषभान नन्दनी के नैनन में श्याम के ॥६५॥

कच्छपसे कठिन कठोर जोर कोरदार,मीन के समान चारू चंचल घनेरे हैं। बिकट बराह से बिदारैं हिय लाखन के, चोखे नरसिंह से नेवाजे जाहि हेरे हैं॥ बेनी द्विज प्रबल प्रतापी परसुरामजी से, राम से उदार बलिराम से करेरे हैं। कृष्ण रंग धारी मीन बौध है कलंककारी,प्यारी दसौ दीसैं अवतारी नैन तेरे हैं ॥६६॥

॥ नेत्र में मंगल ग्रह ॥

अरुन अमोल लोल लखतै लोभात मन,जावक जपा

से शोख रंग में घनेरे हैं। बेनी द्विज मूँगा से महान मंजु आबदार मानिक से चटक जनात चारु हेरे हैं॥ ईंगुर से आगर हैं गालिब गुलाबहू से भाये एहि भांतिसों प्रभात चित मेरे हैं। लाख लाख सौतिन सोहाग सुख देन हारे ऐन मैन मंगल से लाल नैन तेरे हैं॥६७॥

॥ नेत्र के सब उपमान॥

सफरी से कंज से कुरंग करसाएल से, आम की सी फांकैं सब कहत सुजान हैं। नटुवा से नट से तुरंगम से खंजन से, बालक हठीले जैसे ऐसे ठने ठान हैं॥ देखो टेढ़ी कोरैं मानो नखनैया छोर के हैं, बान ऐसी अनी पैनी लागे लेत प्रान हैं। ठग बटपारे मतवारे कवि तुच्छ मति, इतने ही नैनन के कहे उपमान हैं॥६८॥

॥ नेत्र में नेत्र के गुन वर्णन॥

आंखिन में प्रीति रस रीति सब आंखिन में आंखिन में अच्छर लिखे हैं सुघराई के। आंखिन में काम औ ढिठाई सब आंखिन में, आंखिन में सील बसै सुरसरनाई के॥ आलम सुकवि कहै अमृत हैं आंखिन में आंखिन में जग ज्योति दोई हैं सोहाई के। काम के ततच्छन सब लच्छन हैं आंखिन में आंखिन में भेद हैं भलाई औ बुराई के॥६९॥

॥ नेत्रवर्णन॥

आंखैं आम की सी फांकैं कोहैं कमल की सी पाखैं प्रेम रस चाखैं हियते न निकसत हैं। काम सरनाखैं धीर काहू की न राखैं राखै जे समद मांखैं ईठ दीठ सकसत हैं॥ कृष्ण लाल साधे सुधा पूरित गवाखैं मांहि घूँघट गवाखैं

तोसी तो मैं बिलसत हैं। कौन अभिलाखैं खासी उपमां न भाखैं प्यारे रावरी ये आंखैं हमैं लाखन चकसत हैं॥७०॥

सुन्दर ढरारे कजरारे दृग भारे मानो आतमा के सांचे ढारे बिधि के सँबारे हैं। दीरघ महारे अनियारे द्युतिकारे तारे सुधा के सुधारे मानो मधु मतवारे हैं॥ मीन मन मारे लखि चंचरी कहारे द्युति खंजन बिसारे जलजात पांतवारे हैं। प्रेम उजियारे सुख नींद के करन हारे लोचन तिहारे दुःख मोचन हमारे हैं॥७१॥

जिन ना निहारे ते निहारे को निहोरत हैं, काहू ना निहारे जन कैसेहू निहारे हैं। सुर नर नाग कन्यकन प्रानपति पति ते देवतान हूं के हियन बिदारे हैं॥ यहि विधि केशोराय रावरे अशोक संग उपमान उपजि बिरंचि पचि हारे हैं। रूप मद मोचन मदन मद मोचन ये तिय मद मोचन को लोचन तिहारे हैं॥७२॥

नैन को कमल कहों वे तो मुरझांय आली जो तो कहों मृगनैनी वे तो सब कारे हैं। जो तो कहों मीन वे तो नहिं आवैं तीर जो तो कहों खंजन वे स्वेत रंग सारे हैं॥ चपल तुरंग कहों धायक वै पायक से दीपक की जोत कहों वे तो रैन जारे हैं। शशि ऐसो सीतल कहों वै कला हीन आली तेरे नैन जीतिबे को तीन लोक हारे हैं॥७३॥

॥ नेत्र में जोगी का रूपक ॥

बरुनीं बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ राते कोये बसन भगो हैं भेख भखियां। बूड़ी जल ही मैं दिन जामिनहू जागति हैं धूमसिर छायो बिरहानल बिलखियां॥ आंसू त्यों फटिक माल लाल डोरे सेली सजे भई हैं अकेली

तजि चेली संग सखियां। दीजिये दरस देव कीजिये संजो-गिन ये जोगिन ह्वै बैठी हैं वियोगिन की अंखियां ॥७४॥

कानन समीर सवै भृकुटी अपांग अंग आसन अ-जिन मृग अंजन अराधा के। अरुन बिभोग कोर बिशद बिभूति अंग त्यागे नींद विषय निमेष बिष बाधा के॥ कृष्णलाल काम कला त्रिबिध कटाक्ष ध्यान धार ना समाधि मनमथ सिद्ध साधा के। प्रेम के प्रयोगी सुख संप-ति संयोगी अति श्याम के बियोगी भये जोगी नैन राधा के ॥७५॥

॥ बियोगी नेत्र ॥

तपैं बिरहानल में पलक उठाये भुजा ध्यान लीन मन निसिवासर विहात हैं। डोरे लाल सेली साज आं-सुव फटिक माल कोए सोये बसन भगी हैं दरसात हैं॥ आठो जाम जागैं अंग बिशद बिभूति भरे बोलत न मुख दुख सहे सीत घात हैं। तेरे मिलिबे को वे योगी होन हेत राधे योगी युगलोचन वियोगी के लखात हैं ॥७६॥

उघरि नचेहैं लोक लाजते बचे हैं पूरी चोपनि रचे हैं लोभी दरसन के बावरे। जके हैं थके हैं मोह मादक छके हैं अनबोले ये बके हैं दसा चेत चित चावरे॥ औसर न सोचैं घन आंनद बिमोचैं जल लोचैं वही मूरति अर बरानि आवरे। देखि देखि फूलैं और भ्रम नहीं भूलैं देखो बिन देखे भये ये वियोगी दृग रावरे ॥७७॥

॥ रामजी के नेत्र वर्णन ॥

अंजन विनाहीं मनरंजन मुनीसन के मैन मद भंजन सदाहीं जैत वारे हैं। कारे सेत अरुन अमोल हैं अतोल

तोसी तो मैं बिलसत हैं। कौन अभिलाखैं खासी उपमां
न भाखैं प्यारे रावरी ये आंखैं हमैं लाखन बकसत हैं॥७०॥

सुन्दर ढरारे कजरारे दृग भारे मानो आतमा के
सांचे ढारे विधि के सँघारे हैं। दीरघ महारे अनियारे
दुतिकारे तारे सुधा के सुधारे मानो मधु मतवारे हैं॥
मीन मन मारे लखि चंचरी कहारे दुति खंजन बिसारे
जलजात पांतवारे हैं। प्रेम उजियारे सुख नींद के करन
हारे लोचन तिहारे दुःख मोचन हमारे हैं॥७१॥

जिन ना निहारे ते निहारे को निहोरत हैं, काहू ना
निहारे जन कैसेहूं निहारे हैं। सुर नर नाग कन्यकन
प्रानपति पति ते देवतान हूं के हियन बिदारे हैं॥ यहि
विधि केशोराय रावरे अशोक संग उपमान उपजि बि-
रंचि पचि हारे हैं। रूप मद मोचन मदन मद मोचन ये
तिय मद मोचन को लोचन तिहारे हैं॥७२॥

नैन को कमल कहों वे तो मुरझांय आली जो तो
कहों मृगनैनी वे तो सब कारे हैं। जो तो कहों मीन वे
तो नहिं आवैं तीर जो तो कहों खंजन वे स्वेत रंग सारे
हैं॥ चपल तुरंग कहों धायक वै पायक से दीपक की जोत
कहों वे तो रैन जारे हैं। शशि ऐसो सीतल कहों वै कला
हीन आली तेरे नैन जीतिवे को तीन लोक हारे हैं॥७३॥

॥ नेत्र में जोगी का रूपक ॥

बरुनी बघम्बर मैं गूदरी पलक दोऊ राते कोये वसन
भगो हैं भेख भखियां। बूड़ी जल ही मैं दिन जामिनहू
जागति हैं धूमसिर छायो बिरहानल बिलखियां॥ आंसू
त्यों फटिक माल लाल डोरे सेली सजे भई हैं अकेली

तजि चेली संग सखियां। दीजिये दरस देव कीजिये संजो-
गिन ये जोगिन ह्वै बैठी हैं बियोगिन की अँखियां ॥७४॥

कानन समीर सवै भृकुटी अपांग अंग आसन अ-
जिन मृग अंजन अराधा के। अरुन बिभोग कोर बिशद
बिभूति अंग त्यागे नींद बिषय निमेष बिष बाधा के॥
कृष्णलाल काम कला त्रिबिध कटाक्ष ध्यान धार नो
समाधि मनमथ सिद्ध साधा के। प्रेम के प्रयोगी सुख संप-
ति संयोगी अति श्याम के बियोगी भये जोगी नैन
राधा के ॥७५॥

॥ बियोगी नेत्र ॥

तपैं बिरहानल में पलक उठाये भुजा ध्यान लीन
मन निसिबासर बिहात हैं। डोरे लाल सेली साज आं-
सुव फटिक माल कोए सोये बसन भगी हैं दरसात हैं॥
आठो जाम जागैं अंग बिशद बिभूति भरे बोलत न मुख
दुख सहे सीत घात हैं। तेरे मिलिवे को वे योगी होन
हेत राधे योगी युगलोचन वियोगी के लखात हैं ॥७६॥

उघरि नचेहैं लोक लाजते बचे हैं पूरी चोपनि रचे हैं
लोभी दरसन के बावरे। जके हैं थके हैं मोह मादक छके
हैं अनबोले ये बके हैं दसा चेत चित चावरे॥ औसर न
सोचैं घन आनंद बिमोचैं जल लोचैं वही मूरति अर
बरानि आवरे। देखि देखि फूलैं और भ्रम नहीं भूलैं
देखो बिन देखे भये ये वियोगी दृग रावरे ॥७७॥

॥ रामजी के नेत्र वर्णन ॥

अंजन बिनाहीं मनरंजन मुनीसन के मैन मद भंजन
सदाहीं जैत वारे हैं। कारे सेत अरुन अमोल हैं अतोल

छवि ऐन सुघराई के बिधाता ने सँवारे हैं॥ सील के सरोवर सिपाही सूर बीरता के कीन्हे हैं निहाल नेक जितहीं निहारे हैं। बिपति हरैया ताप तीनहू नसैया पाप मोचन करैया रामलोचन तिहारे हैं॥७८॥

शील के समुद्र सुख मन्दिर कृपा के पुंज सुखमां की सींवां समसरद सरोज के। कोमल अमल चारू चातुरी चटक भरे जोहत हरत मन मोहत मनोज के॥ सुचिता सुगंधता बखानै ऐसो कौन कवि अरुनसितासित सँवारे विधि चोज के। वदत गुलाम राम राम नैन अभिराम चीकने रसीले बड़े दानी महा मौज के॥७९॥

डोरे रतनारे बीच कारे और सारे सेत जिनके निहारत कुरंग गन भूले हैं। आनंद अमद ऐसो मानों विधु मंडल मैं सारदी के खंजन सुभात अनुकूले हैं॥ जनक सुता के मुख चंद के चकोर कीधौं बरने न जात छवि उपमा अतूले हैं। राजैं राम लोचन मनोज अति ओज भरे सोभा के सरोवर सरोज जुग फूले हैं॥८०॥

मीन धुज मीन कंज खंजन मृगनदृग गंजन मदै के दरसात सुठि सोने के। आनंद जनक अति छनक निहारतहीं बनक अनूप मानो करन हैं टोने के॥ जुगुल मनोहर त्रिदेवहु जुगुल नैन जोहत छकावै चैन ऐसे छवि भोने के। कोने बिरचेधौं विधि भ्रिष्टि मेन होनेहार लोयन सलोने अति कौशिला के छौने के॥८१॥

॥ राम जानकी के नेत्र वर्णन॥

दोहुन के बांके नैन दोहुन के देखि थाके दोहुन के हीन उपमां के सोभ साके हैं। कंज मीन नाके भरे प्रेम

के सुधा के मन्द करन मृगा के न गिराके न उमाके हैं॥ भनै रघुराज अनुराग के मजा के मढ़े काके समता के एक एक छबि छाके हैं। मेरे मनसा गुनेक हैन मृखा के बैन सील करुना के कछु अधिक सिया के हैं॥८२॥

॥ जानकी के नेत्रवर्णन ॥

नैन अनियारे तारे पुँडरीक पान सारे सियपूतरीन पै द्विरेफ गन वारे हैं। कछु कजरारे सील सागर सुधा सेधारे वरुनी बिसाल धारे जोर छोर वारे हैं॥ दीन पै सनेह बारे प्रीतम के प्यान प्यारे उपमान पावत बिरचि पचिहारे हैं। मीन मृग खंजन बनाये बिधि प्रेम सखी वारिबन व्योम बसैं लज्जित विचारे हैं॥८३॥

मीन अति चंचल अधीन जलही के रहैं जलते बिहीन तन त्यागत अचैन हैं। खंजन तो खग मनरंजन हैं तैसे करैं गंजन के जोग मद भाखैं कबि बैन हैं॥ मृग पसु जेते दृग समता न लायक हैं ताहीते सदा ही किये कानन में ऐन हैं। रामचंद हेरिये तो लहत अनन्द कन्द मेरे जान इन्दीवर ऐसे सिय नैन हैं॥८४॥

॥ नेत्र वर्णन ॥

करत कलोल श्रुति दीरघ अमोल लोल छुए दृग छोर छबि पावत तरौना हैं। नाहिन समान उपमान आन सेनापति छाया कछु छुवत चकित मृग छौना हैं॥ श्याम हैं बरन ग्यान ध्यान के हरन मानो मूरत ज्यों धारे बसिकरन के टोना हैं। मोहत हैं करि सैन चैन के परम ऐन प्यारी तेरे नैन ऐन मैन के खेलौना हैं॥८५॥

काजरते कारे अनियारे डोरे मतवारे कमल दरारे

कैधों अमृत के दौना हैं। खंजन सँवारे कैधों खंज खर सान धारे कैधों मनमोहन के मन के हरौना हैं॥ रूपजल भरे रसवारे डगमगत हैं नवल दुलारे कैधों मृगन के छौना हैं। मदन निहारे पंछी सीख देनहारे आली तेरे नैन ऐन मानो मैन के खेलौना हैं॥८६॥

पजन दृगस्य के दीरघ दरीते दौरि अदभुद अदा की अनि परत डकैतीसों। कोर कजरारी कैधों फरकत फेर फेर थिर खंजरीटन की थिरक थकैतीसों॥ चारु मुख चारु कैधों झारत सुकापै अति सानपै धरे हैं खरे फेंकत फकैतीसों। कामनी को नीको बिधु बदन बकैत कैधौं मैन सर काटे नैन पलक बँकैतीसों॥८७॥

कोई कहै खंजर कटार छुरा बाँक कोई कोई कहै किरच सकेले बेनजीर हैं। कोई कहै सैफ हैं सिरोही कोई नीमचा से कोई कहै खास एहुसेनी शमशीर हैं॥ कोई कहै भाले कोई सांगैसी बखानै ताहि कोई कहै बरछी बुझाई बिष नीर हैं। मेरी जान सनम कटीले ये तिहारे नैन ऐन सैन मैन के अनोखे चोखे तीर हैं॥८८॥

कैधों सुधा सरहेत चपल मनोज मीन जाहि देखि नेही द्विज भूलत सदन हैं। चंचल कटाच्छ तेरे सुन्दर सुजान राधे भरे उर पीर करैं धीरज कदन हैं॥ खंजन से वक्र चक्र तीच्छन ये इच्छन के कीधौं कमनैत बैठे रावरे बदन हैं। दोऊ ओर मेरे जान रजत के वान तान कंचन तरौना लच्छ मारत मदन हैं॥८९॥

॥ नेत्र में तरवार ॥

भृकुटी कुटिल राजै मूठसी बिराजै वर पल मियान

पुंज पानिप रसाल हैं । कज्जल कलित दोऊ कोर में दुधारे धारे डोरे रतनारे जेब जौहर के जाल हैं ॥ गोकुल बिलोकि निज नायक सनेह सनी स्वच्छ हैं कटाक्ष काट करत कराल हैं । कमनीय कामिनी के रमनीय नैन कैधौं कामिन के मारिवे को काम करबाल हैं ॥९०॥

सुखमा मलिन्द के अलिन्द अरविन्द हैं कबिन्द हैं नरिन्द के लगे हैं बरयस के । श्रीपति प्रवीन रूप सर के ललित मीन हरिन नवीन नेह कानन सरस के ॥ एरी मेरी प्रान प्यारी लोचन तिहारे प्यारे सूरज सुखारे पिय बिरह तमस के । रति रनबीर हैं श्रृङ्गार गुन धीर हैं सँवारे आछे तीर हैं मदन तरकस के ॥९१॥

प्रेम रंगमगे जगमगे जागे जामिनी के जोबन के जोर भरे अति उमहत हैं । मदन मदमाते मतवारे से घूमैं नैन झूमत झुकत झपि झपि उघरत हैं ॥ आलम निकाई इन नैनन की देखो जाय मानों दोऊ पंकज में भँवर फरकत हैं । चाहत हैं उड़िबेको देखत मयंक मुख जानत हैं रैन ताते ताही में रहत हैं ॥९२॥

राति के उनीदे अलसाते मदमाते राते राजैं कजरारे दिग तेरे यों सोहात हैं । तीखी तीखी कोरन अंकोरे लेत काढ़ि जिय केते भये घायल औ केते तलफात हैं ॥ ज्यों ज्यों लै सलिल चख सेख धोवै बार बार त्यों त्यों बल बुन्दन के बार झुकि जात हैं । कैवर के भाले कैधों नाहर नहन वाले लोहू के पियासे कहा पानी ते अघात हैं ॥९३॥

झूमत झुकत भरे मद के अरून नैन मानो नैन तून

हैं कढ़त जाते सर हैं। हाव किल किंचित सरूप धरेनाथ कैधौं मोहन बसी कर उचाट के अमर हैं ॥ कैधौं मीन पैरत सहाब के सरोवर में मानिक जटित भूमि खंजन सुघर हैं। कैधौं अनुराग को लपेट के सिंगार बैठ्यो कैधौं कौंल पांखुरी में डोलत भँवर हैं ॥९४॥

रति के मुरीद महबूब बेदरद दोनों पानिपके प्याले पल अलफी न झेलैंगे। सित औ असित डोरे सुरूख सुधार सेल्ही कोए कलमनिश्रुति पथनि उठेलैंगे॥ अंजन इलाही नूर पगे हैं मकुंद कहै नजर की आसा मनमांह जीति खेलैंगे। राधे नैन बेन वा बिहिद छबि छाके बांके मैन सरखाल नन्दलाल पर मेलैंगे ॥९५॥

कैधौं बिबिचात की सिंगार रस बोरी बीर कैधौं श्याम सारस की श्यामता सुछोरी है। मोरीरी मलिन्दन को मान बरजोरी लखु भोरी मति भोरी भई मृग सुख थोरी है ॥ श्याम रंग चोरो करि लोचन निबोरी कीधौं कीधौं दृग आंजी वृषभान की किशोरी है। पंखन बटोरी बसे पीवन सुधाको कीधौं अंक में मयंक के सुखंजन की जोरी है ॥९६॥

सोभित सँवारे हैं सनेह सुखमा समूह सुखसर सीले सर सील सीले थोकदार । चंचल चलांक चारु चोयन चटक भरे चहकैं चमंकै चलै सलज सरोकदार ॥ ग्वाल कबि मधुप मतंग से मजेजनमें मैन मतवारे मृग मीनन के सोकदार । नूर भरे नमित नमूदन नमूद नोनें नागर नवेली के नसीले नैन नोकदार ॥९७॥

चातुरी के चुगुल चवाई चित चाह केकी पांहरूये

प्रेम के प्रवीनताई परसैं । अंजन बलित कोरैं खंज मद गंजन ए चोरैं चित चाहि चहूं ओरन सों दरसैं ॥ मदन सरोज मैं मलिन्दन के ओत मंजु सेखर सनेह के भरे से भाव सरसैं । काम के तुनीर कैसे तीर नैन कामिनी के ताकि ताकि तरुनी तिलोत्तमा सी तरसैं ॥९८॥

सील भरे सरस सरोज छबि छीनेलेत मीन मृग खंज मानगंजन मरोरदार । नेह सरसीले अरसीले भाव दर-सीले परसीले परम रसीले रंग बोरदार ॥ चोरदार चित के चलांक हित जोरदार कोरदार सेखर अरुन बर डोर दार । दौर दार दीरघ दिमांक भरे प्रान प्यारी ताक दै री तनिक तिहारे नैन तोरदार ॥९९॥

नेह श्याम सुन्दर सलोने की सुसीखी गति सुरति समोद अभिराम उमगोना मैं । डोरे डोठ अरुन ठगोरे ठीक ठाहियतु कवि पजनेस भौंन मंजुल पगोना मैं ॥ खुलत डुलत दृग पूतरी सुश्यामता मैं आतुर लली के लोने लगन लगोना मैं । मानो गुन आगर सुवार बरू-नीके मध्य नागरी नवल नीक नाचत नगीना मैं ॥१००॥

सुन्दर सुरंग श्याम करन बिशद बूटे कानन की छोर लों अटेरनि भिरत हैं । रुकत सकोच तरफरत मजीले मौज सराबोर स्वेद प्रेम चाबुकैं छिरत हैं ॥ बाग पलकन के मरोरें लछिराम कोरे पोमन कबूतर कुरंग त्यौं घिरत हैं । चपल तिरीछे प्यारी लोचन खेलार मानो मार बरछैत के बछेरे ये फिरत हैं ॥१०१॥

तीखनता ताकिवे को तीर ते तरल तोर जाती मिल होती जौन नासिका अराबी मैं । अजब अजाब अरबि-

न्दन की आभा परभूमत गजब सों न ए तिक्क सराबी मैं ॥ मोती की न जोती तिल तूलहू प्रवीन तुलै तौलत नवीन चख पलको दराबी मैं । मोनन कमीने करि भौंरन को भौंर देत खीज खीज खंजरीट खींचत खराबी मैं ॥१०२॥

काजर कलित कोरैं कंज से सुरस पुञ्ज तीखे तीखे तरल बसीकरन जी के ये । मीन गति मुरत मनोज मन रंजन ए गंजन गुमान रसी करन हैं पीके ये ॥ सान धरे सेखर निधान सुखमां के बांके छाके नेह आसव नसाके नित ही के ये ॥ सील सने सलज सलोने सुखदैन प्यारी नेह भरे निपट नोकीले नैन नीके ये ॥१०३॥

॥ सवैया ॥

आंखिन आंख लगी जबतें, अँखियां न लौं आंखैं रहीं अनुरागैं। ए दिल वे अंखियान के ध्यान में, आंखिन के मिस जात हैं जागैं ॥ आंख ये आंख हैं आंखिन के, अंखियानते सूझत आंखिन आगैं। आंखिन के बस आंख करी छिन, आंख लगैं नहीं आंख जो लागैं ॥१०४॥

अंखियां के लगे घर ही बन होत, सो आंख लगे निसि बासर जागैं। आंखि लगे सब लोग हसैं, अरु आंख लगे घर छोड़ के भागैं ॥ आंख लगे कछु सूझ परै नहिं, आंख छिनैं छिन आंख को मागैं। आखिर आंख दुखी भई आंख सो, आंख लगै नहीं आंख जो लागैं ॥१०५॥

सोचत ही निसद्योस सिरात, बिमोचत बारि रहैं दुख पागे। भूलैं नहीं उर अंतर सों, कछु मंतर सों जबते करि भागे ॥ को इन की करनी बरनै, इनते जग जोगी

जती अनुरागे। लाखन राख लगाये फिरैं, भया आंख लगै नहीं आंख के लागे ॥१०६॥

कंज किये जलवास रहैं, किये आस रहैं रबि के किरनौं की। मीनन की गनती है कहा, छन बारित जे नहि आस तनौं की॥ खंजन हैं खग औ मृग कांनन, बासी कहैं हम तो निज गौं की। सोय के नैनन की समता, नहि कंजन खंजन मीन मृगौं की ॥१०७॥

कंजन की अरु खंजन की, मृग मीनन की छबि छीन लई है। नोखो नुकीलो कटाक्ष भरी, महा अंजन की दुति न्यारी नई है॥ है द्विज बेनो बिसाल मनोहर, मैंन के बान सी मौज मई है। तोहिं दई है निरेखिबे को बलि, मारिबे को तो दई ना दई है ॥१०८॥

जाके लगे गृह काज तजैं, अरु मात पिता हित तात ना राखैं। संग मैं लीन ह्वै चाकर चाह के, धीरज हीन अधीन ह्वै भाखैं॥ तरफत मोन ज्यों नेह नवीन में, मानो दई बरछीन को साखैं। तीर लगै तरवार लगै, पै लगै जनि काहू सो काहू की आंखैं ॥१०९॥

कंज सकोचे गड़े रहैं कीचन, मीनन बोर दियो दह नीरनि। दास कहै मृगहू को उदास कै, बास दियो है अरण्य गभीरनि॥ आपुस मैं उपमा उपमेय ह्वै, नैन ये निंदत हैं कबि धीरनि। खंजन हूं को उड़ाय दियो, हलके करि दीन्हें अनङ्ग के तीरनि ॥११०॥

आई हौं देखि सराहे न जात हैं, या बिधि घूँघट में फरके हैं। मैं तो यों जानी मिले दोउ पीछे ह्वै, कान

लख्यो को उन्हैं हरके हैं ॥ रंगनिते रूचि ते रघुनाथ, वे चारू करे करता करके हैं। अंजन वारे सही दृग प्यारी के, खंजन प्यारे बिना पर के हैं ॥१११॥

॥ श्रीकृष्णजी के नेत्र वर्णन ॥

कीधौं जुग दीनदयाल वारिजात हैं बिसाल कीधौं खंजरीट बालमुद के दयन हैं। कीधौं अनुराग लोन छबि के तड़ाग मोन जुगल कला प्रवीन करत चयन हैं॥ कीधौं कोकनदपै समद ह्वै अलिन सोहैं मोहैं करि गदगद रूप के अयन हैं । कीधौं अनियारे सर समर सवांरे आलो कीधौं रतनारे बन माली के नयन हैं ॥११२॥

मीन मृग खंजन खसान भरे नैन बान अधिक गलान भरे कंजकल ताल के। राधिका छबीली के छैल छबि छा के छाक भरे छैलता के छोरे भरे छबि जाल के॥ ग्वाल कबि आन भरे सान भरे स्यान भरे कछु अलसान भरे मान भरे माल के। लाड भरे लाज भरे लाग भरे लोभ भरे लाली भरे लोचन ललो हैं नन्दलाल के ॥११३॥

खंजर कटारी कुंत कैवर करद नेजे मन्द कर कोरैं कला सम गन सान की । लछिराम श्यामताई संगमी सुरंग स्वेत भ्रूधनु मरोर छोर परसनि कान की ॥ खंजन कुरंग कोकनद में प्रभा है कहा सोहैं बर सोहैं रसि मन- मथ बान की। मरम सुलावैं कुल कानि मानि चावैं आंखैं अजब तिरीछी स्याम सुन्दर सुजान की ॥११४॥

॥ नेत्र अधर ॥

हिय हरि लेत हैं निकाई के निकेत हँसि देत हैं सहेत निरखत करि सैन हैं। छौना हरिनीन दृगहीते अति

नीके लागैं हरत हैं दरद करत चित चैन हैं ॥ चाहत न अंजन रसिक जनरंजन हैं खंजन सरस रस राग रीत ऐन हैं। दीरघ ढरारे अनियारे नेक रतनारे कंज से निहारे कजरारे तेरे नैन हैं ॥११५॥

स्याह सेत अरून अनोल लोल गोल गोल लाज के जहाज करैं कोटिन सो कैन हैं। हारे हेरि हरिन किनारे गए कांनन के खंजन खिसाने जाय कीन्हों तरू ऐन हैं ॥ कंज कोर खाय कींच धाय धसे आय आय लहत घरी ना कहूं रैनहूं को चैन हैं। कठिन कटारे से अनेक नोक झोंक हारे करता सुधारे कजरारे तेरे नैन हैं ॥११६॥

॥ नेत्र में दरजी का रूपक ॥

कतर कनर ब्योंत काढ़ि के करेजा रेजा कसक हिये की टूक टूक कै उतारे हैं। हेरि हेरि सूत मजबूत फेर फेर कर बारिक बरौनी सुई नख से सुधारे हैं ॥ भौन कबि कहै लाल मगजी लगाइबे को फरजी फिराय मैन मरजी बिचारे हैं। बरजी न मानैं करैं हरजी अनेक भांति गरजी अजब नैन दरजी तिहारे हैं ॥११७॥

॥ कवित्त विना मात्रा ॥

हरत सकल छल पलक लगत जब धरत न कल मन डरत भरम कर। कसर न करत भरत जल थलथल रखत अदब वह गरम शरम कर॥ नरम धरम कर ढरत जनन पर दल दल सम हल हलत अलम कर। रहत न तनक मरम तन तत छन रहम करत जब चशम सनम कर॥११८॥

लखन लखत लरजत नर सर धर घर घर चलत करत

तन थर थर । नकत नयन कर नजर रकत सन सन सन करत जनक जन डर डर । खसकत खल दल थल थल हल कर समकत कहर कहर कर जर जर । कह तन चख अस सखत जगत कत हतत हरख कर नर तन नर हर ॥११९॥

॥ नेत्र राधिका के ॥

राजैं रतनारे दृग भूपर उजारे भारे प्रेम मतवारे पिय मैन सुख दैन हैं । गंजन कमल मृग मीन मद भंजन हैं अंजन लखेते ना रहत उर चैन हैं ॥ नन्दन सुकबि नद नन्दनपै ढुरे नेक रोस भरे देखे याते कहै कछु चैन हैं । ऐसे देखे मैन मैन बान से बिराजैं ऐन प्यारी तेरे अजब गुलाबी रङ्ग नैन हैं ॥१२०॥

महा कजरारे मृग सावकते न्यारे दूरि खंजन बिडारे निरखे ते जाहि चैन हैं । कैधों अलिकारे कैधों भूमैं मतवारे कैधों तामर सवारे कैधों खंजर के ऐन हैं ॥ कैधों जुग मीन बसैं सुन्दर सरोवर में कैधों काम खरसान चढ़े तीखे पैन हैं । और अंग अंगन की सोभा मान कहा कहों देखो श्याम सांवरी के कैसे नीके नैन हैं ॥१२१॥

कंज द्युति भंजन हैं खंजन के गंजन हैं रंजन करत जन मंजन सँवारे हैं । सोभा के सदन कोटि मोहत मदन मीन मद के कदन मृग दूरि करि डारे हैं ॥ लाज गुन गेह नेह मेह बरसै अछेह देह न संभार जात जबतैं निहारे हैं । कारे कजरारे अनियारे झपकारे सितवारे रतनारे प्यारी लोचन तिहारे हैं ॥१२२॥

॥ नेत्र में जवहरी का रूपक ॥

कज्जल सँवारे बिबि पूतरी सुधारे लोल मानो कारे

कलित सुनील मनि ढारे हैं। ऐसे ना निहारे सेत चमक दमक वारे हीरन के हार माल मोतिन के हारे हैं ॥ राग भरे विद्रुम औ मानिक से रतनारे मानो मैन मीन छवि सिन्धुतें निकारे हैं। प्यारे श्याम जू के चारु बस के करन हारे जौहरी मनोहर ये लोचन तिहारे हैं ॥१२३॥

॥ नेत्र में जोगिन का रूपक ॥

डोरे लले हैं भगो हैं समाजन, अंजन अंजित सेल्ही बनाये। कोये पटील जटा पुतरी, पलकैं भईं खप्पर जोग प्रचाये ॥ उज्जलताई विभूति मुबारक, अंग अंगार सिंगार बनाये। सीकर आस की माल जपै, अंखियां भईं जोगिन जोग जगाये ॥१२४॥

॥ नेत्र में जमराज ॥

दुति देखत दंतन की हिय हारत, हीरन के गन दाड़िम हैं। बसुधा बिच चारु क्षुधा की मिठाई, सुधाधर सो धर सालिम हैं ॥ अनु नैन बनी भृकुटी कुटिलैं, कल मैन के चाँप सो आलिम हैं। जग जाहिर जोर जनाइ सकैं, अँखियां जमराज सो जालिम हैं ॥१२५॥

॥ नेत्र में हाथी ॥

झूमैं झुकैं उझकैं फिरि भूमैं, महा मदमाते खरेई रहैं। टारे टरैं न मदांध भये, फिरि ठौरहि ठौर अरेई रहैं ॥ कुंजर से दृग तेरे सखी, गुन के गुन माल गरेई रहैं। खून करैं सब आलम मैं, फिर लाज के आँदू परेई रहैं ॥१२६॥

॥ कबित्त ॥

पंकज की पांखुरी से परम प्रवीने भीने होत न

अधीने रूप जल में तरे रहैं। ईसजू बखानै बिधि आवत अचम्भो मोंहि अन्तर सुभट सों क्यों कपट भिरे रहैं॥ नित में नवीने नोने नेहन भरीले नित नोकदार नेजे लिये नट लों निरे रहैं। निपट लसीले नीके प्यारी के लजीले नैन पट में दुरे हैं तेऊ घट में धरे रहैं॥१२७॥

कीरति पता के कामदेवता के पात्रता के प्रेमके पताके देनहार हितताके हैं। सांचे सुखमांके सुखमांके जाके जोहे होत मादकता कैसे प्याले आले रसता के हैं॥ पूतरी प्रवीना के संकोच हैं नगीना कैसे ताके काज जड़ित सुढौल डिबिया के हैं। जसु करता के सान तस करता के बान नाथ ये कजा के बांके नैन राधिका के हैं॥१२८॥

मीन हेतु दीनता के क्षीनता के हीनता के शरमा के भये तरियाके दरिया के हैं। खंजन विक्षिप्तता के मारे फिरैं मारे मारे तितली भली सी लही नहीं थिरता के हैं॥ जल भँवरा के भँवरा के जल डूबे होस बिधि दँघरा के मारे रहैं भँवारे के हैं। पक्षी पत्तता के गुण अक्षता के खोय बैठे नाथ ये चलांके बांके नैन राधिका के हैं॥१२९॥

कारे कजरारे रतनारे अरबिन्द सम चपल दराज अनियारी सुख कारी हैं। भनत दिवाकर कुरंग बान खंजन की गंजन करति श्याम अंजन किनारी हैं॥ झुकि झुकि झांकति झरोखा लगि सान भरी लागे बनमाली मानो लोह की कटारी हैं। मोरि मोरि लेत मुसकाय दृग घूंघट में मारिकै फिरत ज्यों शिकार को शिकारी हैं॥१३०॥

नेत्र में तिल॥

राजै बामलोचनी के तिल बाम लोचन में ताकी

छबि कहिबे को कौन के सयान हैं। जहां तिल तहां नेह यहू न सनेह जानि चित चिकनाई को बिचार्‍यो अनु-मान हैं॥ शिशुता के भायते रुखाई दरसाई ताको एक युक्ति आई जिय प्रीतमा सुजान हैं। नाहक चतुर मन दीन छीन लेत नैन, तिल न लग्यो है ताको पातक नि-सान है॥१३१॥

॥ सवैया ॥

अंजन कोरि दृगंचल राजत, कै मुनिनस्वर आनि चुभो वै। कै दुमुही यह नागिनकी, शिवनाथ भनै रस-ना तिलसो वै ॥ चन्दहि चाहि चढ़ी फहरात, कपोलन कूल अमी रस पीवै। देखन ही विष छाय गयो,उर काटत ही कहो कैसे के जीवै ॥१३२॥

सुन्दरी साज श्रृङ्गार सुधारति, सौति के गर्वहि गंजन को। गंग लिये कर सारसता, बन मोहन के मन रंजन को॥ कज्जल चारु दिये अंगुरी,तेहि में मेहंदी रंग अंजन को। ऐसी जची हिय में उपमा,मनो गुंज चुगावत खंजन को ॥१३३॥

आनन चन्द सो खंजन से दृग, हैं हरके रिपुके रस छाते। प्रेम अमी अनुराग रंगे,पै झगे रससिन्धु में मानो चुचाते॥ युत अंजन रंजन हैं मन के, बृजचन्द भनै बने झूमझुमाते। मानो कला निधि पै बिबि कंज, छिरे फलसे तिन पै मदमाते ॥१३४॥

रैन जगी रति प्रेम पगी, उरही सों लगी बिधि की अवरेखी। लाज लजीली कटाक्ष कटीली, रसाल रसीली

बिसाल बिसेखी ॥ खंजन मीन मृगीन लजावन, पीत सरोज समान कलेखो । कान्हर की सों री तेरी सों राधिके, तेरी सी आंखिन आंखन देखी ॥१३५॥

चख चंचल यों चमकैं तिय के, दृग अंचल मैन रहैं हट के । पुनि सैननि चित्त चुरावत श्याम को, वाम को ये दुटिका चटके ॥ अति लोल कपोल न डोलत हैं, ढपना पट घूँघट मैं सटके । चट यों पट भेद देखावत हैं, जैसे भाव चलै गुटका नट के ॥१३६॥

भौंह कमान बिना जिहतें, छुटि टेढ़े चलैं दुहुं ओर अनेरे । नैननु आनि अचूक लगैं, हिय बेधत क्यों हूं फिरैं नहि फेरे ॥ और सबै अंग व्याकुल है, सरसात व्यथा बहलात घनेरे । रीत गहैं सबते बिष मैं, विषमै शर ईक्षन तीक्षन तेरे ॥१३७॥

लीन रहैं नित रूप पयोनिधि, मीन कहैं कबि बुद्धि बिचारी । दीन अधीन रहैं नित ही, बिनु देखत तोख लहैं न सदारी ॥ बानी परी पिय पेखन की, कुल कानि बिसार दई इन सारी । लागि जो जांहिं तो कीजे कहा, सखि ये अंखियां रिझवार हमारी ॥१३८॥

देखत वा नट नागर की, छबि फांदि परैं हटके न रहांहीं ॥ लोचन लोल तु[illegible] मुंह जोर, सुलाज लगाम को मानत नांहीं । ऐंचत है अपने इतकों, बलिये बलकैं उतही चलि जांहीं ॥ कैसी करों नहिं मो बस ए, कुल कांनि के चाबुक ते न डेरांहीं ॥१३९॥

अंजनु अंग अछे कछनी, सिखये नव योबन नायक हैं॥ फांदत फूले निसांक गहे, करवाल कटाच्छ सहायक हैं।

ओटे को ढाल करीं पलकैं, ललकैं अति जोम सों लायक हैं॥ विषलोचन चोट बचावति है, तिय नैन कि मैन के पायक हैं ॥१४०॥

आलस के रस में बिथके, रंग लाल के रङ्ग सुरङ्ग भये हैं ॥ देत कहे चित के हित को, चुगुली ठिक ठैनन यैई ठये हैं। निन्दत हैं अरबिन्द प्रभा, अनुराग पराग में पागि गये हैं ॥ होंहि नये तिनके सजनी, दृग आज अपूरब ओप छये हैं ॥१४१॥

लसैं धीरै चकासी चलै श्रुति में, भृकुटी जुवा रूप रहो छवि छ्वै । अलकावली डोरी कसी नृपशंभु, जू सूत अनंग दई छरी छ्वै ॥ तम सांवरे रंग हि जानत हैं, हठि पीछू परे हैं चलैं जित ह्वै । कर छालत आवत नैन किधौं, ये सुधाकरके रथ के मृग द्वै ॥१४२॥

जाके लगै सोइ जानै व्यथा, पर पीर में कोउ उपहास करै ना । सागर जो चुभि जात है चित्त, तो कोटि उपाय करै पै टरै ना ॥ नेकसी कंकरी जाके परै सो, पीर के मारे धीर धरै ना । कैसे परै कल एरी भटू, जब आंखि में आंखि परे निकरै ना ॥१४३॥

खाय हलाहल औरन मारत, आली अचम्भव बात सरी है । नेक दया जिय में धरिये, यह तेरेइ ऊपर पाप परी है ॥ काहे को अंजन देइ सँवारत, ऐसे हिये उरसाल करी है । को जग नाहि भयो अभिमान, अरी ! इन नैनन बाढ़ धरी है ॥१४४॥

काम कटारे से कारे हैं नैन, कि कारे हैं नैन से काम कटारे । मोती ढरारे से नैन ढरारे, कि नैन ढरारे से मोती

ढरारे ॥ श्रीपतराय लोभाय लोभाय, रह्यो लखि कै यह चातक तारे। खंजन वारे से नैन तिहारे, कि नैन तिहारे से खंजन वारे ॥१४५॥

भौंर सरोज ते रोज जुरै न, चकोरन हूं मद मोद परी है। प्योमन रंजन अंजन हूं बिन, खंजन कांति को खोन करी है ॥ काहू कहा कहिये केहि मानत, येती अनूपम ओप भरी है। जानत है बिधि लै सब देस की, आंखिन हीं छबि आनि धरी हैं ॥१४६॥

देखत नाहिन ठौर कुठौर, रहैं जितही तित चाह चके हैं। और घरी पल औरहि दीसत, झूमत आरसमैं बिथके हैं ॥ लाज तजैं सिथिलाई गहैं, अपने बस नाहिन यों बहके हैं । देत कहे जिय की सब बात, बिलोचन ये छबि छाक छके हैं ॥१४७॥

॥ सैन ॥

कैधों खंजरीटनकी छीनो है चपलताई कैधों चंचरीकन की कजरारी छाई ये। कैधों प्रात कंजन की स्वच्छता निवास कीन्हों लाज को समेटि बिधि लोचन बनाई ये॥ चतुर चलांके बांके सैनईं उभक झांके पैनई सरस कैधों मैन सर पाई ये। हंसि हंसि हेरि हेरि फेरि फेरि शिवनाथ हरिसों हरिन नैन नेक न दुराई ये ॥१४८॥

॥ कटाक्ष ॥

कोरन लौं दृग काजर देति है, कारी घटा उमड़ी घनघोरन। घोरन आली चढ़ी मनौ सुन्दरी, बाग नहीं कहूं देति है मोरन ॥ मोरन को गति नाचति है, अरुयों बरज्यों बरज्यों बर जोरन। जोरन देव सखी पलकैं,

अंगुरि कटि जैहै कटाक्ष की कोरन ॥१४९॥

कान्ह की बांकी चितौनी चुभी चित, कालिह जू झांकीरी बाल गवाछन। देखी है नोखी सी चोखी सी कोरन, ओछे फिरैं उभरै जित जा छन॥ मास्यो संभारि हिए में मुबारक, हैं सहजैं कजरारे मृगाछन। काजर देरी न एरी सोहागिन, आंगुरी तेरी कटैंगो कटाछन॥१५०॥

रूप सने बहु रूप दिखावत, देखे बनै दृग शील सचो है। जोति धरे मुक्ता से ढरे, कै सुरंग सरोज से रंग रचो है॥ खंजन मीन मधूब्रत से सो, कुरंग तुरंग सो मान मचो है। स्याम सुधा निधि पानन चाहत, होत है चार चकोर निचो है॥१५१॥

पोइ के कोइन सों मन डारी, सुलाज की बैरिन बावरी पेखी॥ रूखी भईं अति भूखियै प्रान की, आन की ऐसी अनी तन लेखी। नागर रूपहि के अभिमान, खरीं लड़ बावरी बांनि बिसेखी। मारैं घरीक घरीक उबारैं ये, आंखैं अनोखी तिहारीयै देखी॥१५२॥

होत मृगादिक के बड़े बारन, वारन केरे पहारन हेरे। सिन्धु में केते पहार परे, धरनी में केते परे सिन्धु घनेरे॥ अवलोकन में धरतो कितनी, हरउद्र में केते हैं लोक बसेरे। तैं हर दास बसै इन मैं, सब चाह भरे दृग राधिका तेरे॥१५३॥

कुंडलिया॥

नैंन सलोने रस भरे छिपे पलक की ओट॥ बांननहूं ते सरस अति करैं चोट पर चोट। करैं चोट पर चोट खोट एहि सम नहि पल मैं॥ घेरि बटोही बांधि

करत घायल एक पल मैं। रहै बिकल नित चित्त नहीं मुख आवै बैनन ॥ सैननहीं हरि लेंय जीव ये रसिया नैंनन ॥१५४॥

॥ अंजनयुक्त नेत्र ॥

कंचन के कन्द परि खंजन तलफ कीधैं बांधे युग मीन नाग फांस सो मदन हैं। काम के कसारन को कूलन को कूपिका सी अहिख तिलक के श्रृङ्गार के सदन हैं॥ विशिख पुलिन्द मैन भाजे हैं प्रदीपन सों बलिभद्र मुनिन के मन के कदन हैं। काजर की रेखै अवरेखी युगलोचनन कीन्हें चित चोरन के मेचक बदन हैं ॥१५५॥

कवित्त ॥

मीन मुरझानी भागि पानी में समानी जाय हरनी हेरानी बनबन भट कानी हैं। भौंरन की भोर भरमांनी मड़रानी फिरै पंक मैं परानी कंज कलिका फरानी हैं॥ जोबन जवानी के जलूस में दिवानी सोभ सौतिन की देख देख छतियां पिरानी हैं। जोगी जती ग्यानिन की मति बहकांनी याते आंखैं हम जांनी या सनेह की निसानी हैं ॥१५६॥

चंचलाई मीन की लई है छीन भांतिन सों सुर्मई लगाम लै उछालैं लेत घोड़ा की । बेनी द्विज खंजन के गंजन गुमान हारी छबि ना लही है मृग नैंन यहि जोड़ा की ॥ कंजन से अंजन बिनाहीं सोभा सौगुनी है नजर करै है चोट चोखी खास कोड़ा की । सौतिन के मनही मड़ोड़ा देनवाली आली एक एक आंख तेरी लाख लाख

कमलन फांके हैं सवांरे सुघरी के हैं सुसुन्दरता सी के हैं सतीके हैं रतीके हैं। खंजन घनी के हैं कि गंजन मनी के हैं कि रंजन धनी के हैं कि भंजन अमीके हैं॥ ऐसे हरनी के हैं न ऐसे हरनी के हैं न राज रमनी के हैं न काम कमनी के हैं। नैन मैन जी के हैं कि वैन बैन जी के हैं कि सोभा मूल ही के हैं कि प्यारे प्रान पी के हैं॥१५८॥

बंधु बिधुकोर में चकोर को सो जोरा बैठ्यो कैधौं मृग मीन बाल हित के बढ़ाये हैं। कैधों काम राज के जुगल मीन जंग जुरें खंजरीट राखि मानो पींजरा पढ़ाये हैं॥ मिलत जियाइबे को बिछुरत मारिबे को वानिक पियूख बिष बोरिकै कढ़ाये हैं। कैधों बिधि पूरन मयंक मुख पूजा करि अलिन सहित मानो नलिन चढ़ाये हैं॥

परम प्रवीन मीन केतन के मीन कैधौं सुख के सरोज हैं फुलाये पिय भान के। सरद के खंजन मिले हैं मुख चन्द को कि जोरे हैं कुरंग रघबाहन समान के॥ बाला तेरे नैन की बिसाल साल सौतिन के बलिभद्र साने हैं सोहाग खरसान के। मुनिन के मन उपजावत अनेक भाव मेरे जान येही हैं बिधाता पंचबान के॥१६०॥

॥ नेत्र में हस्ती का रूपक ॥

झूमत झुकत उझकत फेरि झूमत हैं झूम झूम झूम उठैं काजर तें कारे हैं। ऐड़ाघल ऐंड़दार ऐड़त अड़त अति अगड़ परेते नेक टरत न टारे हैं॥ गहगहे गुनन गहीले गरबीले महा श्रीपति सुजान मैन परम सुखारे हैं। पिय प्रान प्यारे सब भांतिन सुधारे प्यारी लोचन ति-

हारे कैधों गज मतवारे हैं ॥१६१॥

भारे कजरारे दोऊ काजर सो लाल डोरे सैंदुर सों षीते अति राजत सुपथ के। मति जू कहत पांय बरुनी जंजीर डारि करत कटाक्ष गति डोल हुल नथ के ॥ पूतरी महावत बिराजै आड़ नासिका सुप्रीतम के प्यारे ये लिये हैं जग गथ के। मोहन के मोहन हैं सोहैं तीखे खरिवे को नैना तेरे दोऊ गजमाते मनमथ के ॥१६२॥

॥ नेत्र में सवारी का रूपक ॥

भूपति हैं प्रेम लाल डोरे हैं निसान तेई चंचलता चतुर तुरङ्ग भीर भारी है। देखिवो अनेक भांति तेरेई असवार खरे काजर समोई करि कोरसी सवांरी है ॥ बरुनी बंदूकन की पांति से लई है पिय विरह गनीम मारिवे को पैज धारी है। सूरत सुकवि स्वच्छ श्याम रङ्ग बागे बने प्यारी तेरे नैनन में नीकी असवारी है ॥१६३॥

॥ कवित्त ॥

देखत ही सब के चोरावति हैं चित्तन को फेरकै न देतीं यों अनीति उमड़ाई हैं। कबि मतिराम काम तीर हूं ते तीच्छन कटाच्छन की कोरैं छेदि छाती में गड़ाई हैं ॥ खँजरीट कंज मीन मृगन के नैनन की छीन छीन लेती छबि ऐसी तै लड़ाई है। तेरी अँखियान में बिलोकि यह बड़ी बात इतें पर बड़ी बड़ी पावत बड़ाई है॥१६४॥

॥ बिंध्यवासनी के नेत्र ॥

जाकी नेक दयाते बिरंचि जगतीको रचै जाकी नेक दयाते फणीस महि धारे हैं। जाकी नेक दयाते दिवाकर

दिवाको करै किरिन समूह सो हरत अंधकारे हैं ॥ जाकी नेक दया काम जीतत चराचर को जाके हरि जारि के अनंग करि डारे हैं। संत सुखदानी महरानी बिन्ध्यवासनी के लोचन कमल दुख मोचन हमारे हैं ॥१६५॥

॥ हनुमानजी की दृष्टि ॥

कोटि काम धेनुलौं धुरी न कामना को देत चिन्ता हरि लेत कोटि चिन्तामनी कूत की। व्यथा चकचूरैं कोट जीवन लतालौं सिन्धु पूरैं कोटि कलप लतालों पुरहूत की ॥ भनै कवि मान कोटि सुधालों सुधार कोटि सिन्धुजालौं सुखद निदान पंच भूत की। गंजन बिपति मनरंजन सुभक्त भयभंजन हैं नजर प्रभंजन के पूत की॥१६६॥

॥ हनुमान जी की कुदृष्टि ॥

बाड़व बरन यम दंड की परन चिरीं झार की झरनरिसि भरन गिरीस की। गाज की गिरन प्रलै भानु की किरन चक्री चक्र की फिरन फुफकारैं कै फनीस को ॥ दावानल दीसन कीरीसन मुनीसन की मीसन मरी की दन्त पोसन खबीस की। काली काल कूट की कला है काल कोप की कै कुनजर क्रुद्ध कौशलेसके कपीस की ॥

॥ विक्रमनरेश की दृष्टि ॥

कैसी काम धेनु कामना की देन ऐन जैसी चिन्तामनि चारु चित चैन को सुकर है। कैसी चारु चिन्तामनि चैन की सुकर जैसी काम तरु साखा कामना की बिधिबर है ॥ कैसो काम साखा कामना की बिधिवर जैसी दास पै हमेस की हमेस दानभर है। कैसी है हमेस की

हमेस दानझर जैसी वैसी बीर विक्रम नरेस की नजर है॥

॥ नेत्र में घोड़ा का रूपक ॥

अवलख अंग रंग सुन्दरता जीन तापै काजर वर पाखर लै आप हाथ साजी हैं। लाज है लगाम चितवनि तेज गाम चाल भृकुटी कुटिल तापै कलंगी सुसरजी हैं॥ पूतरी सवार सुभ लिये चाह चावुक सी देखि कै कटाच्छ खुरी भये लाल राजो हैं। नाचैं मुख कंजन के थारी में सुभारी अति प्यारी तेरे नैन दोऊ मैन भूप बाजी हैं॥

दीरघ ढरारे आछे डोरे रतनारे लागे कारे तहां तारे अति भारे जे सुरंग हैं। कहै कबि गंग जनु दूधहीं सों धोये पुनि कोये बिकसित सित असित तुरंग हैं॥ पारद सरस चीर थिर मैं थिरकि जात तिरछे चलत मानो कूदत कुरंग हैं। खैंचे ना रहत अनुरागहू के वरबाग प्यारी तेरे नैन कैधों मैन के तुरंग हैं॥१७०॥

सोहत सजीले सित असित सुरंग रंग जीन सुचि अंजन अनूप रचि हेरे हैं। सील भरे लसत असील गुन साज दैकै लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं॥ घूँघट फरस तामैं फिरत फबीले फूले लोक कबि ग्वाल अव-लोकि भये चेरे हैं। मोर वारे मन के त्यों पन के मरोर वारे त्योर वारे तरुनी तुरंग दृग तेरे हैं॥१७१॥

पलकैं अमोल तापै बरुनी झबा लसत लाजवारी कोरैं पग परम सुढंग हैं। श्रीपति सुकबि लोने पाखर बने हैं कोने रचि पचि बिधना सवांरे सब अंग हैं॥ जापै चढ़ि रूप के सुभट प्रेमराज काज बिरह गनीमन सों

जीत लेत जंग हैं। दिन रैन पिय मन बीथिका मैं नाचत हैं प्यारी तेरे नैन कैधों मैन के तुरंग हैं ॥१७२॥

॥ नेत्र में जहाज का रूपक ॥

जोबन प्रवाह तामैं जल की तरंग उठैं भौंह की मरोरन सों भौंर मतवारे हैं। बालम की मूरति मलाह मांझ बैठ रही छोटे लाल डोरे तेई गुन रतनारे हैं॥ पूतरी हलन सोई मतवारी ऊधोराम लाज बादवान पाल बरुनी सँवारे हैं। रूप के सरोवर में पैर पैर डोलत हैं अँखियाँ न होंय एतो काम के नेवारे हैं ॥१७३॥

॥ नेत्र में तीर ॥

इच्छन तिहारे तीर तीच्छन से जाने जात नन्दराम तैसे भ्रूसरासन में जोरे हैं । श्रवन लों सलोने तानि ताकी नदनन्दन सों छोड़ि कुल कानि लोक लाज कै चितोरे हैं॥ जा दिनते औचक अनोखी तैं निहार्यो नेक हौ हूं पछितात हाय नाहक निहारे हैं। ता दिनते लाल मेरो उलटि उसासैं लेत मै न जानी तेरे नैन बान बिष बोरे हैं ॥१७४॥

॥ राधिका जी के नेत्र ॥

मैन मद छाके राजैं मोहन कला के ऐन कंज उपमा के देन चैन भरता के हैं। पट अचला के चोट करन निसा के बांके काम चंचलाके नाके देखत ही झांके हैं॥ सुन्दर प्रभा के भरे मधुर सुधा के मीन मृग भँवरा के गुन छीन वाके पाके हैं। ताके समता के हेरियाके पैनता के कहूं ताके नैन बांके वृषभान की सुता के हैं ॥१७५॥

राजत अमीके मद छाके काल कूट कीधों चंचल तुरंग के समान ऐन काके हैं। पिय कै हियराके मृग मीनन के थाके कीधों सौति साल ही के सुखमा के ऐन काके हैं ॥ परम कहत देखि खंजन हूं थाके कीधों श्याम सेत ताके लाल आभा साधिका के हैं। छत्र के छपाकरके भूपाल के छलां के चारु चंचल चला के नैन बांके राधिका के हैं ॥१७६॥

खंजन नवीन मीन मानके उमाके देत नाके देत मृग-मद कंज के कहाके हैं । ठौर ठौर भंवर भ्रमत जाके ताके संग मांखन चकोर कहैं चंचल चलाके हैं ॥ ऐसे ना रमाके ना उमाके ना तिलोत्तमाके प्रवल हरौल पंच-बांन प्रति नाके हैं । हैं न मंजुघोषाके बखानै मैनकाके नैन ऐन सुखमाके नैन बांके राधिकाके हैं ॥१७७॥

लालची लजीले लोल ललित रसीले लखे लोगन ललक लैलै लूटत लराके हैं। दिन मैं छलीन चित छैलन को छोमैं छरैं छोरैं छरकीले सो छबीले छवि छाके हैं ॥ मनसा कहत डेरा डौड़ीके न डारैं डांका डारत डगर डग डारत में डाके हैं । ऐसे और काके मैनका के अबला के मैन बानन ते बांके नैन बांके राधिकाके हैं ॥१७८॥

एक ही झमाके में छमाके मन मोह लेत ऐसे मार-वाके ना उमा के ना रमा के हैं। दसहूं दिसा के मनसा के फल देनहार करन निसा के इमि जाकी ओर ताके हैं ॥ जायके जहांके तहां मीन जलढांके गए हरिन हहाके ऐसे कमल कहाके हैं। सकल समाके सुखमाके महिमा के

चारु चंचल चलाके नैन बांके राधिका के हैं ॥१७९॥

सुनत झमाके त्यों छमांके भूरि भूखन के सागर छमाके सिद्ध चैांकत झमाके हैं। जात ही छपाके उठि पैारत छपाके अंग आवत छपाके जेन छाके छतछाके हैं॥ काएल कुजाके बसुधाके कीर धांके ओंठ चखत सुधाके ए मजाके विम्ब पाके हैं। नन्दराम ताके दृग ताके हैं मृगा के कहां काके समताके जो रमाके उपमाके हैं ॥१८०॥

पतिव्रतताके मंजु मन्दिर मजाके कीधैां लखि मृग थाके चारु सर सुखमाके हैं। कैधों छेम छाके हैं अमन्द भैान भाके हैं न ऐसे रमा रम्भाके उमाके और काके हैं॥ भन रघुनाथ धाम कैधों सीलता के प्रेम सागरके मीन नैन बांके राधिका के हैं। पिय मुद्दाके वसी कर बसुधा के कीधैां सिन्धु सुधा मँडल में कुंड द्वै सुधाके हैं ॥१८१॥

खंजन चकोर मीन मृग सिसु सारस यों बारिए कपोतहूं अनूप कहि गोरी के। तीखे तीर खंजर कटारी तेग नेजन ते बांक बिछुआते हैं बँकैत बरजोरी के॥ धन रघुनाथ हैं लजीले लालची हैं लाल पंकज गुलाब रंग रति मदमोरी के। ललित विसाल यो रसाल कजरारे लोल मृदु रतनारे नैन नवलकिशोरी के ॥१८२॥

आछे कजरारे रतनारे री सजोले दीह हीरनके हारे खालो एक रंग कारे हैं। नेह रंग छाके सजे सजल अदा के री अनंग सर थाके री सरस अनियारे हैं॥ दास कहै लाल नन्दलाल के रिझैया चितिगन के सहैया सिरताज री निहारे हैं। कैसे ये सजोले नैन देखे री लड़ैती जीके

जहाँ जहाँ देखे तहां जोत जीत डारे हैं ॥१८३॥

आछे अनियारे चटकारे कारे कजरारे मृग दृग कारे एरी ए तो रतनारे हैं ॥ चंचल छबीले रंग जावक रंगीले चारु दीरघ रसीले रसराते सुकुमारे हैं ॥ नैन मदमाते से उनींदे से रहत नित झूकि झुकि उघरत बक मतवारे हैं । अजब अनूठे नैन देखे प्रानप्यारी जी के जहां जहां देखे तहां जोत जीत डारे हैं ॥१८४॥

कानन के निकट निसंक ह्वै बिहार करैं काहूते न डरैं चितवतु हरि लैंन ए । नृपति मनोज के प्रबल असिवाह कहूँ घायल करत बरधर मधुरैंन ए ॥ घूँघट की ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरत ही देखियत निचले रहैं न ए ।चंचल हरारे अनियारे रतनारे कारे कौंन पर करत कजाको तेरे नैन ए ॥१८५॥

फिरि फिरि दौरि दौरि चंचल चलत चारु चौगुने चलांके चहैं चकित चितौन पै । अँटके से देखियत अँटके रहैं ना नेक हटकु न मानैं हठ लीन्हो गहि गौन पै ॥ रसिक बिहारी जुग सरस रसोले मंजु निपट कटीले कढ़ि जात बेधि सौन पै । अति अनियारे अरुनारे रतनारे आज करत कज़ाकी कजरारे नैन कौन पै ॥१८६॥

अंजन धनुख धारी बरुनी है तीर कारी तामैं लाल जाल लसैं लाल लाल डोर दार । पलक पनाह कारी श्यामता सनाह बारी सैन सेल तीखी चितौन चित चोर दार ॥ मैन मद पीके नैन नद में सनद बैठी पूतरी महा मार मूरति मरोर दार । प्रेम के पथिक पथ प्रीत के चलत

कैसे करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार ॥ १८७ ॥

॥ श्री कृष्णजी के नेत्र ॥

जाके चख बाँके ताके छाके मुनिदेव सब काके दुनि-
या के बीच बाँके उपमा के हैं। लाज बरखा के कै घटा
के मघवा के ताके पूरन कला के कहि आनद पता के हैं॥
मीन खंज थाके कंजना के हैं चलांके देखि लज्जित मृगा के
बिधना के सुखमा के हैं। कुंड हैं सुधाके बसुधाके सुख
वाके बीच बिन सुरमा के नैन श्याम सुरमा के हैं ॥१८८॥

कोऊ कहै बान मनो भव के समान सोहैं कोऊ कहै
मंत्र मोहिवे को बरजोर हैं। कोऊ कहै बेस हैं नरेस नेह
के दिवान कोऊ कहै बृज बनिता के चित चोर हैं॥ कोऊ
कहै खंजन कुरंग मनरंजन हैं कोऊ कहै मंजु पुँज कंज
फूले भोर हैं। जानी हौं चकोर चख गोकुल गोबिन्द जू
को चिते रहे चन्दमुख राधा जी की ओर हैं ॥१८९॥

॥ नेत्र में घोड़ा का रूपक ॥

सुरँग दुगाम सोहै सुरमई लगाम तापै जाकी आब
नीलम लखेते जात लाजी है। बेनी द्विज बरुनी मुखारी
क्या बनी है खूब उज्जल अभूत कोए जीनपोश साजी
है ॥ चंचल चपल चारु हरत चितौन चित्त करत कटाच्छ
बीर जैसे मर्द गाजी है। ताते मन एही अनुमान मैं बखा-
नत हौं तेरे नैन ऐन मैन मैन भूप बाजी है ॥ १९० ॥

खंजन किशोर कीधौं चातक चकोर चारु कीधौं
कल कंजन को छबि अति छाजी हैं। बिसिख बिसारे
कीधौं अति अनियारे एहैं कीधौं द्वै द्विरेफन की सुखमा

बिराजी हैं ॥ कीधैं चन्द्रमंडल मैं कारे द्वै कुरंग सखी कीधैं ए जुगल मीन चपल मिजाजी हैं । राजी होत देखि जिन्हैं मदन गोपाल लाल नैन नागरी के कीधैं मैन भूप बाजी हैं ॥ १९१ ॥

जालन में आनिके फँसे हैं खंजरीट कैधैं कैधैं ए सरोजन की कलिका बिराजी हैं । कैधों हैं चकोर कैधों मोर मतवारे कैधों बारिते नीकारे कोऊ डार्‌यो मीन ताजी हैं ॥ श्री निधि भनत कैधों छौना हरनी के बेस कैधों इन्हें देखिके गयंद गति लाजी हैं । कैधों जहरीले कारे नाग छिति मंडल के नैन राधिका के कैधों मैन भूप बाजी हैं ॥ १९२ ॥

जोन दग अंचल कसंते रहैं चंचल है अंचल सुथान पै रहत नित राजी हैं । आल बरुनी के बरुनी के सुख देत भले कोर श्रुति ऊँचेई निहारे दुति साजी हैं ॥ अंजन के चाबुक सों चाबुक सदा ही रहैं कुटिल कटाच्छ खुद पौन गति लाजी हैं । रंग सित असित सुरंग सुख कारी भारी प्यारी तेरे नैन कीधों मैन भूप बाजी हैं ॥ १९३ ॥

हेरिकै अमलता कमल मलही में दुरे भौंर भयभीत बन ही की मग साजी हैं । गंजन निहारि निज खंजन अदीठ होत पीठ दै सकुचि मीन पीन वनराजी हैं ॥ भारे कजरारे बृजराज ही को प्यारे जिन्हैं उपमा निहारि पुहुमी की सब लाजी हैं । दैन चैन ऐन की करत गति मैन अरि प्यारी तेरे नैन कीधों मैन भूप बाजी हैं ॥ १९४ ॥

॥ राधिका जी के नेत्र ॥

जंगी हैं हठीले हैं कटीले जंग जीतन के नेक ही निहारेते अनंग सर थाके हैं। चंचल चलाँक चटकीले हैं रँगीले छैल छैल के छलैया हैं सनेह रस छाके हैं॥ दास कहै कंजन के खंजन के गंजन हैं रंजन धनी के हैं धरैया धारता के हैं। जाहिर जहान ऐंड़दार हैं अदा के झाँके करन नसा के ताके नैन राधिका के हैं॥ १९५॥

खंजन खिजाने हार कानन सिधारे हेर जलज लजाने किये अलिगन चेरे हैं। झुकि झहराने जल तल ही धराने रहे तीच्छन अनंग जी के सरगर गेरे हैं॥ दास कहै जेते हैं हिरन ताके जेर किये ललन को एरी ए अनंद देन हारे हैं। कारे अनियारे कजरारे रतनारे राधे चंचल चलाँक ऐंड़दार नैन तेरे हैं॥ १९६॥

खंजन खिसाने से लजाने गये कानन री चंचलता हेर के अदा के चाल हारे हैं। झुकि झहरानी री सकानी रहीं जल तल चौकनी चटक तान हरे अँग गारे हैं॥ दास नेक ताके जे छिदत नैन ताके जे अनंग सरता के ताते ताके अनियारे हैं। कीन्हें नद नन्दन अधीन रसलीन राधे चंचल चलांक चटकीले नैन थारे हैं॥ १९७॥

कुवलय जीतिवे को बीर बरि बंड राजै करनपै जाइवे को जाचक निहारे हैं। सिता सित अरुनारे पानिपके राखिवे को तीरथ के पति हैं अलेख लखिहारे हैं॥ बेधिवे को सर मार डारिवे को महा विष मीन कहिवे को दास मानस बिहारे हैं। देखती सुबरन हीरा हरिवे को पश्य तोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं॥ १९८॥

नीत मग मारिवे को ठग हैं सुभग मन बालक बिकल करि डारिवे को टोने हैं। दीठ खग फांदिवे को लासा भरे लागैं हिय पींजरे में राखिवे को खंजन के छौने हैं॥ दास निज प्रानगथ अंतरते वाहिर न राखत हैं केहूं का न्ह कृपिनके सोने हैं। ज्ञान तरवर तोरिवे को करिवर जिय रोचन तिहारे तिय लोचन सलोने हैं॥१९९॥

चंचल चलाँक छरकाएल छबीले बड़े सुखमा सों खीले खुले खेलत महानी के । रंगन सों भारे करतार के सँवारे सोहैं निरखत हारे जिन्हैं मैनहूं की रानी के॥ गोकुल पियारे के हियारे हरखिन होत हेरत ही ऐसे जग जन सुखदानी के। और की परत आँख ढरकिन धोरे होत तेरे चखमीन लखे मीन बिन पानी के॥ २०० ॥

बानी के भवानी के न रानी के सुरेसहू के आसुरी सुरी के हैं न फनी भामिनी के हैं । रम्भा के सुकेसीके न किन्नरी नरीनहूं के मैनका तिलोत्तमा न ब्रम्ह रमनीके हैं॥ सुकवि गुलाब मंजुघोखा के घृताची के न और उरबसी के न ससि भगनी के हैं। मैन घरनी के हैं न ऐसे हरनी के हैं न जैसे नैन नीके वृषभान नन्दनी के हैं॥२०१॥

॥ कूबरी के नेत्र ॥

मानो बारुनी के थके सबनि थकावैं एतो अंजन की रेखैं सुधि हरत हरी के हैं। कहै राम रसिक रसिक मन मोहिवे को मोहनी के जंत्र ए सुढारे सुघरी के हैं॥ बारि डारैं मीन मृग खंजन की चंचलाई ऐसे हैं नुकीले मानो ऐन खंजरी के हैं । आसुरी सुरीके कहा पन्नगी नगी के कहा ऐसे ना परी के हैं सो जैसे कूबरी के हैं॥२०२॥

॥ नेत्र में कटार ॥

टारे हैं टरे न कर जतन अनेक लीन्हें नेक ही निहारत में घायल करि डारे हैं। डारे हैं जलजगार केते सर सरितन के खंजन खिसाने अलि केते जिय हारे हैं ॥ हारे हैं हिरन हहरानै झहरानै झुके दास कहै ग्यान लखि कानन सिधारे हैं। धारे हैं धरारे तीखे सान धरें अनियारे नैन हैं कि तेरे ए अनंग के कटारे हैं ॥२०३॥

॥ नेत्र में नवग्रह वर्णन ॥

नवग्रह एक रास बैठे अति सोभा भास मंडन बदन देखि सूरज लसत है। हाव गुरू भाव बुध मंगल अरुन डोरे स्वेत ताई शुक्र जी सों सोभा सरसत है ॥ लाल कृष्ण केतु ए तो पलक निकेन आली कायन रचत राहु चन्द्रमा ग्रसत है। कैसे को बचैगो कुलकांनि मनमोहन सों नजर निगोड़ी में सनीचर बसत है ॥२०४॥

॥ कबित्त ॥

करकत रहैं धार ढरकति आँसुन की हरकत लाज तन तपनि पसारे हैं। पलन परन देत कलकल पावत हैं जानै न जतन जन जी में निर धारे हैं ॥ ह्वै कै निर दैरी उन्हैं ऐसे ना चितैरी बीर गोकुल के नाथवे तो रावरे पियारे हैं। ईच्छन में गड़ैं क्यों न रीच्छन बिलोकत ही तीच्छन कटाच्छ भरे ईच्छन तिहारे हैं ॥२०५॥

हरिन हेराने कहूं हारन में हेरि नैन मीन हूं समाने जल कंज खंज फीके हैं। रूप की बजार मद पी के मतवारे भए कैधौं हुद्दार ह्वै अनंग की अनीके हैं ॥ नंदराम कैधौं ए कटार हैं कटाकरके आकरके अंत कै बिभाग बरछी

के हैं। सानपै धरे हैं खरसान पै उतारे खूब कैधौं पंचबान बान ओपे ओपनी के हैं ॥२०६॥

खंजन मलीन मृग मीन बन माँझ लीन कंज छवि छीन कीन पायन के चेरे हैं। दीरघ ढरारे झपकारे रतनारे ऐन मैन मतवारे ऐसे मैन कहूँ हेरे हैं ॥ तरुणी चपल मन बाँधिवे को फंदा ऊधो लाल लाल डोरे लखे रूप के घनेरे हैं। बडरे बिसाल हिये किये हैं दुसाल ए रसाल नटसाल लाल प्यारे दृग तेरे हैं ॥२०७॥

भाजे हारि खंजन लजाने कीच कंजन हैं मार रस भंजन अनोखे नैन ऐन हैं। तीखे तीखे नैन बान भृकुटी कमान तान बेधे तन प्रान करैं अति ही अचैन हैं॥ कहै कविराम याकी कौलों धौं बड़ाई करौं मोहिनी जगत की पढ़ाई गुरू मैन हैं। पीन मृगराज बन दीन दुख भँजन ए लाल मनरंजन नवेली तेरे नैन हैं ॥२०८॥

भृकुटी चढ़ी के योधामान की गढ़ी के सौतें दोखिक द्रढ़ी के रंग करत रदीसे हैं। भनत कबिन्द इन्दु आनन गुबिन्द ते वे चाहत चकोर मतपावक ही दीसे हैं॥ कोकनद मुद्रित मलीन मृग कीने और खंजन नवीने हेरि हारे से हदीसे हैं। ईस के असीसे के कमान के कसीसे मैनमद के मदीसे नैन तेरे से न दीसे हैं ॥२०९॥

जीते मृग मीनते बनीन में बसाये जीते खंजन नवीन ते वे ठहरे न ठान के। जीति लीन्हें भौंरते भ्रमत ठौर ठौर डोलैं जीते हैं चकोर करैं असन कृसान के ॥ भनत कबिन्द तानि भृकुटी कमान प्यारी कान्ह जीते जीते

मान सुर बनितान के। अब कजरारे नैन असित गुमान सान कौन पै धरे हैं फेरि बान पंचबान के ॥२१०॥

कैधों रूप सागर के रतन जुगुल कीधौं भूप मीन केतन के कैतन सुपम के। नेह भरे मदन सदन के प्रदीप कैधौं रसराज चाखिवे के चख कस रस के॥ सुनत सुदेस के सुबेस से महीप कैधों बस की वे काज इन्द्रिन दिसि दस के। लागे हिय ऐन कसकत दिन रैन कीधौं प्यारी तेरे नैन तीर मैन तरकस के ॥२११॥

कंजन अमलता में खंजन चपलता में छलता में मीन कलता में बड़े ऐन के। प्रेम में चकोर चोर नेमके निबाहिवे में कहै रघुनाथ ठग ठगिवें में सैन के॥ डसिवे को भौंर डाठि फंसिवे को बंसी चेत गसिवे को जंत्र हेत चैन हूँ अचैन के। यामैं झूठी है न प्यारी ही में आइ लगिवे कों प्यारी जूके नैन ऐन तीखे बांन मैन के ॥२१२॥

खंजन के प्रान पिय बिरह तिमिर भान मीनन के मान धनवान मन मथ के। सोभा के सिंगार रूप थार के ढरार मोती सील सरदार फौजदार प्रेम पथ के॥ श्रीपत सुजान लोने लोचन गुमान भरे सुघर बहलवान रति रानी रथ के। रस बहु रङ्ग जाल जाति के कुरंग माल कंज से बिसाल महिपाल मनमथ के॥२१३॥

सुखमा के घर पूरे पानिप के सरवर आसन अनूप हर रूप बिसराम के। चातुरी के चार कला केलि के अपार हाव भाव के भंडार पाय इन्दीवर दाम के॥ रति के रतन जाल मोहन के मूल माल राजत रसाल हैं बिसाल

नैन वाम के। मीन के महीपत हैं खंजन प्रभा के पति मृग के सलामत सलावन हैं काम के ॥२१४॥

बारिज बिकानें लखि खंजन खिसाने मृग मीन मुरझाने बन हूं न बहरात हैं। भौंर अहरानें आन उपमा न आने कवि हेरि हेरि हार मानि हिय हहरात हैं॥ अति ही बिसाल बांके प्यारी के अनूप दृग कहत कछु पै रोम रोम थहरात हैं। मेरे जान आन दसों चारों चक्र जीतिवे कों भूप मकरध्वज के ध्वज फहरात हैं ॥२१५॥

॥ सवैया ॥

बंक बिसाल रँगीले रसाल, छबीले कटाच्छ कलानि में पंडित। सांवल सेत निकाई निकेत, हिये हर लेत हैं आरस मंडित॥ बेधि के प्रांन करैं फिर दान, सुजान खरे भरे नेह अखँडित। आंनद आस बधू भरे नैंन, मनोज के चोजनि ओज प्रचंडित॥२१६॥

॥ नेत्र में जहाज ॥

लंगर की नहिं एको चलै, गति रोक सकै नहिं कोऊ बिचारी। त्यों पतवार अनन्त मुरैं, तऊ आपनी चाल न छाड़त न्यारी॥ ताप लहे उमड़ैं एहि ते,अहो आंसू नदी नद सागर वारी॥ अदभुद कौतुक है अवधेस,ये लाजकी आंख जहाज ते भारी॥२१७॥

कबहूं ढिग बंदर हैं कबहूं, अति दूर है चंचलता अनुसारी। पतवार बड़ी गुनवार बड़ी, अवधेस सुदेस बसावत झारी॥ बहु पानिप लावनि ताकी तरंग,अभंग सहै भवसिन्धु मैं न्यारी। पर तारन को करतार कियो यह लाज की आंख जहाज ते भारी॥२१८॥

॥ नेत्र में बजाज का रूपक ॥

आबरवाँ लखि होत गुलाब को, चीकन मखमलहू सों दराज हैं। डोरिया लाल पड़ी हैं मुलायम, जो तनजेब बढ़ावन काज हैं॥ मलमल हाथ रहैं लखि लाखन, गाढ़े फँसाव फँसे तजि लाज हैं। आवत है कमख्वाब बिलोकत, नैन नहीं नए नोखे बजाज हैं॥२१९॥

॥ नेत्र में नाच का रूपक ॥

काछे सितासित काछनी केशव, पातुर ज्यों पुतरीन बिचारो। कोटि कटाच्छ नचै गतिभेद, नचावत नायक नेह निहारो॥ बाजत है मृदुहास मृदंग, सो दीपति दीपन को उजियारो। देखत हौ हरि देखि तुम्हैं, यह होतु है आँखिन बीच अखारो ॥२२०॥

॥ नेत्र कविबद्ध ॥

पद्माकर देखि लजाय गये, चिन्तामन ही की रही मन में। मतिराम दई यह को बिधि कहँ, ठकुराई दई जो कटाच्छन में॥ सरताज हैं भूखन भौंह सजे, रस खान रसीले सुभायन में। बलवीर के बीर ए नैन लखे, मृग सेनापती हूं भगेबन में॥२२१॥

॥ सवैया ॥

मीनन की गति हीन भई, छबि कंजन खंजन की सुख दैन। अनूप सोहात मनोज बिसाल, सुतीच्छन धार है बान से पैन॥ धरे अतिसान कहा खरसान, भनै पजनेस मृगा सम तैन। लखे नन्दनन्द परै नहि चैन, सुराजत भावती के असनैन॥२२२॥

एक घरी न थिरैं फिरते रहैं, कानन लों भरि भूरि प्रभातें । जोबन भार भरे असि तौसित, सोहत एऊ अहो कजरातें ॥ गोकुल दोऊ सराहिवे जोग, जगैं जग मैं जस मोद महातें । रावरे नैन कटाच्छनतें बलि, खंजन राजत चंचल तातें ॥२२३॥

हैं परसे वर चारु द्रिगंचल, रंचत सी सुखमा कजराई । नेकु नहीं थिरहैं फिरते रहैं, कानन को परसैं सुखदाई ॥ गोकुल खंजन ते इनते, इतनीयें लखि हरि अन्तर ताई । बेधत हैं लखतै हियरो, तिय के चख में एतनी अधिकाई ॥२२४॥

कानन लों चरबोई करैं, अतिप्यारे लगैं कजरारे अहो हैं । जोबन के मदसों उमगे, लखि मेरे मढ़ैं जन जेतन को हैं ॥ गोकुल सांच सराहिवे जोग, जगै जग में जग जैन तजो हैं । चंचल खंजन मीन मृगैन, सुचैन भरे चख रावरे सोहैं ॥२२५॥

मीन कमीन करैं छिन में, सुकुरंगनि के उरवान सो खोह्यो । चंचलता की कमीन रहै, कछु खंजनते अंखियां जुग सोह्यो ॥ रूप इते पर क्यों इतराइन, कौतुक सो अपनो चित टोह्यो । खंजन गंज बिचारे कहा, भटू अंजन देखि निरंजन मोह्यो ॥२२६॥

मृग के चख मंजु से मीनन से, मुद मोद सदा सुखरासिनी के । कजरारे सुकारे कटीले कछू, औ सिखे गुन जूरे जुरासिनी के । चिरजीवी लला ठगेसे ह्वै रहे, छिन ठाढ़े भये वृज बासिनी के ॥ धँसे जीमें न नेकु कढ़ैं अज

हूं, युग नैन अनंग बिलासिनी के ॥२२७॥

यह संग मैं लागिये डोलैं सदा, बिन देखे न धीरज आनती हैं। छिन हूं जो बियोग परै हरिचंद, तैा चाल प्रलै की सुठानती हैं॥ बरुनी मै थिरैं न झपैं उझकैं, पल मैं न समाइवो जानती हैं। पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अंखियां दुखियां नही मानती हैं ॥२२८॥

डोरे से रंग त्यों सारद रंग से, स्वेत कछू रूचि गंग सवांरे। तापर या अरसीली चितौनि की, चोटैं अचूक न जात संभारे ॥ बंक विलोचन मैं लछिराम, लसैं इमि धीरज मोचनतारे। पांखुरी में अरबिन्दन के, लपटे मनो-रुयाली मलिन्द के बारे ॥२२९॥

खंजन सान मैं ढारी मनैा, खरसान सँवारि बिरंचि अगोटैं॥ कैवर कारैं कटाच्छ फिरैं, लछिराम जऊ घिरी घूँघट ओटैं। या गिरी धारन सांवरे हेरि, च्यो घरी चार सों भूपर लोटैं। धीरज के चकचूर करैं, वृज ए अंखियां अनीदार की चोटैं ॥२३०॥

अंजन अंजित हैं मनरंजन, खंजनके मद भंजन सोहैं। चाह भरे औ उछाह भरे, नवनेह भरे सब को मन मोहैं॥ वेठग काहि ठगैं न भले, अति जात सयान अयानहु जोहैं। को ललचाय न लालन के, रसकेस सुनैन लखे ललचोहैं॥

जब ही जब वे सुधि कीजत हैं, तब हीं सब ही सुधि जात सही। गति और भई मति और भई, सब ही अंग औरहि वान गही॥ यह रीत अनीत नई है छई, निरखे ही बने सो परे न कही। रस केस लगी रहैं आंखिन आंख,

सुआंखैं जु लागति रंच नही ॥२३२॥

खंजन मीन सों बैर किये, जल देखत ही मृग दूर सों भागैं। गोरे करार भरे रस में,उन लोयन लाल सदा रस पागैं॥ कै जुग खून करैंगे घनो, वह जो कब हूं रति में निस जागैं। कज्जल काहे को देत अली,तेरे सादे जो नैन कटार सों लागैं ॥२३३॥

देखिये देख या ग्वालि गवांर की,नेकु नहीं थिरता गहती हैं। आनन्दसों रघुनाथ पगीं,पगि रंगन सों फिरतै रहती हैं ॥ छोर सो छोर तऱ्योनाको छ्वै, करि ऐसी बड़ी छबि को लहती हैं। जोबन आइबे की महिमा, अंखियां मनो कानन सों कहती हैं ॥२३४॥

देव कहा औ अदेव कहा, औ कहा नरदेव कहावत सोऊ। जोगी कहा औ जतीहू कहा, औ ब्रतीहू कहा बन में बसे जोऊ॥ तीनहुं लोकन में इन सों,रघुनाथ रह्यो बिनुहारे न कोऊ। बान सो मैन कटाक्ष सो नैन, सो ये जग जैन विख्यात हैं दोऊ ॥२३५॥

लोल अमोल कटाच्छ कलोल,अलोलिक सो पट ओलिकै फेरे। पानिप सों अति पैने रसाल,बिसाल बने मन भावते मेरे॥ केशव चीकने चैागुने चोखे, चितैकै किये हरि न्याइन चेरे। सोच सकोचन श्री रति रोचन,धीरज मोचन लोचन तेरे ॥२३६॥

केशव वाकी चितैान की कैान,कला कहौं जात कही कछु नाहीं। यद्यपि सुधोर सुधारसपागी, बिकार बिवर्जित सोहैं सदा हीं॥ तद्यपि जाय परैं जहं औाचक,नेको

स्वभाव हने जेहि घाहीं। चेतन होत जड़ै जड़ चेतन, केतन को निरख्यो दृग माहीं ॥२३७॥

आपने हाथनसों करतार, करे अति ही जग वीच उँजारे। देखन ही रहिये रघुनाथ, जुदे नहि कीजे लगैं अति प्यारे॥ सौरभ सों परि पूरन पुष्ट, पवित्र भरे रस आनंद धारे। बारि बिना उपजे अति सुन्दर, प्यारी के लोचन बारिज न्यारे ॥२३८॥

खंजन की अरु मीनन को, अरु अंबुज की जिय जीति बसेते। काम के बानन की मृग की, औ तुरंफेन की छबि देखि हँसेते॥ ऐसनि सौं गुनए रघुनाथ, न मंजन अंजन रेख लसेते। तेरे बिलोचन याते भट्ट, भये तीखे तय्योनननि छ्वै निकसेते ॥२३९॥

काहू के कंजन खंजन की, रघुनाथ धरे रुचि राम विहारे। काहू के मीन मृगैनन के,गुनरूप धरे रंग के अलि हारे॥ जेतिक हैं जग मैं जुवती, तिन के ढंग को एहि भांति निहारे। तीच्छन बानन की धरैं बान, सो ईछन ए सुखदान तिहारे ॥२४०॥

चंचल चोखे से चीकने से, चटकारे से चौगुने रूप भिराम के। सान सगेसे बिखान लगे से, सयान पगे से रंगे से ललाम के॥ माजे ममारख दैविष अंजन, सीधेसे बीधे हृदै घनश्याम के। बान चितै दृग तेरे पियारी,रहे सर काम के ए कौन काम के ॥२४१॥

बांहु बिहीन बिना गुन तानि,सरासन बान चलावैं कठोर हैं। कर्ण समीप रहैं निसि बासर, श्याम हितू बिन

पायन दौर हैं ॥ रूप बड़े वो बड़े धनवारे, कहावत पै बड़े चित्त के चोर हैं । बातैं करैं री बिना रसना, वृष भान लली के अली दृग और हैं ॥२४२॥

कौन रहै ठग मूरसी खाय कै, भूलत कौन विवेक कलै । काहिन वे बिसरावैं सबै, सुधि मोहन वे केहिका अबलै ॥ होत सयान अयान सबै, चतुराय अनेक न एक चलै । आलीरी मोहन लाल के लोल, बिलोचन देखत को न छलै ॥२४३॥

नैनन की बढ़वारि लखे, चितचातुरी की उमगी अधिकाई । चातुरी की अधिकाई लखी, तब नैनन और गही सरसाई ॥ कृष्ण कहै बरबांध्यो दुहूं, न इते पर धौंस मनोज की पाई । होड़िए होड़ा चली बढ़ मानों, बिलोचन औ चित की चतुराई ॥२४४॥

हेतु अहेतु कछू न बिचारत, क्यों हूं अचेतन चेत गहैरी । देखत वा मन मोहन की, छबि क्यों हूं लगात न मेरे कहेरी ॥ हूं कितनौं कैसुकै रिस को, करों ए न सिखैं हँसिकै उन हेरी । कैसी करों यह नैनन को, यह बान परी डिगिहू के डहेरी ॥२४५॥

कै सुखमा के समुद्र के सोहि, रहे जुग मीन अनेक कलाकरि । की छबि की रचि पिंजर काम, दियो तेहि में युग खंजन को धरि ॥ भाषैं मुनी रघुराज किधौं, बिधु बाल कुरंग द्वै लीन्हों मुदै भरि । आपके पंथ में लागे सुप्रेम में, पागे किधौं रुकमिनी दृगैंहरि ॥२४६॥

खंजन ऐसे कहा मन रंजन, मीनन लेखो कहा रसटार

सों । कंजन लाज को लेस नहीं, मृग रूखे सने ये सनेह के साज सों ॥ मोतिन के यह पानिप जोतिन, वारिज वारन जानत मार सों । मीत सुजान सराहत तो, दृग है घन आनंद रंग अपार सों ॥२४७॥

नित लाज भरे, हित टार टरे, निखरे सुखरे सुखदायक हैं । घन आनंद झूमि कटाच्छन सों, रस पानि तृषाहि सहायक हैं॥ जिय बेधन को अनियारे महा, पै सुधा हो सुधारन सायक हैं । घिरि घूँघट पैठत जानि हिए, निपटे निवटे नटनायक हैं ॥२४८॥

पीर हीयेको हिये में पिराय, लखाय न रंचहु जानै न कोऊ । हाय जी हाय सुहाय न श्रौर, उपाय करोरते जाथन सोऊ ॥ हैं तो कहैं रसकेस अली, यह काहुहि भूलि व्यथा जनि होऊ । लोचनि बानन को विष ऐसो, लगै इक घायल होत हैं दोऊ ॥२४९॥

श्रंग पराए भए सब ही, अब तो न बनै उन सों मुख मोड़े । कैसेहु मान मैं ठानौं हिए, दहै सामुहे होत न रंचक श्राेड़े॥ चित्त अचेत रहै न कछू, रसकेस कोऊ निज बानिन छोड़ें । हैं कसकै रिसकै करैं नैन, दुहूं निसखे हँसि देत निगोड़े ॥२५०॥

दुहू नैन न मानहिँ नेकहु सीख, किती समुझाय कही इन सों। टुक हेरत धायकै आय मिलैं, पुनि क्योंहु न धीर धरैं छिन सों ॥ अपनी दिसितें हम प्रान श्रौ अंग, निछावरि कीन्हे घने दिन सों । तन श्रौ मन हारेहु रूसे रहैं, रसकेस बसाय कहा तिन सों ॥२५१॥

पंकज के दलछै परछै, भँवरी रस लाल चहेत खगी है। कै नटनी सुरनायक की, निरतैं कल हाव सो भाव पगी है॥ बाल के नैन की पूतरियां, निसिवासर लाल के ही मैं लगी है। कंचन की झखरूप ड़िधीन में, खोल धरी मनो नील नगी है॥२५२॥

भीखम कर्ण कृपा अभिमन्यु, दुर्योधन सोम सोभूरि स्रवाके। अर्जुन भीम युधिष्टिर धृष्ट, बिराट बली सहदेव प्रभाके॥ सोसर व्यर्थ भये इन हूं के, कहा कहिये निरदीन दया के। मेरे कटाच्छ बचैं न मुनीसहूं, हैं कबि सोसर की समता के॥२५३॥

भूत परेत को फेरो बचै, एहि नैन को फेरो हिओ तोरि डारै। तीर चलै तरवार चलै, अरु सम्भु को बान छुटैं अति न्यारे॥ बज्र को फेरो बचै तो बचै, अरु प्रान बचै नरसिंह हुंकारे। काल को फेरो बचै घरी द्वैक, बचै नहि नैंन चपेट के मारे॥२५४॥

समता कहो कैसेहु भाखि परै, कबहूं कुमुदामल खंजनते। अलिजाचक ह्वै कै सकै सरिकै, उन कंजन के मद भंजनते॥ द्विज देव कुरंग सकै समुहाय, ललामन मंजुल रंजनते। जब प्यारी सुधारति सूधे सुभाएन, मोह मई दृग अंजनते॥२६५॥

तुव खंजन नैन चकोर बने, तिय नाहक अंजन दै मरि है। जकरे गजमस्त जंजीरन ते, तिन को मद प्याय कहा करि है॥ मतवारेन को कोऊ देत कमान, लगायके तीर हिये मरिहैं। यह आंसो तो ऐसे कटाछ करैं, परखों तो

एहि परलै करिहैं ॥२५६॥

कान्ह की बांकी चेतौनि चुभी चित्त, काल्हरी झांकी तू बाल गवाच्छन। देखी है ओखी सी नोखी सी कोरन, ओछी परै उभरै जित जाच्छन॥ मान्यो सँभारि हिये मैं मुबारख, हैं सहजैं कजरारे मृगाच्छन। काजर दे री न एरी सोहागिन, आंगुरी तेरी कटैंगी कटाच्छन॥

कोरन लौं दृग काजर देति है, कारी घटा उमड़ी घनघोरन। घोरन आली चढ़ी मनो सुन्दरी, बाग नहीं कहूं देति है मोरन॥ मोरन की गति नाचति है, अरु यों बरज्यों बरज्यों बरजोरन॥ जोरन देव सखी पलकैं, अँगुरी कटि जैहैं कटाच्छ की कोरन॥२५८॥

चले राखत रूखन राहिन के, पलपान महावत धीसन के। ढले ढाहत ढूह विवेकिन के, हले ग्याननि के गढ़ पीसन के। गजराज बिलोचन बारे प्रिया, हुकुमी नहिं ए अबनीसन के। बँधे लाज जंजीरन चूँ न करैं, खुले खून करैं दस बीसन के॥२५९॥

झुकि झूमैं झुकैं उझकैं न रुकैं, बहु बीर किये बिन सीसन के। उतरी हैं महावत मैन सखा, खुले केस हैं छौना फनीसन के॥ कबि जीत सुरासुर जीते सबै, छुटि जात हैं ध्यान मुनीसन के। मतवारे मनो दृग कुंजर से, खुले खून करैं दस बीसन के॥२६०॥

यह हैं मृगराज की बानि बसे, बन बीच गुहा में गिरीसन के। गजराज को कुम्भ बिदारी सरोज जू, मोति निकासत सीसन के॥ जदि जालमें आय फँसैं कबहूं, गरजैं

बस में परि रीसन के। बँधे तोरन चाहत हैं पिंजरा खुले खून करैं दस बीसन के ॥२६१॥

तरवार अनी बरछी की घनी, जय हेतु मनो दस दीसन के। अलकेस त्यों पैनी कटार बिदारन, हार सुहीर मुनीसन के ॥ सजि सोहत एकहि घूँघट म्यान में, गाहक घायल सीसन के। बचुरी अरी नेक नकाब टरे, खुले खून करैं दस बीसन के ॥२६२॥

रतनारी तिहारी तिरीछी तके, अँखियां इन रईसन के। हिये घाय करैं कवि कोबिद फारसी, और अँगरेजी नवीसन के॥ पुनि और की बात कहां ले कहौं, छुटि जात है ध्यान मुनीसन के। नहीं घूँघट में चोट करैं, खुले खून करैं दस बीसन के ॥२६३॥

अति बांके लराके सुछाके सुरा, जनु हैं महीसन के। अनियारे दोऊ रतनारे लसैं, मन बेधन मुनीसन के ॥ कहि मंगल दीन त्रिया दृग बान, हरैं ए पचीसन के। झुकि झूमैं झुकैं झँझरी ते झकैं, खून करैं दस बीसन के ॥२६४॥

॥ नेत्र में बादशाह ॥

उड़िगे चकोर मोर खंजसिली मुखजोर जंगल उरग तुरग मृग दीप नाह। झख मारि मन हारि कंज कारि बूड़े नाहि ऊपर परीन की परीन की परीन आह। औध कलकल यों बहाल हरि हाल लाल सौति सात बोलचाल वाह वाह आह आह। लखत सखत दसखत एतखत भाव बखत बलन्द प्यारी तेरे नैन पातशाह॥

॥ नेत्र में सिपाही का रूपक ॥

भृकुटी कमान निगा मारत हैं बान गोया पलकों के मोरचे बँधे ही दिन रैन हैं। पूतरो की ढाल बाँधे स्वेत तरवार कोए सुर्मई धरे हैं बाढ़ मानो ऐन मैन हैं ॥ चितवन चमक चारु फौज मानो सिंगार लड़िवे को सूर बीर कहिवे को ऐन हैं। रुस्तम कहत यार मन में बिचार ए जोबन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं ॥२६६॥

॥ कवित्त ॥

राखत सलूक मिले मदन महीपति सों सुतनु सरकि जात कानन की ओर हैं। चपरि हरति वृजबालन के मन धन मरति मरोर भरे योवन मरोर हैं ॥ जागतहू मूसैं सावधान को बिबस करैं चपल चितौन सर बेधत सजोर हैं। मोसों कहि आली वृज लाडिले के लोल दृग ठग हैं कजाक हैं डकैत हैं कि चोर हैं ॥२६७॥

बीर कित जैये काहि जो दुख सुनैये निज कोऊ ना लखाय ऐसो होय मेरी ओर हैं। एरी रतिराज रस-राज रितु राज तिहुं रसिक बेहारी बड़े हिय के कठोर हैं ॥ चितबिन बचत न हटि कै हरत धाय कीजे कहा लालन के दृग बरजोर हैं। भोर के सुठग बटपार साव-धान के हैं सोए के जु फाँसीगर जागत के चोर हैं ॥२६८॥

पानिप के पानिप सुघरताई के सदन सोभा के समुद्र सावधान मनमौज के। लाजन के बोहित पुरोहित प्रमो-दन के नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ॥ दया के दिवान पतिव्रतहू के परधान नैन ए मुबारक बिधान

नवरोज के। सफरी के सिरताज मृगन के महाराज साहेब सरोज के मुसाहेब मनोज के ॥२६९॥

छबि वरसील बाल साहस के घर पीय मन मीन सर सर कामदेव तन के। चातुरी के मार हैं सिँगार के कुमार कीधों खंजन के अवतार रंजन सबन के॥ रथ मनोरथ ही के बाहन से ऐन मैन नीलकंठ ऐसे नैन को सकै बरन के। भौरन के भूप चार चक्कवै चकोरन के हरिन के हाकिम कुटुम्बी कमलन के ॥२७०॥

मीन के महीप मुख दीप के लसत दीप सील के वकील सुखदायक नदन के। छबि के बिमान सुघराई के दिवान दोऊ कीधों दरबान रूप भूपत सदन के॥ कहै द्विज कवि खंजरीटन के दाएदार राधे तेरे नैन ऐन धीरज कदन के। भौरन के भैया सुखदैया हैं चकोरन के नायक सरोजन के सायक मदन के ॥२७१॥

आब मेन आब है रुचिरताई कै निलय सोभा के आकर अमीर मन मौज के। नेह के निधान औ बिधान पति देवन के गुन के बजीर औ मुनीब चित चोज के॥ मीनन के राज सिरताज हरनीनन के वल्लभ नए नए प्रधान रति फौज के। लाज के जहाज महराज सुभ कंजन के खंजन के नायब मुसाहेब मनोज के ॥२७२॥

जीते जिन तामरस अलि कुल मीन कुल कारे कजरारे सोहैं पिय सुख दैन के। जीते जिन खंजन औ मुकता हरनि जीती जीते हैं चकोर कैधों दीपक हैं रैन के॥ कमल ढरारे कैधों प्रेम मद मतवारे तेवन सोहाय धरे

जागे सुख सैन के। मृग हैं भडैन कैधों पायक खंडैत दोऊ प्यारी तेरे नैन कैधां जोधा ऐन मैन के ॥२७३॥

बाजि चपलाई तामै मैन असवार गाढ़ो तरकस बंद वर पलकैं सुधारि हैं। ताहीते कटाच्छ बान भरे तेई नोकदार जाके तन लागैं सोई लगन बिचारि हैं॥ कहै द्विजराज भौहैं चांप सी चढ़ावै जनि कह्यो मानु प्यारी ये तो अबै पट पारि हैं। घूँघट न खोल तेरे नैन हैं निपट बांके घरिक में घेरि काहू घायल करि डारि हैं॥

रस भरे जस भरे कहै कवि रघुनाथ रंग भरे रूप भरे खरे अंग कल के। कमला निवास परिपूरन सुबास आस भावते के चंचरीक लोचन चपल के॥ जगमग करत भरत दुति दीह पोखे जोबन दिनेस के सुदेसु भुजबल के। गाइबे के जोग भये ऐसे हैं अमल फूले तेरे नैन कमल अमल बिन जल के॥२७५॥

पजन प्रवीन टेरैं सैनन संकेत प्यारी प्यारे को कनोखी जुत ननद जकैती सों। कोर कजरारी तापै फरकत फेर फेर थिर खंजरीटन की थिरक थकैतीसों॥ धार मुख धार तापै कर कमरथ्थ कापै किमि खरसान धार फेंकत फकैतीसों। कामिनी को नीको बिधु बदन बिराजै आज मैन सर काढ़े नैन पलक बकैतीसों॥२७६॥

कज्जल करारे रतनारे औ कटाच्छ धारे ढारे काम सांचे पुनि पानिप भरारे हैं। राते पुनि माते अलसाते पुनि यों जँभाते पुनि मुसकाते इतराते मतवारे हैं॥ अधिक दुखों हैं चपलोहैं निठुरोहैं सुवसोहैं मन मोहै

दृग दूलह पियारे हैं। तीखे फिरि रूखे बिख बांधे सर सांधे हनि डारैं फिरि मारैं दइमारे हतियारे हैं ॥२७७॥

कैधों चंद्र मंडल मैं खेलैं खंजरीट जानि सीत को प्रसंग अंग अंग बिष धारे हैं। कीधैं रचे जोबन नरेस मन रंजिवे को सेत रंग वारे रस राज के अखारे हैं॥ कैधौं सौतिगन के सोहाग चोरिवे को तम सेखर के कामदेव आसन निहारे हैं। कैधों रही लागि मंजु कंजन में लाज कैधों कामिनी के आज नैन अंजन सुधारे हैं ॥२७८॥

लजीले सकुचीले सरमीले सुरमीले से कटीले औ कुटीले चटकीले मटकीले हैं । रूप के लुभीले कजरोले उनमीले बरछीले तिरछीले से फंसीले औ बसीले हैं ॥ ललित किशोरी झमकीले जरबीले मानो अतिहि रसीले चमकीले औ रंगीले हैं। छबीले बँकीले अरु नीले से न-सीले आली नैना नन्दलाल के नचीले औ नुकीले हैं ॥

रूप गुन मद उन मद नेह तेह भरे छल बल आतुरी चटक चातुरी पढ़े। घूमत घूरत अरबीले न मुरत नेको प्रानन सो खेलै अलबेले लाड़ के बढ़े ॥ मीन कंज खंजन कुरंग मान भंग करैं सींचैं घन आनन्द खुले सँकोच में मढ़े । पैने नैन तेरे से न हेरे मैं अनेरे कहूं घाती बड़े काती लिये छाती पै रहैं चढ़े ॥२८०॥

घेर घबरानी उबरानिहीं रहति घन आनद अर-तिराती साधनि मरति हैं। जीवन अधार जान रूप के अधार बिनु व्याकुल बिकार भरी खरी सुजरति हैं ॥ अतन जतनते अनखि अरसानी बीर प्यारी पीर भरी

क्योंहूं धीर ना धरति हैं। देखिये दसा असाध अँखियां निगोड़िन की भसमी बिथा पै नित लंघन करति हैं॥

अति अनियारे तारे कजरारे रेक भारे ऐसे उँजियारे जैसे दिया बारियत है। रूप रतनारे मतवारे प्रेम प्यारे जी के कमल करारे हारेई निहारियत है॥ घूँघट उघारे ते निहारे नेक तारा कबि टरत न टारे चित्त के तो टारियत है। ध्रिग हैं वे दृग जोई मृग देखि रीझत हैं ऐसे दृग देखे मृगछौना वारियत है॥२८२॥

मान पद मान की जरब सौं सरब जिन सौतिन के गरब गजक करि डारे हैं। तीच्छन कटाच्छ करबाल कोर काढ़े फिरैं घेरे ते घिरे हैं महा मोह मद वारे हैं॥ भनत कबिन्द भाव ते को लै मिलाय पाय बिरह कि लाय इन पूरे बल धारे हैं। काहू को गनैंना ए मनाएते मनैंना मोपै बर्नत बनैंना तेरे नैंना मतवारे हैं॥२८३॥

लाज भरीं आलस गुमान भरीं दूना दून मद भरीं जोबन की छकन छकातीं हैं। झाँई भरीं झीने मुख आँचर झुकाती किति मोहन अछेह नेह मेह बरसाती हैं॥ खंजन जलज मृग मीन देखि दीन होत तीच्छन मनोज बानहूंते अधिकाती हैं। दोऊ बीच ह्वै कै परी काजर की रेखैं तऊ नैंनन की नोंकैं झोंकैं फोंकैं कढ़िजाती हैं॥२८४॥

हरिन निहारी जकि रहे हिय हार मानि बारि चर बारिज की बाँनिक बिकाती हैं। हाती होत तिय पछिताती कर छाती दैदै धीर मन रंजन कै खंजन जमाती हैं॥ दीबे को समान उपमान इन दृगन की कबिन के मन

की उकति अधिकाती हैं। प्यारी के अनोखे अनियारे ईछनन छ्वै छ्वै तीच्छन कटाच्छन ते कटि कटि जाती हैं॥

ऐसे मैन काहू के न ऐसे मैन काहू के न ऐसे मैन काहू के संवारे दीह दौर के। भौंर हैं नकारे ऐसे भौंर हैं,नकारे ऐसै भौर हैं नकारे कंज मंजुल मरोर के॥सर सुखमा के हैं न सर सुखमा के हैं न सर से हैं माखन कटाच्छ पैन कोर के। देखे हरनी के नैंन देखे हरनी के नैंन देखे हरनी के नैन तीके हैं न और के ॥२८६॥

ऐसे अनियारे मानों समुद करारे भारे मानों मद धारे सोए मैन मतवारे हैं। काजर से कारे खरसान से उतारे कारीगर के संवारे सो बिरह बांन मारे हैं। घूँघट जवनिका से निकस के चोट करैं कहै कवि बोधी ए बिरह बान जारे हैं॥ ऐसे अति तोखे नैन बानन छिपाय राखो भौंह की मरोर सो करोर मारि डारे हैं॥२८७॥

प्यारी के दृगन में झमकि दृग प्रीतम के पीतम के नैन दृग प्यारी मन रंज हैं। चाव में सिंगार साज मैन हीं के सुधासार दृधन पखारि धरे माधुरी के मंज हैं। हरदयाल सुकवि रसाल उपमा बिसाल लाल मन लाल है कै मैन सरसंज हैं॥ कंज बिच खंज है कि खंज बिच कंज हैं की कंज हैं खंज है कि दोऊ कंज खंज हैं॥२८८॥

जलज लजात मृग मीन पछतात जात खंजन खिझात अकुलात भौंर काले हैं। रूप के जहाज सुख साज के समाज राज रहित निसंक बंक मद मतवाले हैं॥ रस मे रसीले लखे जस में जसीले छैल लाल बल बीर

मन मोहन निराले हैं। काजर से काले सेत संखसे उजाले तेरे नैन मतवाले लाले सुधा के से प्याले हैं ॥२८९॥

कारे छपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ठरारे मनमथ मतवारे हैं। लाज भरे भारे भारे चपल अन्यारे तामें सांचे कैसे ढारे प्यारे रूप के उजारे हैं॥ आधी चितवन में किये तैं अधीन हरि टोने से बसीकर किलोने परिहारे हैं । कमल कुरंग मीन खंजन भँवर वृषभान की कुंवर तेरे दृगन पै वारे हैं ॥२९०॥

॥ पाषान पुतरी की आंख ॥

पलक न परति ढरति हैं न कानन लौं लाये टकलेस लखि ऐन बनसीकी है। पलटै न रंग अंग परै न सिथिल नेक लागै न तिमिर लाज होत न नजीकी है ॥ सीत की न भीत कछु तेज की न रघुनाथ पागती न डर वरु है किरकिरी की है। देखिबे को बनक बनाए बनमाली जू को आली री पखान पूतरी की आंख नीकी है ॥२९१॥

॥ नेत्र में नाव ॥

बोझै लाज भार रूपसागर मैं सदा रहैं दए हैं चलाय साजबाज प्रेम पथ के। गूहे लाल डोर नगसाल सोई गुन भयो बरुनीन होंहिं मानों खेवै बैठी हथ के॥ अंजन निसान चितवनि सोच हरजानि कहां लों करौं बखान नाहीं जात कथ के। केवट कटाच्छ कर नैयातो लुनाई भई नैना तो न होंहिं ए नवारे मनमथ के॥२९२॥

॥ कबित्त ॥

आसव पगे हैं अनुराग सों रँगे हैं कीधौं सौतिन

ठगे हैं धरे खंजर कतल से । कहै द्विज कवि कै सहाबके सरोवर में मदन के मीन जुग पैरत नवल से ॥ कीधौं ससि गरब कुरंगन को भयो रोस रेसम के जाल फँदे खंजन जुगल से । रैन के उनीदे नैन राधिका सुजान तेरे माते पिय प्रेम भये राते कौलदल से ॥२९३॥

कंज कुम्हिलाने मृग मीन मुरझाने सकुचाने खरे खंज कबौं आवत न नेरे हैं । हार मान डार सिर छार गज भागे बन मैन शर विखम विकाम भे घनेरे हैं ॥ केलि कै बिसाल भूमिपाल देस देसन के काम बस भये बिन दामन के चेरे हैं । ललित लजीले अनखोले चमकीले प्यारी नेसुक नुकीले ये नसीले नैन तेरे हैं ॥२९४॥

बोलत ढँगीले बैन अति अरसीले आज हीरन के हार हालैं उर पै घनेरे हैं । बेनी द्विज संग में कियो है रति रंग याते अंग में अभूखन लखात बहुतेरे हैं ॥ अंजन बिनाहीं मदगंजन हैं खंजन के अरुन अमोल डोरे आस पास घेरे हैं । पोखे मदमाल के अनोखे नोकदार चोखे कीले मैन मंत्र के नसीले नैन तेरे हैं ॥२९५॥

पाइये न खोज खंजरीटन में रंचकहूं लोचन तिहारे ये छिनैया गतिमीन के । कंज दल गंजन कुरंग मान भंजन ये रंजन हैं रंग मन रसिक प्रवान के ॥ मधुप बिचारे हिय हारे ही रहत बन अति सुखदायक सहायक सखीन के । तीखे तीर काम के न देखे काम याम के गनावै को परीन के नरीन किन्नरीन के ॥२९६॥

ऐसे नैन मैन के न देखे ऐन सैन के जगैया दिनरैन के

जिनैया सौतिसीन के। कमल कुलीन के मुकलित करन-हार कानन की कोरन लौं कोरन रँगीन के॥ भनत कबिन्द भाव तीके नैन चायक से देखे मैंन पायक से नायक नवीन के। सीचे हैं अमीन के अमीन मानो मीन के वखानै को मृगीन के खगीन पन्नगीन के ॥२९७॥

अंजन सुरंग जीते खंजन कुरंग मीन नेक न कमल उपमा को नियरात हैं। नीके अनियारे अति चंचल ढरारे प्यारे ज्यों ज्यों मैं निहारे त्यों त्यों खरे ललचात हैं॥ सेनापति सुधासे कटाच्छन बरखि जावैं जिन को निरखि हिये हरखि सिरात हैं। कानलौं बिसाल काम भूप के रसाल बाल तेरे दृग देखे मेरो मन न अघात हैं ॥२९८॥

खंजन खिजात जलजातहू लजात हेरे हरिन हिरात मुकतान वहरात हैं। पंचसर कीने रद भौंरन के भूले मद नट से विचित्र चित्त ही मैं हहरात हैं॥ दीपक मलीन छीन मीन लागे मेरे जान दीने तीन रंग याते अति इतरात हैं। परबत प्यारे प्रान प्यारी जू तिहारे दृग मारत निसंक न कलंक ही डेरात हैं ॥२९९॥

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रवीन कैसे अंजन सहित सित असित जलद से। चर से चकोर से कि चोखे खांड़े कोर से कि मदन मरोर से कि माते राते मद से॥ नवी कवि ऐना से कि और नैन बैना से कि सियरे सलोना से कि आछे मृगमद से। पय से पयोधि से कि और सोंधे सोध से कि भारे कारे भौंर से कि प्यारे कोकनद से॥

दूर ही ते सोही चार अचल हँसोही बड़ी भौंहन के संग सोहो सुभग नवेली को। आयो जब ढिग तब

सुबरन बेलीपर लीन्ही अनुहार है सुखंज जुग केलीकी ॥ पुनि अध खुली इन्दीबर की कली सी दीसी परी है तिरीछी डीठ बचिके सहेली की। बिबिध कटाच्छ भाँति मैन सर पाँति पाँति बनी ऐसी अँखियाँ अनूप अलबेली की ॥२०१॥

॥ नेत्र के लाल डोरे ॥

पाटल नयन कोकनद कैसे दल दोऊ बलिभद्र बासर उनीदी देखी बाल मैं। सोभा के समुद्र में है आभा बड़वानलकी देव धुनि भारती मिले हैं पुन्यकाल मैं ॥ काम कैवर्तक कैधों नासिका उडुपग बैठ्यो खेलत सिकार तरुनी के रूप जाल मैं। लोचन सितासित में लोहित लकीर मानो बाझै जुग मीन लाल रेसम के जाल मैं ॥२०२॥

आनन्द के मन्दिर में कैधों रुचि मानिक की कैधों अनुराग लता अंकुर बिराजहीं। कैधों रतिनाथ जू के हाथ की छबीली छरी जाके इतमामते तमाम दुख भाजहीं ॥ कैधों तरुनाई अरुनोदय किरिन राजै तारे कारे घन चपला सी सुख साज हीं। लाल मन बांधिवे को कैधों लाल रंग डोरे कैधों बाल डोरे तेरे नैनन में छाजहीं॥

॥ कबित्त ॥

हम ही में रहैं पै न कहे में हैं दहैं देह बिरह अगिनि ऊक आनि उर डारतीं। दई है बनाय बिधि अवध की बैरिन पै अमरेस इन्हैं भूरि हमहीं तौ हारतीं ॥ होत न निबाह जो रिसाय नेक राखैं मूँदि उघरे निगोड़ी दूनो मगपग धारतीं। लाज को न राखैं लोक लीक गहि दूरि नाखैं बरबस आंखैं हमैं परबस पारतीं ॥२०४॥

लोचन अनूप लोने लगत सोहाय अति सेत अरु श्याम रतनारे सुख दैन ते। अमृत हलाहल औ मद से भरे हैं खरे रसिक बिहारी चिलमात गुन सैनते॥ वह मधुराई करुआई औ तिखाई घनी रसिक सुजान जन जानै मति ऐनते। जीवत मरत झुकि झुकि कै परत सो तौ चितवत जाहि एकबार भरि नैनते॥३०५॥

अति अनियारे अरुनारे कजरारे मंजु कंज अलि-खंजन लजात हिय हीन हैं। इनकी अनूप रीति रसिक सुजान जानै रसिक बेहारी सुखदायक प्रवीन हैं॥ चंचल चमक चारु चलत चमाके नैन बीच पट घूँघट के सारी सेत झीन हैं। मानो सुर सरिता बिमल जल आनन्द सो उछरत आय फेरि फेरि जुग मीन हैं॥३०६॥

कानन कुटुम्बी घने कंटक चवाई लोग भारे नदनारे दुख सुख चहुं ओर लों। रसिक बेहारी अति अगम सनेह पंथ सुगम न जाइवो निबाह तेहि छोर लों॥ मेरो बस नाहीं गहे फेर ना रहाँहीं नेक रुकत न रोके करौं जतन करोर लों। नैना नहि मानत हैं लाज को लगाम रंच ऐंचे चले जात हैं तुरंग मुहजोर लों ॥३०७॥

सारी नील जारी के सुओट ते चलावैं चोट मारैं तक तीर सों प्रवीनता घनेरी हैं। रंच हूं न चूकत अचूक सर मूकत हैं खैंच के कमान भौंह करत करेरी हैं॥ कुटिल कटाच्छ बान लागत बिसिख आन रसिक बेहारी गति जाय ना निवेरी हैं। मन मृग मेरो करबरते गह्यो है हठि जानै जुग नैन अहे अजब अहेरी हैं॥३०८॥

रसिक बेहारी देखि सांवल सलोनो गात अति लल-

चात दोऊ होत अनुरागने । जस हीन देखैं अपजस हीन देखैं रंच जाय के लगत घाय ऐसे भये लागने ॥ कहा करौं हाय नेकहू न सकुचाहिं एतो जो पै बरजों तो होय दूने दुख दागने । चपल निलज्ज जुग लालच भरे निसंक हेरि रूपदानी चलि जात नैन मागने ॥३०६॥

पल दल संपुट में मुदै मन मोद माने आरस बिभावरी ह्वै होत भौंर हाइ है । द्वै सरोज बीच एक बसत रसत कैसे लसत सुऐसो अचरज अधिकाई है ॥ बाहिर ते रूप मकरंद पान करैं पुन्य बड़ी भूत गति हेरैं सो मति हेराई है । नयोई रसिक घन आनन्द सुजान यह कीधों प्यारी तेरे नैन सैन की निकाई है ॥३१०॥

त्रिबिध समीर बहै सीतल सुगंध मन्द जलथल भूमि तल सकल सुदेस है । उपवन बिपिन बिराजैं बहु रंगन के कूजत विहंग अंग रहित कलेस है ॥ सुखद सँयोग न बियोग कहूं देखियतु पावन औ परम सोहावन हमेस हैं । पीवत सरित नीर बसत सरित बीच देखो यह अजब अनोखो दृग देस है ॥३११॥

नैन अरसीले सरसीले अति रस भरे बिबस बसीले औ रँगीले रंगमगेसे । निपट हठीले अरबीले रसकीले जनु गुनन गसीले गरबीले रस पगेसे ॥ कछु मुसकाहैं तिरछाहैं सकुचाहैं कछु होत जात नाहैं मन माहैं पग लगेसे । ललित लताहैं कछु लाल चल जाहैं जनु याचक यचाहैं ढिगडोलैं डगमगे से ॥३१२॥

आलस बलित कोरैं काजर कलित मतिराम वै ललित अति पानिप धरत हैं । सारस सरस सोहैं सलज

सहास संग सगरबस बिलास ह्वै मृगन निदरत हैं। बरुनी सघन बंक तीच्छन कटाच्छ बड़े लोचन रसाल उर पीर ही करत हैं ॥ गाढ़े ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत मैन बान से बिसारे न बिसारे बिसरत हैं ॥३१३॥

पिय मन दूत कीधौं प्रेमरथ सूत कीधौं भँवर अभूत अपुबास के सुरंग हैं। चितवत चहूं ओर प्रीतम के चित्त चोर चन्द के चकोर कीधैं केशव कुरंग हैं॥ बान मद भंजन कै खेलिवे के खंजन कि रंजन कुंवर कामदेव के तुरंग हैं। सोभा रस लीन मीन कुवलय रसभीन नलिन नवीन कीधैं नैन बहुरंग हैं ॥३१४॥

अरुनाई चपलाई कहै कबि रघुनाथ गोराई औ श्यामताई जेती चहियतु हैं। मोहन बसीकरन सोखन उचाटन आकर्षन बेधिवे की रीति गहियतु है ॥ देखि कै बिचार कीन्हों अलिन अलीक यामें ए गुन कन्हैया जू के नैन लहियतु है। कंज खंज मीन मधु करनि में रहैं मैन-बान में जे कहे ते वे झूठे कहियतु है ॥३१५॥

कानन के चारी तन भारी हैं चपल महा थिरता न गहैं केहू एक घरी हारि कै। कहे रघुनाथ पर पलकन फर-काय कौतुकैं करत मद जोबन को धारि कै॥ कजरारे चीकने बिशद भारे रंगन में दुचितई डारैं देखैं सुचितई टारि कै। बाहिर न जाहिं कोऊ लैयगो बझाइ देखि तेरे नैन खंजन ए खंजन बिचारि कै॥३१६॥

छाबदार ऐननतें अजब अनोखी बीर बिसद बिसे-खी रंग जावक रंगीले वार। कबि पंचानन सुदीरघ रसीले बंक अति सरसीले कजरारे चारु रतनार॥ कोमल

कमल सोहैं मैन मदमाते राते अंजन बिनाहीं जीते खंजन कुरंग वार । ऐसे अनियारे वारे चंचल ढरारे थारे गजब गुजारैं हैं उनींदे नैन नोकदार ॥३१७॥

लाल लाल ललित रसाल छबि जाल पुँज अतिहि बिसाल मद छाके बाँके झोंकदार । झूमत झुकत झझकत उझकत झपनीर चुचुआते गजमाते जनु सोकदार ॥ अंजन बिहीन मद गंजन हैं खंजन के बेनी द्विज रूप के खजाने भरे ओकदार । बींधे देत भोर ही हमारो हिय प्यारी सुनो रावरे के अतिहि उनींदे नैन नोकदार ॥३१८

खंजन लजाइ सरमाइ के उड़ाइ जात बूड़े जलजाई अति कंजन को सोकदार । मीन दीन हीन द्युति लीन जलही में रहैं जंगन जुरैया जे कुरंगन पै झोंकदार ॥ ललित बखान करैं कैसे मैन सान चढ़े कान लौं कमान-खींचे बान सेहैं चोकदार । फोंकदार बरुनी न रोकदार-कोऊ राधे तेरे ए सुनींदे जे उनींदे नैन नोकदार ॥३१६॥

॥ नेत्र में सिपाही ॥

आज कवि शंकर जू नूतन लखात भाव छाके मद जोबन के थाके रति थोकदार । मानहुं मजीठ दोइ हब-सी नहाई भए मुगलबचालों लाख लाखन के थोकदार ॥ झूमि झूमि झुमत झलांके झोंक झूलन की ऐसे तो न देखेहैं कभौ मैं कहूँ झोंकदार । भोंकदार दिलके न रोक-दार जाको कोऊ गजब सिपाही ए उनींदे नैन नोकदार ॥

मृगमदगारे मतवारे रतनारे तारे खंज लखिहारे मीनगंज कंज सोकदार । नवरस चाव भरे वाव भरे

राजत सुनींद भरे झपकत झोंकदार ॥ बेहारी प्रमोद पगे प्रेम रंगे जगमगे चपल चलाँक चारु चमकत चोक-दार। आली अनुराग भरे अजब अनूठे आज देखे ला-डली के ए उनींदे नैन नोकदार ॥३२१॥

॥ रामजी के नेत्र ॥

मैन की मरोरी चैन चौगुनी चभोरी भोरी तीच्छन कटाच्छ सैन सील घर लाज के। ऐंड़दार सैनदार कोर औ मरोरदार कारे कजरारे सुखं सुखमाँ समाज के॥ सुन्दर सलोनदार अंगन के सरदार राघो भनै बार बार भावत मिजाज के। रमा के सदन चारु मदन मसाल जोति चंचल चलाँके नैन बाँके रघुराज के॥३२२॥

कोयन कर्नाटिन लौं बदलत बार बार उमड़े परत नैन रामहू ललाके हैं। सान धरे अदभुद कृपान से न कहे जात बान ते बिसेखि राघो बेस बरबाँके हैं॥ एक ही झमाके सैन मैन के सनाके होत औचक चलावैं चोट चीकने चमाके हैं। चायन चलाँक चारु कीमति कही न जाकी हिम्मत हरत हठि जाके ओर ताके हैं॥३२३॥

॥ नेत्र पच्छी बद्ध ॥

अरुन रंग जाल में फँसाए लाल बाल तैने मंजुल मराल ज्यों जवाहिर हंसराज हैं। अंजन दै रंजन कजरारे कारे कोयल से कोइल की अँखियाँ पै पलकन के साज हैं॥ तोते चश्म तू है तेरे लोचन चकोर से हैं मोर से पुछेरे जोर जुर्रन के काज हैं। शिकरा से शिकारी एक झपक में झपेट करैं घूँघट के ओट चोट करिबे को बाज हैं॥

॥ कवित्त ॥

हरिमुखचन्द त्यों चकोर ह्वै रहत जानी ले
कमल गति भौंर की गहत हैं । देखत हूँ देखत रहत
साध लागी होत अनमेख यों बिसेस उमगत हैं ॥
कछु प्रान प्यारे को सलोनों रूप ताते नेक न बु
तृखा कल न लहत हैं । तृप्त न होत क्यों हूँ माई री
मेरे पियत अघाय त्यों त्यों प्यासेई रहत हैं ॥३२५॥

जाइ चढ़े जोबन के बन में बिहार करैं काहू के न
रहैं बिक्रम अकथ के । भृकुटी कुटिल चाल अंजन आ
बास लीक्षण कटाच्छ गहैं आयुध सुहथ के ॥ सारी नी
टाटी ओट आवत अचानक ही करत अचूक चोट
न थथ के । मोमन कुरंग कोये कर लेत हाथन में राधे
नैन ए अहेरी मनमथ के ॥३२६॥

आपुहीते लागैं कहे केहू के न लागैं यह रैन
जागैं हैं बियोग आगि धखियाँ । रूप माधुरी को
ज्यों पिवैं त्यों त्यों भूखी रहैं होंहि न अदूखी ए
सदा लखियाँ ॥ लपट निपट पट संपुट न रोकी रहैं
लाय ढहैं जाय मधु बीसमधियाँ । चैन हैं न आठो
इनहीं को ऊधोराम सुबिहायो तनु तामैं दुखिहाई
खियाँ ॥३२७॥

जाके सर लागै ताहि सुधि ना रहत कछु जोई
ताके उर रंचक बिथा न हैं । तिनते अधिक कुसुमायु
पांचो बान जिनके लगेते टरैं मुनिन के ध्यान हैं ॥
प्रान प्यारे की दोहाई जिय जानी अली सब ही ते वि

विशेष नैन बान हैं। दुहुँन बिकल करैं जतन लगै न आन दुहूँ भाँति लगेहू लगायहु समान हैं ॥३२८॥

बरनि बरनि दृग कहत सकल कबि कमल कुरंग मीन खंजन समान हैं। कहै कबि कृष्ण रचि पचि चतुरा-ननने लोचन ए पाहन बनाए मेरे जान हैं॥ कमल सो कमल लगाय देखे कैयो बेर एक आक क्योंहूँ उपजतु न कृशान हैं। लागत ही तिय नैन तब हीं उपजि उठै लग-नि अगिनी याते प्रगट प्रमान हैं॥३२९॥

खंजन से कंज से तुरंगम से सफरी से कतरे रसाल से कुरंगन के सावक से। अंजन से रंजन से चंचल से माहुर से आरसी अनंग कैसे सावक से नावक से॥ बार-न से आरन से पानिप से उथले से सालिग्राम मूरति से डोरे रंग जावक से। ताकनि तिरीछी प्यारी भाखत दिवाकर जू दृगन दराज से झपेट बाज लावक से॥

अँखियाँ हमारी दइमारी सुधिबुधि हारी मोहूँते जु न्यारी दास रहैं सब काल में। कौन गहै ज्ञानै काहि सैांपत सयाने कौन लोक वोक जानै ए नहीं हैं निज हाल में॥ प्रेम पगि रहीं महा मोह में उमगि रहीं ठीक ठगि रहीं लगि रहीं बनमाल में। लाज को अँचैकै कुल धरम पचैकै बिथा वृन्द निसचैकै भई मगन गोपाल में॥

काछे आछे काछनी असित सित भाल भाँति रीझे रूप रसिक रसाल रै सरैया से। थिरकत थिरन न थार मुकताहल से थहरात थकतन खंजन खिजैया से॥ छबि सों फिरत फहरात फेरि फूले फूले श्रीपति सुघर बर लेत

हैं बलैया से। आनंद के ऐन चित चैन के करनिहारे
प्यारे तेरे नैन नाचै मैन के भभैया से ॥३३२॥

वारों मृग मीन अलि तेरे दृग दोउन पै गिनती कहा
है कंज खंजन बिचारे की। रसिक बेहारी जेहि कीन्हें
हैं अधीन लाल आधी डीठहीते जो चितौन अनियारे
की॥ रंचक निहारे श्याम तन मन वारि डारे भई है इते
में दसा या रूप वारे की। जा दिन परैगी पूरी नजरि
छबीले ओर ता दिन सुहैहै गति कौन प्रान प्यारे की ॥

सुछबि छबीले जरबीले अरबीले कोर बान ढरकीले
परसीले श्रुति हेरे हैं। रंगन रँगीले लखि मैन सर ढी
ढीले थाही ते न हीले वै लजीले जानि मेरे हैं॥ कंज मृ
मीन अलि पीले भड़कीले रहि पानिप दबीले बिष ली
भये चेरे हैं। चटकीले मटकीले नीले औ नुकीले स
प्यारी सरमीले औ नसीले नैन तेरे हैं ॥३३४॥

नीके अनियारे भारे परम उमंग वारे अति कजरा
ऐसे मैन आन हेरे हैं। मृग दृग मीन सरमैन के चके
अली तिरछी चितौन देय कीन्हें सब चेरे हैं॥ चन्दक
पीतम के भूखन बसन देखि मन हरिलेत माँहि चाहि
चचेरे हैं। अति गरबीले कंज खंजन करन ढीलो सेत र
नीले ये नसीले नैन तेरे हैं ॥३३५॥

आठो याम ऐंठे रहैं बैठे पुतली के बीच पैठे ज
साहन हिये में हेरि डेरे हैं। चंचल चलाँक चटकीले च
चौंधा ऐसे चाह सरसावैं चित चौगुने घनेरे हैं॥ साँ
सबेरे नित नेरे ही बसेरे डारि भनि बलभद्र बने दा

के चेरे हैं । घेरे हैं धनिन को अहेरे करि जेरे करैं फेरे देत मधु से नसोले नैन तेरे हैं ॥३३६॥

सुखै देत सोतै सबै कुटिल कटाच्छ फूक रसिक बिलोके होत विकल घनेरे हैं । झारे नाहि झारे थकैं गारुरू बिचारे झारि जंत्र मंत्र एकहू न मानत अनेरे हैं ॥ शिव के सहाय बांबी घूँघट विहाय बेगि धावत स्वतंत्र फेरि फिरत न फेरे हैं । नीले नीले चीकने नुकीले गरबीले प्यारो पन्नग समान ये नसीले नैन तेरे हैं ॥३३७॥

वारि जात वारि जात कानन कुरंग भे कुरँग चकचौंधे चक्षु विकल घनेरे हैं । खंजन रिझावन हैं खंजर लजावन हैं मीन मनतावन मनोज के बसेरे हैं ॥ तीखे अनियारे हरदेव प्यारे प्यारे सेत श्याम रतनारे दोऊ काम दाम चेरे हैं । चंचल चलाँके बाँके माते हैं कजाके नाके मैन सुरा छाके ए नसीले नैन तेरे हैं ॥३३८॥

दृगयुत अंजन हैं मृगमद गंजन हैं कंजन कुटिल मान खंजन निवेरे हैं । मंजुल रसीले मधुमाते गरबीले चार चपल छबीले चित्त चोर चारु घेरे हैं ॥ चितवत ही बिहाल होत हरदेव हाय हाये बिन दाम काम करम करेरे हैं । दैन मैन सैन काट देत मल चैन यह अधखुले पैन ये नसीले नैन तेरे हैं ॥३३९॥

अधिक अनोखे अनियारे कजरारे बने देखे ना सुने हैं अब ऐसे कौन केरे हैं । देखि दृग दमक दिवाने से अनेक रहे नीच को निहारि के कितेक किये चेरे हैं ॥ गोबिन्द सुकबि बड़भाग रिझवार तेरे धन मन लेन

हेत हरखित हेरे हैं। झुकि झुकि झूमि झूमि घूमि घूमि चोट करैं बीर रस माते ए नसीले नैन तेरे हैं ॥३४०॥

छबि के छबीले चारु चंचल सजीले चित्त गति भड़कीले जनु मैन मेघ घेरे हैं। अति गरबीले लीनो मति गज बीले कंज रंग सो रंगीले जनु रूप निधि खेरे हैं॥ प्यारे चटकीले असुरुचि मटकीले मन मुनि मटकीले मनु जाल काम केरे हैं। शक्ति शकतीले युगरूप के हटीले मन मनु सटकीले औा नसीले नैन तेरे हैं ॥३४१॥

मीन जिन दीन किये मृग पति हीन किये पंकज मलीन सिर सरतन गेरे हैं। नरगिस छीनशोर अलि अब लीन किये धनिक अधीन किये खंजरीट चेरे हैं॥ भटवः मार तन मनधन लूटिवे को जाहिर जहान आन ऐसे मैः हेरे हैं। सुकबि गनेस कीसैं जैसे शानदार एरी तीच्छः नुकीले ए नसीले नैन तेरे हैं ॥३४२॥

स्याह सुरमीले चटकीले मटकीले पैने तीर से नुकीर हैं मजीले हैं अनेरे हैं। छबिन छजीले झमकीले सुरखीर और जतन जतीले धनी धन के लुटेरे हैं॥ गुन गरबीः सज धनन सजीले रति रंगन रंगीले बोले ऐसे मैन हे हैं। सुकबि गनेस कीसैं जैसे नचकीले एरी चंच छबीले ए नसीले नैन तेरे हैं ॥३४३॥

सारसते सरस लसत भरे आरस महारस मगन ह हीय हरि लेत हैं। लाल डोरे राजत हैं और उपसाजत फूले मुसकात हैं निकाई के निकेत हैं॥ मैन की उमं भरे जोबन के रंग भरे लाज की तरंग भरे गरब सभे

हैं । सैन सुखपागे निसि जागे दृग तेरे बाम रात रमि रति की प्रभात कहे देत हैं ॥३४४॥

नैन नव नागर के तलसे तुरंग अंग छवि की तरंग यह रंगन धरैं धरैं। मदन प्रवीन तिहैं फेरवो सधावत हैं घूँघट की ओट ऐसे कौतुक करैं करैं॥ कीन्हें चाह आयगो सों चूकि कै चपल तिय एइहै उड़ौहै ते उमंग सो भरैं भरैं। लाज वाग बस तरफत ताई भरे खूब करत खुदीसो पग धरत हरैं हरैं ॥३४५॥

वाके संग ही ते राते कंज छबि छीनें माते झुकि २ झूमि झूमि काहू को कछू गनैन । द्विज देव कीसों ऐसी घनक बनाय बहु भांतिन बिगारैं चित चाहन चहूंघा चैन ॥ पेखि परै पात जो पै गातन उछाह भरे बार बार तातें तुम्हें बूझती कछूब बैन। ए हो बृजराज! मेरे प्रेमधन लूटिबे को बीरा खाय आये कितै आपके अनोखे नैन ॥

कारी रतनारी प्यारी सीलता सनेह धारि कज्जल की रेख सो विसेस अनीसर की । कंजते सफीलो सुचि सुखमा गहोली राघो सैन नैन सनक न मैन मौज करकी॥ चोख चख चंचल चपल सियरानी जूके पेकिराम चखन में चन फिरै फरकी। चितवन चारु चित्त चुभत हैं योगिन के समता न पावैं बानी देव नारी नरकी ॥३४७॥

मिलत अगाऊं जाय नेकहूँ न मानै संक फेरे ना फिरे हैं लोक लाज सब डारैं तोरि। लावत मिलाय वेगि आपने सजातिन को आसन दै चित पै हिये सो नेह लावैं जोरि ॥ रसिक बेहारी भनै रसना को रसना सो

रसनाके रस सों पिवाय मति डारैं भोरि । ऐसे ठग नैनन की करुना प्रतीत एतो देत पर हाथ मन मानिक वृथाहिं छोरि ॥३४८॥

कैधों रूपसागर में आँच बड़वागिन की विरह बिसाल ज्वाल जामधि विकासी हैं। कैधों दल पंकज के ऊपर अरुन रेखैं कैधों नेह दीपक की अरुन सिखासी हैं॥ गोरी तेरे नैनन के बीच लाल रेखे ते तो रेखैं अनुराग ही की प्रगट प्रकासी हैं। कैधों अनियारे अति कारे बटपारे इन तारन की फांसी पिय जियहू निकासी हैं ॥३४९॥

ताम रस सोहैं तरुनी के बर नैन बीर तामैं तम निशाकी बसीठी मानो आयो है। कैधों अनुराग जाल डारे मैन सैन सर गोल कहैं ताके ताको ऐसो भाव भायो है॥ खंजन धरे हैं मुख जंबू फल मेरे जान उपमान आन नूर ऐसो ठहरायो है। तरुनी के श्याम तारे ऐसे मैं निहारे लाल चन्द पै चकोरन हलाहल सो खायो है॥३५०॥

फटिक के संपुट में सोई सालिग्राम सिला कमल दलन पर भौंर से निहारे हैं। मृग मदविन्द के लसत प्रतिविम्ब कैधों दीपत दृगन पर कज्जल के वारे हैं। कैधों मरकत मणि मुकुत सुकुत पर कैधौं रति नायक ने सायक बिसारे हैं। पिय मन तारिबे को अवतारे तारे भारे बरुना के बार मानो तरुनी के तारे हैं॥३५१॥

॥ बरुनी ॥

कैधों दृग सागर के आस पास श्यामताई ताही के ए अंकुर उठि हि दुति बाढ़े हैं। कैधों प्रेम क्यारी जुग ताके

ए भहूँघा रचि नीलमनि सर नीकी वार दुख डाढ़े हैं। सूरत सुकवि तरुनी की बरूनी न होय मेरे मन ऐसे विचार चित गाढ़े हैं। जेई जे निहारे मन तिन के पकरिबे को देखो इन नैनन हजार हाथ काढ़े हैं ॥३५२॥

॥ नेत्र के तारे ॥

कीधैं गंडकीके सुत रजत कटोरे जुग अरचा करत बिधु बिधि सों विचारे हैं। भयो नयो योवन नरेस ताके भीत भरि मदन सुनार बट पलापल धारे हैं॥ कहै द्विज कवि कौंलदल पै लसत अलि कीधैं बिबि सीप पर नील-मनि वारे हैं। वृज प्रान प्यारे राधे गिनै निसि तारे वाके होत निसितारे देखि तेरे नैन तारे हैं ॥३५३॥

॥ कवित्त ॥

लाज भरी नाज भरी सुखमा समाज भरी चातुरी चितौन चार मोद भरी सैन हैं। हाव भरी भाव भरी सकुच सनेह भरी प्रीति रीति गतिन में मानो सुख ऐन हैं॥ तिरछो कटाच्छ कोर जोरि मुख मोरि मारै घाव न देखात हिये काटै धार पैन हैं। राग भरी रंग भरी सुन्दर अनंग भरी यसरस भरी राघो सियाजू के नैन हैं ॥३५४॥

लखि अरुनाई पाय कंज करुनाई मीन पेखि चंचलाई मृग मान भंग हेरे हैं। छेदि उरजात गात गनिका बि-लोकि तेरो मेरे सैन बैन बेधे बान सों सबेरे हैं॥ चेत कबि भाखै नेक आवत न चैन मैन माते मानो मदक मजाते तन घेरे हैं। सुन्दर सजीले चमकीले ए रसीले सैन सो-

भित नुकीले औ नसीले नैन तेरे हैं ॥३५५॥

डोलत सनेह भरे तिरछी चितौन भरे जालिम जुलुम भरे पानिपके हेरे हैं। जादू भरे झूमत झुकत झहरात हैंरी मृग मद त्याग किये बन में बसेरे हैं॥ कज्जल ते कलित दलित महि पालन के पारथ मृगेन्द्र राह जात किये चेरे हैं। मैन मंत्र कीले हैं रसोले हैं रंगीले हैं री मद भरे घूमत नसीले नैन तेरे हैं॥३५६॥

सोहत सजीले सित असित सुरंग अंग ताके मधि अंजन अनूप छबि हेरे हैं। चंचल चलाँक चारु चोयन चटक भरे चमकैं चमङ्कैं लखि खंजन निवेरे हैं॥ लखत असीले सुरमीले औ अटीले नहिं बचत रसीले छैल आये गैल फेरे हैं। कहै कलाधर खुले लालच गहीले लाल गजब गसीले ए नसीले नैन तेरे हैं॥३५७॥

॥ नेत्र में त्रिबेनी जी का रूपक ॥

अमल अमोल कोल कलित सुखेत सोहैं सुरसरि वारि स्वच्छ सोभित उमंग हैं। श्याम मन रंजन दीपांजन दिपत दिव्य सोहि जल जूथ्यो जमुना को परसंग हैं॥ ललित लकीर लाल तामें दरसात बर अमित उदार धार भारती अभंग हैं। कवि हर लाल अदभुत ऐन जानो मैन राधिका के नैन में त्रिबेनी की तरंग हैं॥३५८॥

॥ कबित्त ॥

अरुन असित सित डोरे रतनारे चारु चमकत चटक बिचित्र रंग लीखे हैं। मोहन उचाटन करख बस कारन के मारन प्रयोग सिद्ध दच्छ मंत्र सीखे हैं॥ बैजनाथ नासिका सिकोर भौं जोर फोंक बरुनी सपच्छ चारि

प्रेम बिष चीखे हैं। अच्छत सुलच्छ उर गड़त प्रतच्छ गच्छ राघव भटाच्छन कटाच्छ बान तीखे हैं ॥३५९॥

खरकत बात पत्र झझकि उचकि जात सब रस फन्द कवि उपमा करोर के। चौकड़ी कटाच्छ मुखचन्द्र साम्र कच रैंन नैनवंत नैनन के तारे तारे भोर के ॥ बैजनाथ सुखमा सबैनिन के नाथ मान कानन सिधारे पल चल पग दौर के। श्रृङ्ग पै न कोर के समय न जोर तोर समता न ऐन नैन कौशल किशोर के ॥३६०॥

॥ पूतरी वर्णन ॥

सोभा के सरोज में धौं रसिक मलिन्द बैठें चन्द मधि राहु कैधौं ये बुधि हिया की है। फटिक सुसीप में सिंगार रस मोती कैधौं उपज्यो अजीब जामें गरज पिया की है ॥ कहै चिरजीवी कैधौं चाँदी के सुसंपुट में सालि-ग्राम सोहै ऐसी उकति जिया की है। कैधौं मीन टांघन पै मदन महीप डोलैं प्रेम मदमाती कैधौं पूतरी प्रिया की है ॥३६१॥

॥ सवैया ॥

गजमस्त सी गौन करैं छबि सों, चखवाट अभै गुन सीलिन की। बँधे प्रेम के साँकल पायन में, मनमथ्थ महा-उत हीलिन की । चिरजीवी लखी जबते वा अमोल, सुगोल गुली उनमीलिन की ॥ उतरी ना अजौं उरते सजनी, पुतरी वृजबाल गुनीलिन की ॥३६२॥

॥ भौंह ॥

लाल मन भूपति को मुदित करन हारी पाय प्रेम

बारी को अकसमान ओपी है । सारो जग भ्रमर लुभाय रहे जापै आय जाहि लखि उपमा तिलोकहू की लोपी है ॥ कहै चिरजीवी बृजबाल की युगल भौंहैं राजत अनूठी जापै बलि जात गोपी है । मानो चन्द बेदिका पै मनमथ चतुर माली लतिका सिंगार उभै खमदार रोपी है ॥३६३॥

॥ सवैया ॥

अलि पांति की कौन करै समता, लतिका लजि जाय दुरी महिकीच मैं । अभै पास को ताब न बाकी रह्यो, गन्यो जात जहाँ सु कृपानहु नीच में ॥ चख ऊपर भौंह लसै तिय के, चिरजीवी कहै युग एक नगीच मैं । मनो मैंन जहान को जीत उभै, धनु आनि धर्‍यो रन भूमि के बीच मैं ॥३६४॥

॥ चितौन ॥

रसहिं पिवाय प्यासे प्रानन जिवाय राखैं लाज सों लपेटि लसैं उघर हितौन की । निपट नवेली नेह झली लाड अलबेली मोह ढरनी भरी बिरह हितौन की ॥ लोने लोने कोनछ्वै छबीली अँखियान की सुरंच को न चूकैं घात औसर बितौन की । एरी घन आनद बरस मेरी जान तेरी हियो सुख सींचैं गति तिरछी चितौन की ॥३६५॥ ॥ सवैया ॥

मारत हैं मद मीनन के, मृग के दृग मानन मीसन के । पंकज की दुति फीकी करैं, मन मोहैं महान मुनीसन के ॥ चोखे कटाच्छ महेस भनै, किम जोर चलैं न कवी-सन के । मानो कही दृग खोलो नहीं, खुले खून करैं

दस बीसन के ॥३६६॥

बर खंजन गंजन मीन सदा, मनरंजन मंज कबीसन के। अति तीखन काम नराच समान, सुमोहन हारी मुनीसन के॥ अँखियाँ ए तिहारी अनूप लली, बिरच्यो विधि लालहि दीसन के। विपरीत बनी तऊ घूँघटतें, खुले खून करैं दस बीसन के॥३६७॥

कजु कारे अन्यारे हत्यारे महा, चटकारे लखौ दस दीसन के। पुनि चंचल चीकने चोखे चुभैं, न रहैं सुधि सिद्ध मुनीसन के॥ बिखवारे सुधारे बिखंजन से, कहि मानहु वीर कवीसन के। इन नैन अनारिन न्याव नहीं, खुले खून करैं दस बीसन के॥३६८॥

जकरे पट घूँघट शृंखल माँहि, तऊ बलभद्र फिरैं छन के। बस नैन महावत के न रहैं, ढहैं लाज दराज दुरे-रन के॥ मदमाते मतंगज नैन तेरे, समझूमैं झुकैं उझकैं घन के। खुनसाने अरे अति खूनी खरे, खुले खून करैं दस बीसन के॥३६९॥

ए दृग याके दुरैं अबना, न मुरैं ढिग मानी मुनीसन के। औझकही उझरैं सुझरैं, न झरैं नहि खीस खबीसन के॥ बीर बेपीर नजीर नहीं, सुमती सुभ धीर कबीसन के। जाय जहाँई तहाँई जुरैं, खुले खून करैं दस बीसन के॥३७०॥

चख चंचल चातुर ऐ न कहूं, बस हैं बरदान मुनीसन के। करि लाख में चोट चितै चितचौंकि, अचानक लेत छतीसन के॥ कबि आतम चच्छु मृगाच्छ सों सुन्दर, हैं

भरे भूरि असीसन के। पट घूँघट ओट सपोट रहैं, खुले खून करैं दस बीसन के ॥३७१॥

मृग खंजन मीन दुरात फिरैं, असहाल भये सब दीसन के। बिन छूरा छुरी बिछुआ बरछी, किया घायल अंग बिरीसन के ॥ तिरछे अनियारे कजाकी बड़े, लगे छूटत ध्यान मुनीसन के। प्रिये नैन हैं बान सहाय तेरे, खुले खून करैं दस बीसन के ॥३७२॥

मृग से अरु मीन से खंजन से, दृग पाये अली बर ईसन के। बरछीनसी तीरसो नोकै लसैं, न कहे कहि जात कबीसन के ॥ सुगजेन्द्रजू और की कौन कहै, लगे आसन छूटैं मुनीसन के। पट घूँघट ओट से चोट करैं, खुले खून करैं दस बीसन के ॥३७३॥

नैन कृपान रचे बिधि सुन्दर, जान बध्यो सुर ईसन के। कंज सो खंजन सों मृग सों, लखि छूटत ध्यान मुनीसन के ॥ जासों बच्यो न कोऊ तिहि लोकहिं, ज्ञान से तुच्छ योगीसन के। पूतरी म्यान में बन्द रहैं, खुले खून करैं दस बीसन के ॥३७४॥

बीसन के उर सालत हैं, तन लागत नैन तिरीछन के। तिरीछन नैन लगे जबहीं, तब छूटत ध्यान मुनीसन के ॥ मुनीसन और रिखीस सबै, नहि भाजि बचे लगे ईछन के। ईछन राम अधार खुलै, खुलें खून करैं दस बीसन के।

॥ बरुनी ॥

अति पैनी प्रताप भरी सर की, सिगरीं सुख मूल प्रियाहर जी की। उर बेधन हार मुनीसन की, दुखदा

घनी रसिया गरजी को ॥ चिरजीवी उभे चख लाडली मैं, बिलसै बरुनी उपमा लरजी की। दिल दोय को एक करै को मनों, यह सूईयां हैं मन भौं दरजी की ॥३७६॥

स्याम सरोजनि में निबसे, किधौं मंजु मलिन्दन के गननी के। कैथिरता गहि कै जुग खंजन, बास किये मुद दायक ही के॥ कै यहि फांसि सो गांसो मनों, भव बांधे अहैं जुग मीन बली के। कै मन रञ्जन कारी सुअंजन, रंजित है अति नैन नसीके ॥३७७॥

प्रेम पट दोय को सु एक को करन हार सूई सुख रासि दुख हरनि पिया की है। सुखद सिंगार रस चन्द की किरिन कैधौं तारवक चकोर मन मौज रसिया की है॥ कहै चिरजीवी पौध पूतरी बचैवे कीधौं रूंध्यो आल बाल कोये आंख स्वकिया की है। सुखमा सिरख फूट चोटिका को सूत कैधों बेहद बिभूतवारी बरुनी तिया की है ॥३७८॥

रंग अवनी की बारि सोह सुँघनी की रूंधि द्रिग पै धनी की छांह सहस फनी की है। सोभ कमनी की पंख-कोर किरनी की स्वच्छ अच्छ द्युमनी की जोति ऊपर सनी कीहै ॥ बैज नाथ ही की प्रीति पट जोर नीकी नेह तार सूचनो की नैन दीपक अनीकी है। रूप मोहिनी की जन जी को हरनी की चारुनी की सघनी की बरुनी की सिय पीकी है ॥३७९॥

॥ कबित्त—नेत्र में दर्खास्त ॥

राधा रानी मुद्दई बनाम ब्रज राज नैन मुद्दाअलेह कत्ल जुल्म ठहराइये। पर्वर गरीब की सलामत सदाहीं

रहै हाल याहै तापै सुचित्त को लगाइये ॥ कहै श्याम सेवक चलाय सैन सैफ कियो प्यारी को बिहाल आस जोवे की न पाइये । इसलिये अरज गुजारिश कर चाहति हैं प्यारे नैन खूनियों को सजा फर्माइये ॥३८०॥

॥ नेत्र में फैसला ॥

आज पेश होकर मिसिल सब देखी गई आये सब वजह सबूत निज जाने में । मुद्दायलेह मुजरिम बेशक करार पाये बाकी नहि राखे नैन सैफ के चलाने में । कहै श्याम सेवक सो याही ते हुकुम होत रूयदात हासिल मिसिल के सुनाने में ॥ छूटन ना दैहैं वह छनक नैन खूनियों को कैद करि राखो निज नैन कैदखाने में ॥३८१॥

॥ नेत्र में मुन्सफी की डिगरी ॥

नैन बैन कुच कर मुनशी अकिलवर बिशद कचहरी स्वेज स्वच्छ सुख पाल की । युगल रसिक मन मुद्दई मुद्दाले दोऊ अरजी झगर पास प्रेम अहवाल की ॥ रति रस रंग दोऊ ओर ते वकील लड़ैं करत तरफैन ते बहस इन्द्र जाल की । मुनसिफ मदन की अनोखी तजबीज देखो बालम पै डिगरी भई है आज बाल की ॥३८२॥

॥ नेत्र में जज ॥

नाजिर नजर चपरासी कोर छोर दार दौरि धरि ल्यावैं तकसीरी सो लज्ज हैं । मन मुनशी ने रूबकारी कर सारी दई दीरघ दिवाने दिल समझै सो कज्ज हैं ॥ बिन हकवारे सब हारे बिना काजी कहूँ चंचल चपल चितवन चार हज्ज हैं । बैठी बीच बङ्गले बहार के समान मंच करत इन्साफ तेरे नैन जोर जज्ज हैं ॥३८३॥

कोऊ कहै भृकुटी कमानही के मैन बान मन महिपाल के दिवान बरजोर हैं। कोऊ कहै खंजन कुरंग मन रंजन हैं सोभाके सरोवर सरोज फूले भोर हैं॥ कोऊ कहै छवि सरिता के मीन मंजु सोहैं जन मन मानिक के चल चित चोर हैं। गोकुल बिलोकि चारु चितै रामचन्द्र ओर मेरे जान जानकी के चख द्वै चकोर हैं॥३८४॥

मोद बरसावनी बिनोद बरसावनी है राधे की रिझावनी है नैनन चिकारी की। चायकी भरी है मानो साँचे की ढरी है नेह मेह की झरी है खरी कोर कजरारी की॥ जोबन जगी है प्रेम पुंजन पगी है जोर रंगन रँगी हैं काम क्यारी फुलवारी की। भौंहन तनी की सुख दैन हारी जीकी नीकी पानिप अनी की है चितौन श्री बिहारी की॥३८५॥

कैधों रूप सागर की पारी पंक सोहै कैधों होयकै ससंक मीन जाल भरि राख्यो है। नीर छीरनिधि बिष फैल्यो है सनीरही सों कैधों कंज जंबूफल मांझ धरि राख्यो है॥ एरी बृषभान की दुलारी प्यारी तेरे दृग बाल कबि कहै लाल मन हरि राख्यो है। बांहन के ईस पर मदन महीस अस बोसौ बीस कज्जल कसीस करि राख्यो है॥३८६॥

खंजन खिसाने से उड़ाने फिरैं अम्बर में मीन ह्वै अधीन नीर धँसिगे लजाने से। हार मानि हरिन अरन्य बास लीन्हों जाय, बारिजात कोर पै चकोर ह्वै दिवाने से। बेनि द्विज बान पंचबान को गुमान गारि ल्याई है

लुनाई लूटि विधि के खजाने से। देखि देखि तेरी अंखि-यान की अजूबीं वीर पंक जाय परत सरोज सकुचाने से॥

॥ चौदह रत्न ॥

सङ्ख से ससांक से सुधासे सुरधेनु से हैं सेत कोये बिष स्याम पूतरी रसे रहैं। गजसे झुमत लये मदसे झुकत नचैं रम्भा औ तुरंग टेढ़े धनुसे कसे रहैं॥ चिन्ता हरिवे कों चिन्तामणि सुरतरुलच्छि काम व्याधि सुर बैद सहजै न से रहैं। राधा द्रिग कंज शंभु सम कैसे कीजै वामें कमला बसति यामें चौदहों बसे रहैं॥ ३८८॥

॥ कबित्त ॥

कंज तुम कहा सदाँ मंजन करत रहौ फूलि २ करत सबुक निज पात हौ। शंभुराज मृग को समाज हरखत कहा जंगली कुरंग तुम बूझन न बात हौ॥ खंजन बृथाहीं तुम श्रम क्यों करत कहा चाहौ राधा चपल कटाक्षन की घात हौ। पूँछ थिरकवत न पूछत जगत कोऊ पच्छन नचावत विपच्छ भये जात हौ॥ ३८९॥

शंभु राज राधिका के नैंन छके चारि बिधि काहि सर दीजै उपमान रुचि कारे हैं। खंज रीट दुज बहुका-लके रतन मृग कहत कुरंग कँज जड़ काम न्यारे हैं॥ झुके से हैं लाड़िले से निपट गरूर भरे महा सर सारी उर काके न बिदारे हैं। मद मतवारे बय मद मतवारे रूप मद मतवारे मैन मद मतवारे हैं॥३९०॥

राधिका के लोयन के कोयन की सेत ताई कहा पुंड-रीक संख सुर धेनु बच्छी है। झलक को हीरा मुकता

हल काहा है तिच्छ नाई कोर सरिस सरन नहि लच्छी है॥ स्यामता को इन्दी नील अरसी सुमन कहा शंभु राज नील नल नीन लगै अच्छी है। चंचलाई ढूँढ़ तिहूं लोकहूं न पाई कहां मृग कहा कच्छी कहा मच्छी कहा पच्छी है ॥३९१॥

भारे मनियारे पनियारे अनियारे सर बीरन के तन लगे हीरन के गोला से। शंभुराज वृजराज देखत अड़त पाय अंजन जंजीर दै मलंग साहि भोला से ॥ पलन की तरल तुलापर चढ़ाय मानो मन मनमोहन के तौलिवे के तोला से। बरुनी के पींजरे में रूप सुधा सरपर चंचल सुनैं न नचैं मैनके ममोला से ॥३९२॥

॥ सवैया ॥

अंजन हीं बिन गंजत हैं, मद खंजन स्याम सुपेत दु रंग को। औ नृप शंभु भरे अनुराग में, राग गयो उड़ि कंज सुरंग को॥ प्रीति नई में नये दृग दौरत, ज्यों रद होत इराक तुरंग को। चन्द में मानों अनङ्ग दलाल लगायो है खासन खास कुरंग को ॥३९३॥

घूँघट ओट निगोये रहैं, सखी राधा के कोये उठैं जिमि डाटि हैं। काम के बान जे सान धरे, जिन जीत्यो जहान इन्हैं ते वे घाटि हैं॥ चोखे हथ्यार की रीति इहै, नृप शंभु जू डारत म्यान को काटि हैं। याही तें जानिये नैन हैं मैन, जो कानन लों पलकैं रहीं फाटि हैं ॥३९४॥

॥ कबित्त ॥

पंकज पदुम पुँडरीक कंज तामरस इन्दीबर अंबुज सरोज जल जात हैं। अरबिन्द पौष्कर सरोरुह राजीव

से सारस ससेन सर सोरुह सितात हैं ॥ नीरज नलिन कोकनद अरु महोत्पल बारिज बिथक परिशत सतपात हैं । नन्द के कुमार तेरे लोचन निहारि एते नाम ते कमल बलिहारि वारि जात हैं ॥३९५॥

तामरस इन्दीवर बारिज सरोज मंजु पुँडरीक पंकज कुसेसै सतपात हैं । कोकनद नीरज नलिन कंज कुवलय पाथोज अरविन्द श्री मदन सोहात हैं ॥ अंबुरुह अंबुज सनेही भौंर पंकरुह पंकज जलज वारि जात सर सात हैं । एते नाम नीरहुं मुबारक निहारे नैन पद पद प्रहर वारि जात जलजात हैं ॥३९६॥

पुँडरीक पंकज औ‍र पौष्कर पदमशत पत्रसर सीरुह नलिन नीर वारी के । तामरस अंबुज अंभोज औ सरोज पत्र सारस सुअंबुरुह मंदयुत वारी के ॥ घासीराम इन्दीवर नीरज जलज बिंब कुवलै कुबिंद खर दंड हित कारी के । कोकनद कमल अमल अरविन्द बर कंज से लसत मंजु एरी दृग प्यारी के ॥३९७॥

राधिका के द्रिग कैधौं मृग के सिखाय कहैं खंजन के नायक नचाइवे के साखी हैं । कैधौं शंभुराज जलजात जल वासिन के खरो खोटो करिवे को रूप के सुलाखी हैं ॥ चन्द्र पै चकोरन की प्रीति के गुरू हैं सब गुनन गरू हैं उपमान जाति भाखी हैं। कैधों कंज मुख रस लेत सिली मुख कै समर सिलो मुख सिली मुख लाय राखी हैं ॥३९८

मीन ह्वै अधीन जाय जल में छुपाने मृग घनन पराने त्रिन दाँतनि चबात हैं। शंभु राज भारे बिन काजर के कारे देखि खंजन नचत ना कपत हाहा खात हैं ॥ भोरे

हूं जो राधे कहूँ अंजन सजति मार बांन हूं लजित ह्वै तु नीरन समात हैं। केहूं विधि दृगनि सकत नहि तूलि याते फूलि फूलि कंज मुख मूँदि मूँदि जात हैं ॥३९९॥

राधिका के नैनन की अकथ कथा है कोऊ पावत न भेद उपमान किये काय लै। शंभुराज कहत चकोर हैं चकोर जानै मीन जानै मीन हैं कहत संग लायलै॥ हीरा जानै हीरा गजमोती गजमोती जानै बान जानै मैन बान देखि भये माय लै। भृँग जानै मधुप खंजन खंजरीट जानै कंज जानै कमल कुरंग कर साय लै ॥४००॥

॥ नेत्र में नाच का रूपक ॥

स्याम सेत काछनी कसी है अङ्ग पर चारु झलकै जवाहिर सजोति बड़े माल के। शँभु राज बरुनी जुलूफ खुलि रही सेतो गुन फैलि रहे जे रंगे हैं रंग लाल के ॥ गति भरि भारी फेरि २ मुरि मुरि जात चंचलाई नायक दिवैया बहु ताल के। पलकनि ओढ़ना में अंजन किनारी लगी नटुवा नचत मांनें मैन महिपाल के ॥४०१॥

॥ इति शुभम् ॥

शैतान—(उपन्यास) नाम ही से समझ लीजिये, प्रथम भाग .... ।॥)

खूनमिश्रितचोरी—पढ़ने योग्य अपूर्व जासूसी उपन्यास ॥।)
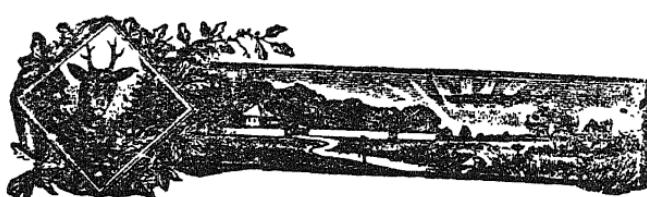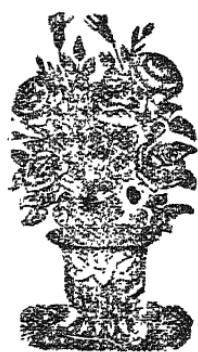
परिणाम—एक अनूठा सामाजिक उपन्यास है .... ॥।)

महारानी पद्मावती—ऐतिहासिक, चित्तौर की लड़ाई का हाल ।)

द्रौपदीचीरहरण वीर और करुणा रस के प्रेमियों को अवश्य देखना चाहिये .... ।=)

नाट्यसम्भव—(नाटक) इसके पढ़ने से मालूम होगा कि नाटक की उतपत्ति क्योंकर हुई .... ।=)

मीराबाई की जीवनी— ... =)

महाराज विक्रमादित्य की जीवनी—बड़ी ।) छोटी -)

श्रीस्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती का जीवन चरित—इसमें स्वामी जी का विचित्र और ठीक ठीक हाल बड़े परिश्रम से लिखा गया है .... ॥=)

परमहंस रामकृष्णदेव का जीवनचरित्र और उपदेश—परमहंसजी के २२८ उपदेशों का संग्रह .... ।-)

वीरेन्द्रबाजीराव—बाजीराव पेशवा का जीवनचरित .... ॥।)

बिनयरसामृत और हनुमान पचीसी—भक्ति रस का काव्य देखने योग्य है .... -)

उर्दूशतक—(रामानन्द कवि कृत) उर्दू की अनूठी कविता है .... =)

कृष्णावली—श्रीकृष्ण जी के भक्तों को अवश्य देखना चाहिये -)

रागमाला—(मियां तानसेन रचित) गान विद्या के प्रेमियों को जरूर देखना चाहिये .... ॥)

राधासुधाशतक—राधिकाजी के अनन्य उपासक "हठी" रचित ≋)

सुन्दरीसिन्दूर—इसमें देव कवि कृत १११ कवित्त हैं .... =)

शृङ्गारदान—शौकीनों की सजावट के सम्बन्ध की सब चीजों का बयान और उनके बनाने की बिधि, स्त्रियों के सोलहो शृङ्गार का वर्णन है .... ≡)

शौचीयदर्पण—इस पुस्तक से कर्मकाण्ड विषयक बातें जानने के लिये घर बैठे पण्डित का काम ले सकते हैं .... ।)

इत्यादि पुस्तकों का बड़ा "सूचीपत्र" मँगा देखिये।

चन्द्रकान्ता–(गुटका) सचित्र चारो भाग बारीक हरफों में .... १)

चन्द्रकान्ता–(गुटका) उर्दू में चारो भाग .... ॥)

चन्द्रकान्ता सन्तति–(गुटका) उर्दू में दो भाग .... ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति–मोटे हरफों में २४ भाग सम्पूर्ण १२

" " (गुटका) २४ भाग सम्पूर्ण .... ६)

नरेन्द्रमोहिनी–(उपन्यास) दुःखांत और सुखांत दोनों तरह के पाठकों का दिल खुश करने वाला २ भाग .... १)

कुसुमकुमारी–स्त्री की हिम्मत और मित्र की मित्रताई का नमूना। चारो भाग .... १)

बीरेन्द्रबीर–(कटोरा भर खून) यह उपन्यास भी विचित्र है ॥=)

काजर की कोठड़ी–रण्डियों को और ऐयाशों को किस किस ढङ्गसे अपना मतलब निकालना पड़ता है यही बातें इसमें दिखाई गई हैं .... ॥=)

गुप्तगोदना–देखने योग्य उपन्यास, दो भाग .... ॥)

प्रवीनपथिक–यह उपन्यास बड़ा ही रोचक है .... १)

प्रभातसुन्दरी–यह उपन्यास हाल ही में छपा है .... ॥)

रणबीर–वीर रस का अपूर्व ऐतिहासिक उपन्यास—३ भाग .... ३)

बसन्तलता–इस जोड़ का सामाजिक उपन्यास अभी तक दूसरा नहीं बना है। अभी २ छपा है .... ॥)

बीरबालिका–यह भी एक अनूठा उपन्यास है .... ।=)

सुरसुन्दरी–यह नया उपन्यास भी पढ़ने योग्य है .... १)

ललना बुद्धि प्रकाशिनी–यह ग्रन्थ प्रत्येक गृहस्थ के घर में रहना चाहिये, स्त्रियों के पढ़ने के लिये ही यह ग्रन्थ लिखा गया है और वास्तव में स्त्रियों के ही योग्य है, इससे उनको अच्छी शिक्षा मिलती है .... ।=)

मदालसा–यह उपन्यास भी पढ़ने योग्य है .... ।-)

कान्तिमाला–यह उपन्यास स्वतन्त्र लिखा गया है .... ।-)

जबर्दस्त की लाठी–देखने योग्य उपन्यास है .... ॥)

वनविहङ्गिनी–यह उपन्यास अभी २ छपकर तैयार हुआ है। पुस्तक